प्रस्तावना

जैन शासनना गूढ तत्वोनुं रहस्य समजवाने घणा विद्वानोने पण कठण थई पडे छे. तेमज जैन शैलीनी भाषा अने तेमां आवता पारिभाषिक शब्द समुच्चय समजवा बीजाओने तो शुं पण जैनीओने पण बहु मुश्केल पडे छे. माटे तेवा विषनोनुं संक्षेपमां ज्ञान मळी शके ने तेनो उपयोग जैन शास्त्रोनुं आलोडन करती वेळा थाय ए अती जरूरनो विषय छे. एम जाणी आ चोवीस दंडकनो विषय सर्वांग पूर्ण प्राचीन ग्रंथोना आधारथी प्रगट करेलो छे, तेमज गुणस्थानकोनुं स्वरूप बतावनारो विषय पण एमां दाखल करेलो छे मुमुक्षु साधुजनो तेमज श्रावकोने आ ग्रंथ अति उपयोगी थई पडशे एम अमोने पूर्ण आशा छे.

परमपूज्य मुनिवर्य श्री राजविजयजीनुं चातुर्मास श्री कलकत्ता खाते थएलुं ते वेळा तेमना पवित्र उपदेशथी आमोए साधुओने तेमज धार्मिष्ट श्रावकोने भेट आपवा सारूं आ ग्रंथ प्रगट करेलो छे.

बाबु अमोलकचंदजी

चोवीस दंडक.

संसारी जीवो चार गतीने विषे २४ दंडकमां भमेछे ते चोवीस दंडकोना नामो.

१ सात नारकी मळीने १ दंडक	१८ तेंद्रीनुं दंडक
११ दस भवनपतीना १० दंडक	१९ चोरेंद्रिनुं दंडक
१२ पृथ्वीकायनुं दंडक	२० तिर्यंच पंचेंद्रीनुं दंडक
१३ अप्पकायनुं दंडक	२१ मनुष्यनुं दंडक
१४ तेऊकायनुं दंडक	२२ वाणवंतरनुं दंडक
१५ वाऊकायनुं दंडक	२३ ज्योतिपीनुं दंडक
१६ वनस्पतीकायनु दंडक	२४ वैमानिकनुं दंडक
१७ बेंद्रिनुं दंडक	

आ चोवीस दंडकना दरेकना अनेक भेद छे ते लखिये छीए.

सात नारकीनुं एक दंडक तेना भेदो.

नाम	गोत्र	नाम	गोत्र
१ धमा	रत्नप्रभा	५ रिठा	धूमप्रभा
२ वंसा	शर्करानभा	६ मघा	तमःप्रभा
३ सेला	वालुकाप्रभा	७ माघवती	तमस्तमःप्रभा
४ अंजणा	पंकनभा	इति	

दस भवनपतीना १० दंडक

१ असुर कुमार निकाय	६ दिव्यकुमार निकाय
२ नाग कुमार निकाय	७ उदधि कुमार निकाय
३ सुवर्ण कुमार निकाय	८ दिशि कुमार निकाय
४ विद्युत्कुमार निकाय	९ पवनकुमार निकाय
५ अग्निकुमार निकाय	१० स्तनितकुमार निकाय

पृथ्वीकायना दंडकना ६ भेद

१ लुना २ सुधा ३ वालुया ४ मणसल ५ शकरा ६ शरपुढवी

ए रीते पृथ्वीना नाम कह्या हवे तेहना भेद कहे छे. तेनी विगत

१ स्फटिकरत्न	५ हिंगलो	९ सोनुं
२ मणिरत्न	६ हरताल	१० रूपुं
३ रत्ननी जाती	७ मणसिल	११ त्रांबुं
४ प्रवाल	८ पारो	१२ लोढुं

१३ जस्वंत	१९ पलेवोपाषाण	२५ सुरमानी जात
१४ शीसुं	२० अभ्रकनी जात	२६ आंजणनी जात
१५ कथिल	२१ तुरीमाटीनी जात	२७ लुणनी जात
१६ खडी माटी	२२ पारानी जात	
१७ हिरगचीनीयानी	२३ माटानी जात	
१८ अरणेटो पाषाण	२४ पाषाणनी जात	

इत्यादी पृथ्वीकायना भेद असंख्याता जाणवा

तेरमुं अप्पकायनुं दंडक तेना भेद कहे छे.

१ जमीननुं पाणी २ आकाशनुं पाणी ३ ठरनुं पाणी ४ हेमालानुं पाणी ५ रोणडानुं पाणी ६ नीलीवनस्पतीनुं पाणी ७ माकनुं पाणी ८ घनोदधि

ए रीते ए आदे दईने अप्पकायना भेद असंख्याता जाणवा.

चौदमुं तेउकायनुं दंडक तेन भेद कहे छे.

१ अंगारानो अग्नि	४ ऊल्कापातनो अग्नि
२ ज्वालनो अग्नि	५ कणियानो अग्नि
३ मुरमुरनो अग्नि	६ वीजलीनो अग्नि

ए रीते तेऊकायना भेद असंख्याता जाणवा.

हवे पन्नरमुं वाउकायनुं दंडक तेना भेद कहे छे.

१ उपभ्रामक वायु ४ मंडलीक वायु ७ घनवात
२ मंदवायु ५ मुरखशुद्धवायु ८ तनवात
३ उत्कलितवायु ६ गुंजवायु

ए रीते वायुकायना दंडकना भेद असंख्याता जाणवा

सोळमुं वनस्पतीकायनुं दंडक तेना भेद कहे छे.

१ गुछा २ गुमा ३ वलया ४ वल्ली ५ पतिरग ए रीते वनस्पतीकायना पांच नाम कह्या. हवे एना भेद कहे छे. ते वे भेद छे

१ एक साधारण वनस्पतीकाय तेनां एक शरीरमां अनंता जीव होय

२ वीजी प्रत्येक वनस्पतीकाय तेना एक शरीरमां एक जीव होय

ए रीते वनस्पतीकायनुं दंडक तेना भेद असंख्याता जाणवा.

सतरमुं बेंद्रिनुं दंडक तेना भेद कहे छे.

१ शंखना जीव ४ जलुना जीव ७ मेरीना जीव
२ कोडांना जीव ५ अलसीयाना जीव ८ कृमीना जीव
३ गंडालाना जीव ६ लारीया जीव ९ पुंराना जीव

ए रीतें ए आदे दईनें वेंद्रिना भेद अनेक जाणवा

अढारमुं तेंद्रीनुं दंडक तेना भेद

१ कानखजूरा	७ ईल	१३ गोवरना कीडा
२ माकण	८ घीमेल	१४ धनेडीया
३ जूऊं	९ सावय	१५ कंथुआ
४ कीडीओ	१० गोगीडा	१६ गोपालीक
५ उडई	११ गदहीया	१७ इंद्रगोप
६ मंकोडा	१२ विष्टाना कीडा	

ए रीवे तेंद्री जीवना भेद अनेक जाणवा

ओगणीसमुं चोरंद्रीनुं दंडक तेना भेद

१ वीछी	४ भमरी	७ डांस	१० कंसारी
२ ढंकण	५ तीड	८ मछर	११ कोईवाडा
३ भमरा	६ माखी	९ पतंगीआ	

ए रीते चोरेंद्रीना अनेक भेद जाणवा.

वीसमुं तीर्यचनुं पंचेंद्री दंडक तेना भेद

१ जलचर २ थलचर ३ खेचर ४ उरपरीसर्प
५ भुजपरीसर्प

ए रीते तीर्यच पंचेंद्रीना नाम जाणवा . पण तेना वे प्रकार छे ते कहे छे

१ एक सम्मुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्री ते मातापिताना संयोगविना उपजे छे

२ बीजा गर्भज तिर्यंच पंचेंद्री ते मातापिताना संयोग विना उपजे छे

ए रीते तीर्यंच पंचेंद्री जीवना बे भेद कह्या

एकवीसमुं मनुष्यनुं दंडक तेना भेद

१५ पनर कर्मभूमी क्षेत्रना ५६ छपन अंतरद्वीप क्षेत्रना ३० त्रीस अकर्मभूमी क्षेत्रना ए रीतें सरवे मलीने एकसोएक

क्षेत्रनेंविषे मनुष्य उपजे छे तेना भेद छे तेनी विगत

१ एक समुर्छम मनुष्य ते चौद स्थानके उपजे तेनुं शरीर अंगुलना असंख्यातमो भाग होय अने अंतर्मुहुर्त आउख्य होय सात आठ प्राणना धणी होय वली चर्मचक्षुथी दीठामां आवे नहीं

२ बीजा गर्भज मनुष्य ते मातापिताना संयोगथी उपजे छे तेना दश प्राण होय

ए रीते मनुष्यना दंडकना २ भेद कह्या

बाविसमुं वांणवंतरनुं दंडक बे प्रकारनुं तेना भेद

१ पेहेली व्यंतरनी निकायना नाम कहे छे

१ पिशाच	४ राक्षस	७ महारोग
२ भूत	५ किंनर	८ गंधर्व
३ यक्ष	६ किंपुरुष	

ए रीतें पेहेली निकायना नाम जाणवा

२ वीजी वांणवींतरनी निकायना नाम कहे छे.

१ अणपनि निकाय	४ भूतवादी निकाय	७ कोहंड निकाय
२ पणपनि निकाय	५ कंदी निकाय	८ पतग निकाय
३ एसीवादी निकाय	६ महाकंदी निकाय	

॥ ए रीतें वाणविंतरनी निकायना भेद कह्या ॥

त्रेविसमुं जोतपीनुं दंडक तेना भेद

१ चंद्र २ सूर्य ३ ग्रह ४ नक्षत्र ५ तारा

ए रीते पांच प्रकारें जोतिषीनुं दंडक तेना भेद कह्या

चोविसमुं वैमानिकनुं दंडक तेना भेद

वैमानीक पेवताना वे भेद छे १ एक कल्प

२ अने वीजा कल्पातीत

१ कल्प एटले वारदेव लोकवाला ते आचारवाला होय

२ कल्पप्रातीत एटले नवग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर विमानवाला ते पोते स्वामी छे

ए रीते वैमानिकना वे भेद कह्या हवे तेना नाम वि-स्तरीने कहे छे

१ प्रथम कल्प एटले बारदेव लोक

१ सुधर्मा देवलोक	७ महाशुक्र देवलोक
२ ईशान्य देवलोक	८ सहसार देवलोक
३ सनत्कुमार देवलोक	९ आनत देवलोक
४ माहेंद्र देवलोक	१० प्राणात देवलोक
५ ब्रह्म देवलोक	११ आरण देवलोक
६ लांतक देवलोक	१२ अच्युत देवलोक

ए रीतें बार देवलोकना नांम कह्या हवे बीजा कल्पातीतना नांम कहे छे तेना बे भेद छे १ एक नवग्रैवेयकना देवता २ बीजा पांच अनुत्तर विमानना देवता

१ हवे प्रथम नवग्रैवेयकना नव नाम

१ सुदर्शन	४ सर्वभद्र	७ सुमणुस
२ सुप्रतिबंध	५ विशाल	८ प्रियंकर
३ मनोरम	६ सुमनस	९ आदित्य

ए रीते नवग्रैवेयकना नव नाम जाणवा

२ बीजा पांच अनुत्तर वैमानिक देवताना पांच भेद

१ विजय	३ जयंत	सर्वार्थ सिद्ध
२ विजयंत	४ अपराजीत	

ए रीते कल्पातीतना २ भेद कह्या

ए रीते वैमानिक देवतानुं दंडक तेना भेद जाणवा.

इति श्री चोवीस दंडकना भेद संपूर्ण

पात्रीस द्वारना नाम

ए रीते पात्रीस द्वारना नाम कह्या

एकेक द्वारनो चोवीस दंडकसाथे खुलासो

प्रथम शरिरद्वारना पांच भेद छे

१ उदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारक शरीर
४ तेजःशरीर ५ कार्मण शरीर

एकेक दंडकना केटला शरीर छे ते

१ वैक्रिय शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर
दस भवनपतीना दस दंडकने त्रण शरीर होय
१ वैक्रिय शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर
पृथविकायना दंडकने त्रण शरीर होय
१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर
अप्पकायना दंडकने त्रण शरीर होय
१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर
तेउकायना दंडकने त्रण शरीर होय
१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर
वाऊकायना दंडकने चार शरीर होय
१ उदारीक २ वैक्रीय ३ तेजस् ४ कार्मण शरीर
वनस्पतीकायना दंडकने त्रण शरीर होय
१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर
बेंद्रि दंडकने त्रण शरीर होय
१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर
तेंद्रि दंडकने त्रण शरीर होय
१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर
चौरेंद्री दंडकने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर

तिर्यंच पंचेंद्री दंडकना शरीरना वे भेद छे

१ प्रथम एक समुर्छिमातिर्यंच पंचेंद्रीतेने त्रण शरीर छे

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर

२ बीजा गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीने चार शरीर होय

१ उदारीक शरीर	३ तेजःशरीर
२ वैक्रीय शरीर	४ कार्मण शरीर

ए रीते तिर्यंच पंचेंद्री दंडकनो शरीर बे प्रकारनो वे भेद छे.

मनुष्य दंडकना शरीर वे प्रकारना छे

१ प्रथम समुर्छिम मनुष्यने त्रण शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर

२ बीजा गर्भज मनुष्य तेने पांच शरीर होय

१ उदारीक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारक शरीर

४ तेजःशरीर ५ कार्मण शरीर

ए रीते मनुष्य दंडकना शरीरना भेद छे.

व्यंतर देवताना दंडकने तीन शरीर होय

१ वैक्रीय शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर

जोतिषी देवताना दंडकने त्रण शरीर होय

१ वैक्रीय शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर

वैमानिक देवताना दंडकने त्रण शरीर होय

१ वैक्रीय शरीर २ तेजःशरीर ३ कार्मण शरीर

इति हेलुं शरीरद्वार संपूर्ण.

अथ बीजुं अवगाहनाद्वार लिख्यते

प्रथम सात नारकी मलीने एक दंडकने अवगाहना प्रथम उपजतां अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने भव धारणीकजघन्य धनुष्य ७॥ अंगुल ६ अने उत्कृष्टो ५०० धनुष्यनो जाणवो अने नवो वैक्रीय शरीर तेथी बमणो जाणवो हवे तेनी विस्तारे करी विगत

नरकना नांम	भवधारणीदेहमान		नवोवैक्रीयदेहमान	
	धनुष्य	अंगुला	धनुष्य	अंगुला
१ हेली	७॥	६	१५॥	१२
२ बीजी	१५॥	१२	३१।	..
३ त्रीजी	३१।	.	६२॥	. .
४ चोथी	६२॥		१२५	. . .
५ पांचमी	१२५	.	२५०	
६ छठी	२५०	..	५००	
७ सातमी	५००	.	१०००	

सात नरकना भवधारणीदेहमान उत्कृष्ठ वैक्रीयदेहमान ए रीते सात नरकनु देहमान कह्या

सात नरकनेविषे ओगणपचास पाथडा छे तेमां एकेक नरकनेविषे जूदाजूदा पाथडा छे तेमांथी एकेक पाथडानेविषे नरकना जीवोना शरीरना उंचपणाना यंत्र विवरीने लखीए छीए.

१ प्रथम रत्नप्रभा नरकनेविषे १३ पाथडा छे तेना देहमानतु यंत्र लिख्यते

पाथडा	धनुष्य	हाथ	अंगुल
१	०	३	०
२	१	१	८॥
३	१	३	१७
४	२	२	१॥
५	३	०	१०
६	३	२	१८॥
७	४	१	३
८	४	३	११॥
९	५	१	२०
१०	६	०	४॥
११	६	२	१३
१२	७	०	२१॥
१३	७	३	६

२ बीजी शर्कराप्रभा नरकना ११ पाथडा छे तेना देह-मानतुं यंत्र लिख्यते.

पाथडा	धनुष्य	हाथ	अंगुल
१	७	३	६
२	८	२	९
३	९	१	१२
४	१०	०	१५
५	१०	३	१८
६	११	२	२१
७	१२	२	०
८	१३	१	३
९	१४	०	६
१०	१४	३	९
११	१५	२	१२

२ वालुकाप्रभा नरकना ९ पाथडा छे तेना देहमान नुं यंत्र लिख्यते

पाथडा	धनुष्य	हाथ	अंगुल
१	१५	२	१२
२	१७	२	७॥
३	१९	२	३
४	२१	१	२२॥
५	२३	१	१८
६	२५	१	१३॥
७	२७	१	९
८	२९	१	४॥
९	३१	१	०

४ चोथी पंकप्रभा नरकना ७ पाथडा छे तेना देहमान नुं यत्र लिख्यते

पाथडा	धनुष्य	हाथ	अंगुल
१	३१	१	०
२	३६	१	२०
३	४१	२	१६
४	४६	३	१२
५	५२	०	८
६	५७	१	४
७	६२	२	०

५ पांचमी धूमप्रभा नरकना ५ पाथडा छे तेना देह-मानहुं यंत्र

पाथडा	धनुष्य	हाथ	अंगुल
१ पेला	६२	२	०
२ बीजा	७८	०	१२
३ त्रीजा	९३	३	०
४ चोथा	१०९	१	१२
५ पांचमा	१२५	०	०

६ ठी तमःप्रभा नरकना ३ पाथडा छे तेनुं यंत्र

पाथडा	धनुष्य
१	१२५
२	१८७॥
३	२५०

७ तम स्तमःप्रभानो १ पाथडो तेनुं यंत्र

पाथडा	धनुष्य
१	५००

ए रीतें सात नरकनेविषे ओगणपचास पाथडा छे तेनुं देहमान जुदु जुदुं छे.

हवे दश प्रकारना भवनपतीना दश दंडकने अवगाहना. प्रथम उपजतां वखते अंगुलनो असंख्यागमो भाग. अने उत्कृष्टुं हाथ ७ नुं अने उत्तर वैक्रिय करे तो एकलाख योजन थाय. ए रीते भवनपतिनी अवगाहना कही.

हवे पृथ्वीकायनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट देहमान अंगुलनो असंख्यातमो भाग. हवे अप्पकायनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट देहमान अंगुलनो असंख्यातमो भाग हवे तेउकायनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट देहमान अंगुलनो असंख्यातमो भाग हवे वाउकायनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट देहमान अंगुलनो असंख्यातमो भाग

हवे वनस्पतिकायना देहमानना बे भेद छे ते कहे छे

१ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग. २ उत्कृष्ट एकहजार योजन अधिक

हवे बेंद्रीनो देहमान तेना भेद छे ते कहे छे.

१ जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग. २ अने उत्कृष्ट बार योजन

हवे तेंद्रीनो जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग. अने उत्कृष्ट त्रण गाऊनुं.

हवे चौरेंद्रीनुं जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट गाऊ चारनो.

हवे तिर्यंच पंचेंद्री जघन्य अंगुलनुं असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट एकहजार योजन तेनी विगत विवरीने

लखी छे.

१ हवे एक गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीनो देहमाननी वीगत छे.

१ जलचरनुं एकहजार योजननुं छे.
२ स्थलचरनुं गाऊ ६ नुं
३ खेचरनु धनुष्य पृथक
४ उरपरी सर्पनुं १ हजार योजन
५ भुजपरी सर्पनुं गाऊ पृथक

ए रीते गर्भजनुं देहमान अने उत्तर वैक्रीय शरीर करेतो नवशो योजन

२ हवे बीजी समूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीना देहमाननी विगत .

१ जलचर एकहजार योजन
२ स्थलचर गाऊ पृथक
३ खेचर धनुष्य पृथक
४ उरपरीसर्प योजन पृथक
५ भुजपरीसर्पनुं गाऊ पृथक

ए रीते बे प्रकारें तीर्यंच पंचेंद्रीना देहमान उत्कष्ठ

हवे मनुष्यनुं शरीर जघन्य अंगुलना असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट ३ गाउनुं तेनी विगत छे.

१ देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीआनी अवगाहना ३ गाउनी

२ हरीवर्ष क्षेत्र अने रम्यक क्षेत्रना जुगलीआनी अवगाहना २ गाऊनी

३ हेमवंतक्षेत्र अने ऐरण्यवतक्षेत्रना जुगलीआनुं देहमान १ गाऊ

४ छपंन्न अंतरद्वीपक्षेत्रना जुगलीआनु देहमान ८०० धनुष्य

५ पांच महा विदेहक्षेत्रना मनुष्यनुं देहमान ५०० धनुष्य

६ हवे पांच भरत. तथा पांच ऐरावतक्षेत्रना मनुष्यनो देहमान छे आरा प्रमाणें जाणवी तेनी विगत

१ पेलेआरे गाऊ ३

२ बीजेआरे गाऊ २

३ तीजेआरे गाऊ १ पण उतरतुं धनुष्य ५००

४ चोथेआरे धनुष्य ५०० पण उतरतु हाथ ७

५ पांचमेआरे हाथ ७ नु पण उतरतुं हाथ १ नुं

६ छटेआरे हाथ १ नुं पण उतरतुं हाथ १ नुं माटेरुं.

ए रीते क्षेत्र बेनो कालसरखो वर्ते. एटले देहमान पण सरखुं जाणवूं.

ए रीते मनुष्य गर्भजनुं कह्युं. अने उत्तर वैक्रिय करे तो एकलाख योजन अधिक चार अंगुलानु जाणवु अने समुर्छिम मनुष्यनी अवगाहना जघन्य उत्कृष्टी

अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणवो.

हवे वाणविंतरनुं देहमान जघन्य आवी उपजेने अ-गुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट ७ हाथनुं अने उत्तर वैक्रिय जघन्य अगुलनो संख्यातमो भाग उत्कृ-ष्ट एकलाख योजन

हवे जोतिषी देवतानुं देहमान जघन्य तथा उत्कृष्ट विं-तरनी पेरे जाणवुं.

हवे वैमानिक देवतानुं देहमान जघन्य उपजतां जघन्य उपजतां वखते अंगुलनो असख्यातमो भाग अने उत्कृ-ष्ट देहमान तेनी विगत लखीं छे

१ सौधर्म देवलोक अने ईशान देवलोके देहमान हाथ ७ नुं

२ सनत्कुमार देवलोक अने माहेंद्र देवलोके देह-मान हाथ ६ नुं

३ ब्रह्म देवलोक अने लांतक देवलोके देहमान हाथ ५ नुं

४ महाशुक्र देवलोक अने सहसार देवलोके देह-मान हाथ ४ नुं

५ नवमा देवलोकथी बारमा देवलोकसुधी देहमान हाथ ३ नुं

६ नवग्रैवेयकनुं देहमान हाथ २ नुं

७ चार अनुत्तर विमाने देहमान हाथ १ नुं

८ पाचमुं सर्वार्थसिद्धे देहमान एक हाथ मोटेरुं

वैक्रिय करतां जघन्य अंगुलना संख्यातमा भाग उत्कृष्ट १ लाख योजनसुधी ते वैक्रिय १२ देवलोकसुधी करे उपरांत न करे

ए रीते वैमानिक देवतानी देहनी अवगाहना कही

हवे वैमानिक देवतानुं जेनुं जेटला सागरोपमनुं आउखुं छे तेटला सागरोपम उपर शरीरना प्रमाणनो यंत्र लखीए छीए. तेनी विगत

सागरोपमनुं आउखुं	हाथनुं प्रमाण	हाथना भाग उपरे	छेदाका एक हाथना भाग
१	७	०	११
२	७	०	११
३	६	४	११
४	६	३	११
५	६	२	११
६	६	१	११
७	६	०	११
८	५	६	११

सागरोपमनु आउखुं	हाथनु प्रमाण	हाथना भाग उपरं	छेदाका एक हाथना भाग
९	६	५	११
१०	६	४	११
११	६	३	११
१२	६	२	११
१३	६	१	११
१४	६	०	११
१५	५	३	११
१६	५	२	११
१७	५	१	११
१८	५	०	११
१९	३	३	११
२०	३	२	११
२१	३	१	११

सागरो पमनुं आउखुं	हाथनु प्रमाण	हाथना भाग उपरे	छेदाका एक हाथ ना भाग
२२	३	०	११
२३	३	८	११
२४	२	७	११
२५	२	६	११
२६	२	५	११
२७	२	४	११
२८	२	३	११
२९	२	२	११
३०	२	१	११
३१	२	०	११
३२	१	१	११
३३	१	०	११

ए रीते वैमानिक देवताना शरीरनां मान विवरीने क०

इति बीजो अवगाहनाद्वार संपूर्ण

३ हवे त्रिजुं संघयणद्वार लिख्यते

हवे प्रथम सघयण ६ ना नाम लखीए छीए.

१ वज्रऋषभ नाराच संघयण ४ अर्धनाराच संघयण

२ ऋषभ नाराच संघयण ५ कीलिक संघयण

३ नाराच सघयग ६ छेवट्ठुं संघयण

ए रीते छ संघयणना नाम कह्या हवे चोवीस दंडक माहेथी एकेक दंडकने संघयण कहे छे तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकने संघयण न होय तेने असंघयणी कहीए

दश प्रकारें दश भवनपति देवताना दस दंडकने संघयण न होय ते असंघयणी

पृथ्वीकायना दंडकने एक छेवट्ठुं संघयण होय

अप्पकायना दंडकने एक छेवट्ठु संघयण होय

तेऊकायना दंडकने एक छेवट्ठुं संघयण होय

वाऊकायना दंडकने एक छेवट्ठु संघयण होय

वनस्पतिकाय दंडकने एक छेवट्ठुं सघयण होय

बेंद्री दंडकने एक छेवट्ठुं सघयण होय

तेंद्री दंडकने एक छेवट्ठुं सघयण होय

चोरेंद्री दंडकने एक छेवट्ठु संघयण होय

तिर्यंच पंचेंद्री दंडकना २ भेद छे तेनी विगत छे

१ समुछिम तिर्यंचपंचेंद्रीने एक छेवट्ठुं संघयण होय

२ बीजा गर्भजातिर्यंच पंचेंद्रीने ६ संघयण होय

मनुष्यपंचेंद्री दंडकना २ भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिमने १ छेवटुं होय
२ गर्भजने ६ संघयण होय
व्यंतर देवताने संघयण न होय तेने असंघयणी
[illegible]
[illegible] देवताने संघयण न होय तेने असंघयणी
[illegible]
[illegible]निक देवताने संघयण न होय तेने असंघयणी
[illegible]
[illegible] चोवीस दंडकना विशे संघयण कह्या
[illegible] संघयणवाला जीवोनी बे गती छे ते विस्तारीने
[illegible] छीए. जे के आ संघेणवालो जीव कई गती-
[illegible] जाय तेनो विगत लखीए छीए
१ एक ऊर्ध्वगति २ बीजी अधोगति
[illegible] गति कही
[illegible] प्रथम उर्ध्वगतिना भेद कहे छे.
१ प्रथम ऊर्ध्वगति जवाना संघयण छनी विगत
कहे छे
१ वज्रऋषभ नाराच संघयणवालो मोक्षलगे जाय
२ ऋषभ नाराच संघयणवालो नवग्रैवेयकलगे जाय
३ नाराच संघयणवालो दशमा देवलोकसुधी जाय
उपरांत न जाय
४ अर्धनाराच संघयणवालो आठमा देवलोकसुधी
[illegible] उपरांत न जाय

५ कीलिका संघयणवालो छठा देवलोकसुधी जाय उपरांत न जाय

६ छेवटा संघयणवालो चोथा देवलोकसुधी जाय उपरांत न जाय

ए रीते ऊर्ध्वगति जवाना संघयण कह्या

२ हवे अधोगति जावाना संघयण छनी विगत कहे छे

१ वज्रऋषभ नाराच संघयणवालो सातमी नरकलगे जाय

२ ऋषभ नाराच संघयणवालो छठी नरकलगे जाय

३ नाराच संघयणवालो पांचमी नरकलगे जाय

४ अर्धनाराच संघयणवालो चोथी नरकसुधी जाय

५ कीलिका संघयणवालो त्रीजी नरकलगे जाय उपरांत न जाय

६ छेवटा संघयणवालो बीजी नरकलगे जाय उपरांत न जाय

ए रीते ६ संघयणनी अधोगति कही.

इति श्री त्रीजुं संघयणद्वार संपूर्ण.

---

४ हवे चोथुं संज्ञाद्वार लिख्यते.

हवे दशप्रकारे संज्ञाद्वार तेना भेद लखिए छीए

१ आहारसंज्ञा २ भयसंज्ञा ३ मैथुनसंज्ञा

४ परिग्रहसंज्ञा ५ क्रोधसंज्ञा ६ मानसंज्ञा
७ मायासंज्ञा ८ लोभसंज्ञा ९ लोकसंज्ञा
१० ओघसंज्ञा

ए रीते दश संज्ञाना नाम कह्या.

पांच थावरने पण दश संज्ञा होय. तथा बीजी संज्ञा ६ ना नाम लिख्यते.

१ सुखसंज्ञा २ दुःखसंज्ञा ३ मोहसंज्ञा
४ दुगंच्छासंज्ञा ५ शोकसंज्ञा ६ धर्मसंज्ञा

ए रीते छ सज्ञा बीजी कही अने दस संज्ञा प्रथमनी एटले सोल संज्ञा थई. बाकी बीजा दंडकने दश प्रथमनी पण होय. अथवा सोल पण होय

इति श्री चोथुं संज्ञाद्वार संपूर्ण.

अथ पांचमुं संस्थानद्वार लिख्यते

हवे प्रथम संस्थानना छ भेद छे. तेना नाम लिख्यते

१ समचतुरस्र संस्थान ४ कुब्ज संस्थान
२ नगोहपरिमंडल संस्थान ५ वामन संस्थान
३ सादि संस्थान ६ हुंड संस्थान

ए रीते छ संस्थानना नाम कह्या हवे एकेक दंडकनेविषे केटला केटला संस्थान होय तेनी विगत लखिए छीए.

प्रथम सात नारकीना दंडकने हुंड संस्थान होय.

दश प्रकारें भवनपतिना दश दंडकने समचतुरस्र सं-
स्थान होय
पृथ्वीकायने हुंड संस्थान एटले मसूरनो आकार
अप्पकायने हुंड संस्थान एटले पाणीना परफोटानो
आकार
तेऊकायने हुंड संस्थान एटले सोयनी अग्निनो आकार
वाऊकायने हुंड संस्थान एटले ध्वजा पताकानो आकार
वनस्पतिकायने हुंड संस्थान एटले नानाविध प्रकार-
नो आकार
बेंद्रीने एक हुंड संस्थान जाणवो
तेंद्रीना दंडकने हुंड संस्थान जाणवो
चोरेंद्रीना दंडकने हुंड संस्थान जाणवो
तीर्यच पंचेंद्रीना बे प्रकार छे. तेनी विगत
१ समुर्छिम तीर्यंच पचेंद्रीने हुंड संस्थान जाणवो
२ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीने छ संस्थान होय.
मनुष्य दंडकना बे भेद छे. तेनी विगत
१ समुर्छिम मनुष्यने एक हुंड संस्थान होय
२ गर्भज मनुष्यने छ संस्थान होय
विंतर देवताने एक समचतुरस्र संस्थान होय
ज्योतिषी देवताने एक समचतुरस्र संस्थान होय
वैमानिक देवताने एक समचतुरस्र संस्थान होय
ए रीते चोविस दंडकना संस्थान कह्या. हवे पांच इं-
द्रीना संस्थान कहे छे.

१ स्परस इंद्रीना नाना प्रकारना संस्थान छे
२ रस इंद्रीनो खोरप सरिखो संस्थान छे
३ घ्राणेंद्रीना अचता वृक्षना फुलसरिखो संस्थान छे
४ चक्षु इंद्रीनो मसुरचंदनो आकार छे
५ श्रोतेंद्रीनो कलंबवृक्षना फुलसरिखो आकार छे
ए रीते पाच इंद्रीना संस्थान कह्या
इति पाचमु संस्थानद्वार संपुर्ण.

---

६ अथ छठो कषायद्वार लिख्यते.

हवे कषायना चार भेद छे ते कहे छे.
१ क्रोध २ मान ३ माया ४ लोभ
ए रीते ४ भेद केवलीना जीव मुकीने बाकी चोवीस दंडकना सरवे जीवोने चार कषाय जाणवा. एटले कायषद्वार समाप्त थयो
इति छठु कसायद्वार संपूर्ण.

अथ सातमुं लेस्याद्वार लिख्यते.

हवे ते लेस्या छ प्रकारनी छे तेना नाम लिख्यते
१ कृष्णलेस्या ३ कापोतलेस्या ५ पद्मलेस्या
२ नीललेस्या ४ तेजोलेस्या ६ शुक्ललेस्या

ए रीते छ लेस्याना नाम कह्या

हव एकेक दंडकने विषे केटली कटली लेस्या होय ते-नी विगत नीचे लखीए छीए

सात नारकीनो एक दडक तेने ३ पेली लेस्या होय तेनी विगत

१ पेली नरके कापोतलेस्या

२ बीजी नरके कापोतलेस्या

३ त्रीजी नरके कापोत घणी ने नील थोडी

४ चोथी नरके नीललेस्या

५ पाचमी नरके नील घणी अने कृष्ण थोडी

६ छठी नरके कृष्णलेस्या

७ मी नरके महाकृष्णलेस्या

ए रीते सात नारकीनेविषे लेस्या कही.

दश भवनपतिना दश दंडकने ४ लेस्या होय तेनी विगत छे

१ कृष्णलेस्या २ नीललेस्या

३ कापोतलेस्या ४ तेजोलेस्या

पृथ्वीकायना दंडकने ४ लेस्या पेली अपर्यासीने होय अने पर्यासीने ३ त्रण लेस्या होय

अप्पकाय अपर्यासीने पेली ४ लेस्या होय अने पर्यासीने ३ लेस्या जाणवी

तेऊकायने पेली त्रण लेस्या

१ कृष्णलेस्या २ नीललेस्या ३ कापोतलेस्या

वाऊकायने पेली ३ लेस्या

१ कृष्णलेस्या २ नीललेस्या ३ कापोतलेस्या

वनस्पतिकायने पेली ४ लेस्या

कृष्णलेस्या नीललेस्या

कापोतलेस्या तेजोलेस्या

ए चार अपर्यासीने जाणवी पण पर्यासीने पेली ३ लेस्या होय

बेंद्रीने पेली ३ लेस्या होय

१ कृष्णलेस्या २ नीललेस्या ३ कापोतलेस्या

तेंद्रीने पेली ३ लेस्या होय

१ कृष्णलेस्या २ नीललेस्या ३ कापोतलेस्या

चोरेंद्रीने पेली त्रण लेस्या होय

१ कृष्णलेस्या २ नीललेस्या ३ कापोतलेस्या

तीर्यंच पचेंद्रीमां ६ लेस्या गर्भजने होय अने समुछिमने पेली ३ लेस्या

मनुष्य पचेंद्रीमां गर्भजने ६ लेस्या होय अने समुछिम मनुष्यने पेली ३ लेस्या

वाणवितर देवताने पेली ४ लेस्या होय

ज्योतिषी देवताने १ तेजोलेस्या होय

वैमानिक देवताने त्रण होय

१ पद्मलेस्या २ तेजोलेस्या ३ शुक्ललेस्या तेनी विगत

१ पेला सुधर्मा देवलोक अने इशान देवलोकने

१ तेजोलेस्या होय

२ सनत्कुमार माहेंद्र ने ब्रह्मदेवलोक ए त्रण देवलोके १ पद्मलेस्या होय ए उपरांत देवलोक ७ अने नवग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमान एटलाने एक शुक्ललेस्या होय

ए रीते वैमानिक देवतानी लेस्या होय

ए रीते चोवीस दंडकनेविषे लेस्याद्वार कह्यो.

इति श्री सातमुं लेस्याद्वार संपूर्ण

अथ आठमुं इंद्रीद्वार लिख्यते.

इंद्रीओ पांच प्रकारनी तेना नाम नीचे लखी देखाडे छे

१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री

४ चक्षुरिंद्री ५ श्रोतेंद्री

ए रीते पांच इंद्रीना नाम कह्या.

ते एकेक दंडकनेविषे केटली केटली इंद्री होय तेनी विगत लखी देखाडी छे.

सात नारकीने पांच इंद्री होय

दश प्रकारे भुवनपतिना दश दंडकनेविषे पांच इंद्री होय

पृथ्वीकायना दंडकनेविषे एक स्पर्शेंद्री होय

अप्पकायना दंडकनेविषे एक स्पर्शेंद्री होय

तेऊकायना दंडकनेविषे एक स्पर्शेंद्री होय

वाऊकायना दंडकनेविषे एक स्पर्शेंद्री होय
वनस्पतिकायना दंडकनेविषे एक स्पर्शेंद्री होय
बेइंद्रीना दंडकनेविषे बे इंद्रीय होय
१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री
तेंद्रीना दंडकनेविषे त्रण इंद्री होय
१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री
चोरेंद्रीना दंडकनेविषे चार इंद्री होय
१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री ४ चक्षुरिंद्री
तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय
मनुष्य पंचेंद्रीना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय
वाणविंतरना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय
ज्योतिषी देवताना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय
वैमानिक देवताना दंडकनेविषे पांच इंद्री होय
ए रीते चोवीस दंडकनेविषे इंद्रीद्वार कह्यो
इति आठमुं इंद्रीद्वार संपूर्ण

अथ नवमुं समुद्घातद्वार लिख्यते.

सात समुद्घात कहीए छीए.

१ वेदना समुद्घात
२ कषाय समुद्घात
३ मरण समुद्घात
४ वैक्रिय समुद्घात
५ तेजस समुद्घात
६ आहार समुद्घात
७ केवली समुद्घात

ए रीते सात समुद्घातना नाम कह्या.

एकेक समुद्घातनो अर्थ संक्षेपें करीने लखीए छीए तेनी विगत छे.

१ पेहली वेदना समुद्घात ते वेदनाए परिणित जीव घणा वेदनी कर्म प्रदेश घणे काले करी वेदना योग्य उदीरणा करणसु आकर्षी उद्यावलीकामाहे घाले निर्जरे तेहने वेदना समुद्घात कहीए.

२ बीजो कषाय समुद्घात ते हवे अंतर मुहूर्त प्रमाण तिहा वर्ततो जीव. वेदनाए पड्यो आपणा जीव प्रदेश अनंता कषाये पड्यो जीव उदीरणाए करी कषाय पुद्गल रस खपावे वेदना समुद्घातनी परें छे ए कषाय समुद्घात कहीए.

३ त्रीजो मरण समुद्घात अंतर मुहूर्त मरण समयें आयु कर्म पुद्गल शाटक निमित्त ए आपणा शरीरपणें ए जाडुं लांबुं जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टो असंख्याता योजननुं छे. आगे अवतरसे तिहां लगे आत्म प्रदेशनुं दंडक रेते उत्पत्तीस्थान ऋजुगति एक समयें वक्रगति बीजी त्रीजें चोथे पांचमे समये मरण ते मरण समुद्घात जाणवो

४ वैक्रिय समुद्घात. हवे वैक्रिय लब्धी ए करी

नवो वैक्रियरूप करवाने काजे. विकलंभ वा इले निज शरीरमान लांपूपणे जघन्य० . अंगुल असंख्यातनो भाग अने उत्कृष्टो लाख योजन अधिक मान आत्मप्रदेशनो दंडकनी रचना करे तेणे करी घणा वैक्रियना पुद्गलनो शाटक करे पण नारकीने अंतर मुहूर्तनु मान अने मनुष्य तथा तिर्यचने चार मुहुर्त अने देवताने दिन १५ नुं मान

५ तेजस् समुद्घात. जे लब्धीवंत साधु तथा वली अन्य क्रोध पाम्यो थको जघन्य थकी तो अंगुलनो संख्यातमो भाग. अने उत्कृष्टो संख्याता योजन प्रमाण लांबो. तेजः शरीर पुद्गलें विव्यो आत्म प्रदेशनुं दंड रचे तेणे करीने मनुष्यादिकने बाले. एणी परे घणा तेजस्ना पुद्गलनो शाटक करे पण अंतर मुहुर्तनु प्रमाण

६ आहारक समुद्घात. हवे आहारक शरीर करवा निमित्त वैक्रियनीपरे. चउदपूर्व धारी होय ते करे ए मुंडाहाथ प्रमाणे आहारक शरीरनो पुतलो करे संख्याता योजनलगे जाय अंतर मुहूर्तनुं प्रमाण

७ सातमो केवली समुद्घात ते केवली आयु कर्म्म वेदनादिक थकी ओछुं जाणे

ए करे चौदराज प्रमाण. तेह्मा पहेले

समये दंडरचे २ बीजे समये कपाट करे ३ त्री-
जे समये मंथाणो करे ४ चोथे समये आंतरा
पूराए ५ पांचमे समये आंतरा संहरे ६ छठे
समये मंथाणो संहरे ७ सातमे समये कपाट
संहरे ८ आठमे समये दंड संहरे. पछे सह-
ज स्वभाविक रूप थाय. आठ समय प्रमाण
ईहार कह्यो. घणी वेदनीय नामगोत्रना दल शा-
टन करे. दृष्टांत कहे छे ते जिम भी-
नुं लुगडुं होय तेहने मोकलुं करीने उघाडलुं
सुकविए. तिम आत्म प्रदेश विस्तारने करीने
वेहेला कर्म्म निर्जराय. ए रीते केवली समु-
द्घात कहीए. ए रीते सात समुद्घात जाणवा
स्वरूपें कह्या.

८ आठमो पाचीत मासखंड समुद्घात ते अजीव स-
मुद्घात करे. आठ समयनुं मान

प्रथम सात समुद्घात कही तेमांथी एक एक दंडकने
विषे केटला समुद्घात होय ते कहे छे

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे चार समुद्घात हो-
य ते कहे छे.

१ वेदना २ कषाय ३ मरण ४ वैक्रिय

दश प्रकारे भुवनपतिना दश दंडकनेविषे पांच समुद्-
घात होय तेनी विगत

१ वेदना २ कषाय ३ मरण ४ वैक्रिय ५ तेजु

पृथ्वीकायना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्घात होय तेनी विगत

१ वेदना २ कषाय ३ मरण

अप्पकायना दंडकनेविषे त्रण समुद्घात होय तेनी विगत

१ वेदना २ कषाय ३ मरण

तेऊकायना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्घात होय

वाऊकायना दंडकनेविषे पेला चार समुद्घात होय.

वनस्पतीकायना दंडकनेविषे पेला त्रण समुदघात होय

बेंद्रीना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्घात होय

तेंद्रीना दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्घात होय

चोरंद्री दंडकनेविषे पेला त्रण समुद्घात होय

तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे समुद्घातना बे भेद छे

१ पेला समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे पेला त्रण समुद्घात होय

२ बीजा गर्भज तिर्यंचने पेला पांच समुद्घात होय

मनुष्य पंचेंद्रीना दंडकनेविषे समुद्घातना बे भेद छे.

१ पेला समुर्छिम मनुष्यने पेला त्रण समुद्घात होय

२ बीजा गर्भज मनुष्यने सात समुद्घात होय

वाणविंतरना दंडकनेविषे पेला पांच समुद्घात होय

ज्योतिषी देवताना दंडकनेविषे पेला पांच समुद्-
घात होय
वैमानिक देवताना दंडकनेविषे पेला पांच समुद्-
घात होय
ए रीते चोविस दंडकनेविषे समुद्घातद्वार कह्यो.
इति नवमो समुद्घातद्वार संपूर्ण.

अथ दसमुं दृष्टि द्वार लिख्यते

दशमुं दृष्टिद्वार तेना त्रण भेद छे ते कहे छे
१ सम्यकदृष्टी २ मिथ्यादृष्टी ३ सम्यक्‌मिथ्यादृष्टी
ए रीतें दृष्टीना त्रण भेद कह्या
चोविस दंडकमाहेथी एकेक दंडकनेविषे केटली के-
केटली दृष्टी होय तेनी विगत विस्तारीने लखी छे.
पेला सात नारकीना दंडकनेविषे त्रण दृष्टी होय
दशप्रकारना भुवनपतिना दश दंडकनेविषे त्रण दृ-
ष्टी होय
पृथ्वीकायना दंडकनेविषे एक मिथ्यादृष्टी होय
अप्पकायना दंडकनेविषे एक मिथ्यादृष्टी होय
तेऊकायना दंडकनेविषे एक मिथ्यादृष्टी होय
वाऊकायना दंडकनेविषे एक मिथ्यादृष्टी होय
वनस्पतिकायना दंडकनेविषे एक मिथ्यादृष्टी होय
बेंद्री दंडकनेविषे बे दृष्टी होय तेनी विगत छे

१ सम्यक्द्रष्टी २ मिथ्यादृष्टी
तेंद्री दंडकनेंवीषे पेली वे द्रष्टी होय
१ सम्यक्द्रष्टी २ मिथ्यादृष्टी
चारेंद्री दंडकनेंविषे पेली वे द्रष्टी होय
१ सम्यक्द्रष्टी २ मिथ्यादृष्टी
तीर्यंच पंचेंद्री दंडकनेविषे त्रण द्रष्टी होय
मनुष्य पंचेंद्री दंडकनेंविषें त्रण द्रष्टी होय
वाण वंतरना दंडकनेविषे त्रण द्रष्टी होय
ज्योतिषीना दंडकनेविषे त्रण द्रष्टी होय
वैमानिक देवताना दंडकनेविषे त्रण द्रष्टी होय
ए रीते २४ चोविस दंडकनेविषे द्रष्टीद्वार छे

इति दशमुं द्रष्टीद्वार संपूर्ण.

अथ अग्यारमुं दर्शनद्वार लिख्यते.

दर्शनद्वारना चार भेद छे तेनी विगत

१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन
३ अवधीदर्शन ४ केवलदर्शन

ए रीते चार दर्शनना नाम कह्या
चोवीस दंडकमांहेथी एकेक दंडकनेविषे केटला
केटला दर्शन होय तेनी विगत लखीए छीए
प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे त्रण दर्शन होय.
१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन

दश प्रकारें भुवनपतिना दश दंडकनेविषें ३ दर्शन होय.
१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
पृथ्वीकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
अप्पकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
तेउकायना दंडकनाविषें एक अचक्षुदर्शन होय
वाउकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
वनस्पतीकायना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
बेंद्रीना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
तेंद्रीना दंडकनेविषें एक अचक्षुदर्शन होय
चोरेंद्रीना दंडकनेविषें बे दर्शन होय तेनी विगत.
१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन
तिर्यंचपंचेंद्री दंडकनेविषें ३ दर्शन होय तेनी विगत
१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
मनुष्यना दंडकनेविषें चार दर्शन होय
वाणवितरना दंडकनेविषें त्रण दर्शन होय
१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
ज्योतिषीदेवताना दंडकनेविषें ३ दर्शन होय
१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
वैमानिकना दंडकनेविषें त्रण दर्शन होय
१ चक्षुदर्शन २ अचक्षुदर्शन ३ अवधीदर्शन
ए रीते २४ दंडकनेविषें दर्शनना भेद कह्या

इति श्री अग्यारमुं दर्शनद्वार संपूर्ण.

अथ बारमुं ज्ञानद्वार लिख्यते.

ज्ञानना आठ भेद छे तेना बे प्रकार छे ते कहे छे ते-
नी विगत.

१ पांच ज्ञान २ त्रण अज्ञान

१ पेहेला पांच ज्ञानना भेद कहे छे

१ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधीज्ञान

४ मनःपर्यवज्ञान ५ केवलज्ञान

ए रीते ५ भेद जाणवा.

२ बीजा त्रण अज्ञानना भेद कहे छे.

१ मतिअज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ विभंगअज्ञान

ए रीते ज्ञानद्वारना ८ भेद कह्या

हवे चोविस दंडक माहेथी एकेक दंडकनेविषे ज्ञानना
केटला भेद होय तेनी विगत.

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे ज्ञानना छ भेद छे
तेनी विगत.

१ मतिअज्ञान २ श्रुतिअज्ञान ३ विभंगअज्ञान

४ मतिज्ञान ५ श्रुतिज्ञान ६ अवधीज्ञान

एज प्रकारे भुवनपतिना दश दंडकनेविषे ज्ञानना छ
भेद होय

३ त्रण अज्ञान ३ त्रण पेलाज्ञान

पृथ्वीआदना दंडकनेविषे बे अज्ञान जाणवा

१ मतिअज्ञान २ श्रुत अज्ञान

अप्पकायना दंडकनेविषें पेला बे अज्ञान होय
१ मतीअज्ञान २ श्रुत अज्ञान
तेऊकायना दंडकनेविषें पेला बे अज्ञान होय
१ मतीअज्ञान २ श्रुतअज्ञान
वाऊकायना दंडकनेविषें पेला बे अज्ञान होय
१ मतीअज्ञान २ श्रुतअज्ञान
वनस्पतीकायना दंडकनेविषें पेला बे अज्ञान होय
१ मतीअज्ञान २ श्रुतअज्ञान
बेंद्रीना दंडकनेविषें ज्ञानना ४ भेद तेनी विगत
बेंद्रीअपर्याप्ता अवस्था एकएकने बे ज्ञान ने अज्ञान ए
चार लाभे अने पर्याप्ता बेंद्रीने बे अज्ञान होय
ए रीते विगलेंद्री आदे दईने बेंद्री तेंद्री चोरंद्री ए त्र-
णने सरखुं जाणवुं
२ पेला बे अज्ञान २ पेला बे ज्ञान
तेंद्री दंडकनेविषे ज्ञानना ४ भेद जाणवा तेनी विगत
बेंद्रीनी परें जाणवी.

२ पेला बे अज्ञान २ पेला बे ज्ञान

चोरंद्री दंडकनेविषे ज्ञानना ४ भेद छे तेनी विगत
बेंद्रीनी परें जाणवी.
२ पेला बे अज्ञान २ पेला बे ज्ञान
तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकनेविषे ज्ञानना छ भेद छे तेनी
विगत
३ पेला त्रण ज्ञान होय ३ त्रण अज्ञान होय

मनुष्य दंडकनेविषे ज्ञानना आठ भेद ते मनुष्य दंडकना २ भेद छे तेनी विगत.

१ गर्भज मनुष्यने ८ ज्ञान लाभे

५ ज्ञान ३ अज्ञान ए रीते ८

२ समुर्छिमने पेला बे अज्ञान

वाणविंतरना दंडकनेविषे ज्ञानना छ भेद जाणवा तेनी विगत

३ त्रण पेला ज्ञान होय ३ त्रण अज्ञान होय

ज्योतीषी दंडकनेविषे ज्ञानना छ भेद जाणवा तेनी विगत

३ त्रण ज्ञान पेला ३ त्रण अज्ञान

वैमानिकना दंडकनेविषे ज्ञानना छ भेद जाणवा तेनी विगत

३ त्रन ज्ञान पेला ३ अज्ञान होय

ए रीते २४ दंडकनेविषे ज्ञानना भेद कह्या

पण चोवीस दंडक मांयथी म्यान नारकीनुं एक दंडक एने देवनाना तेर दंडक ए चौद दंडकवाला ज्ञानथकी जघन्य अने उत्कृष्टु केटलु देखे तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकनी विगत

सातेनरक	जघन्यदेखे	उत्कृष्टोदेखे
१ रत्नप्रभा	३॥ गाऊ	४ गाऊ
२ शर्कराप्रभा	३ गाऊ	३॥ गाऊ
३ वालुकप्रभा	२॥ गाऊ	३ गाऊ

४ पंकप्रभा	२ गाउ	२॥ गाऊ
५ धूमप्रभा	१॥ गाऊ	२ गाऊ
६ तमःप्रभा	१ गाऊ	१॥ गाऊ
७ तमस्तमःप्रभा	॥ गाऊ	१ गाऊ

ए रीते सात नारकीने ज्ञान थकी देखवानी विगत

दशप्रकारना दश भवनपतिना देवने ज्ञानथकी देखवाना बे भेद छे तेनी विगत

१ पल्योपमना आउखावालाने देखवानी विगत

१ जघन्यथकी जोजन २५ ॥

२ उत्कृष्ट संख्याता द्वीप समुद्र

२ सागरोपमना आउखावाला असंख्याता द्वीप समुद्र लगे देखे

ए रीते भवनपतीना देवता सगला पालाना आकारे देखे

वाणव्यंतर उंचपणे धजा पताका लगे देखे अने तिरछानी विगत

१ जघन्ययोजन २५ २ उत्कृष्टो संख्याता द्वीप समुद्र लगे देखे पण वाणविंतरना देवता ढोलना आकारे देखे.

ज्योतिषी देवता उंचपणे धजा पताकालगे देखे अने तिरछानी विगत

१ जघन्य योजन २५ २ उत्कृष्टो संख्याता द्वीप समुद्र देखे

ज्योतिषीना देवता झालरने आकारे देखे
वैमानिकना देवता ऊचपणे धजा पताका लगे देखे
अने तिच्छानी विगत
तथा नीचे देखवानी विगत
१ पेला देवलोक तथा बीजा देवलोकवालाने देखवानी विगत
१ तिरछुं देखवाना बे भेद छे
  १ पल्योपमना आउखावाला संख्याता द्वीप समुद्र लगे देखे
  २ सागरोपमना आउखावाला असंख्याता द्वीप समुद्र लगे देखे
  २ नीचे पेली नारकी लगे देखे
२ त्रीजा तथा चोथा देवलोकना देवताने देखवानी विगत
  १ नीचे बीजी नरकलगे
  २ तिरछुं असंख्याता द्वीप समुद्र देखे
३ पांचमा अने छठा देवलोकना देवताने देखवानी विगत
  १ नीचे त्रीजी नरकलगे
  २ तिरछुं असंख्याता द्वीप समुद्र देखे
४ सातमा अने आठमा देवलोकना देवताने देखवानी विगत
  १ नीचुं चोथी नरकलगे

२ तिरछु असंख्याता द्वीप समुद्र देखे

५ नवमुं तथा दशमुं तथा अग्यारमुं तथा बारमुं ए चार देवलोकना देवताने देखवानी विगत

१ नीचें पाचमी नरकलगे

२ तिरछुं असंख्याता द्वीप समुद्रलगे देखे

६ पेली ग्रैवेयकनी त्रिक तथा बीजी त्रिकना देवताने देखवानी विगत

१ नीचें छठी नरकलगे

२ तिरछुं असंख्याता द्वीप समुद्र लगे देखे

७ त्रीजी ग्रैवेयक त्रिकना देवता अने ४ अनुत्तर विमानना देवताने देखवानी विगत

१ नीचे सातमी नरक लगे

२ तिरछु असंख्याता द्वीप समुद्र देखे

८ पांचमा सर्वार्थ सिद्धना देवता चउदराज लोकनुं स्वरूप देखे उणो देखे

ए रीतें वैमानिक देवताना देखवाना ८ भेद छे.

ए रीतें ज्ञानथकी देखवानु स्वरूप संक्षेपे छे.

इति बारमुं ज्ञानद्वार संपूर्ण

अथ तेरमुं योगद्वार लिख्यते.

योगद्वारना पन्नर भेद छे तेनी विगत

पेला मनना ४ योग तेनी विगत

१ सत्य मनोयोग ३ सत्यामृषा मनोयोग

२ असत्य मनोयोग ४ असत्यामृषा मनोयोग

बीजा वचनना चार योग तेनी नामनी विगत.

१ सत्य वचनयोग ३ सत्यामृषा वचनयोग

२ असत्य वचनयोग ४ असत्यामृषा वचनयोग

७ त्रीजी कायना ७ योग तेना नाम लखीए छीए.

१ उदारिक काययोग

२ उदारिक मिश्रकाययोग

३ वैक्रियकाययोग

४ वैक्रिय मिश्रकाययोग

५ आहारक काययोग

६ आहारक मिश्र काययोग

७ कार्मण काययोग

ए रीते मन वचन कायाए करीने पन्नर योग थया ते चोवीस दंडकमाहेथी एकेक दंडकनेविषे केटला योग होय तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषें ११ योग होय तेनी विगत.

४ मनना चार योग १ वैक्रीयकाय योग

४ वचनना चार योग १ वैक्रीय मिश्रयोग

१ कार्मणकाय योग

ए रीतें नारकीना दंडकने विषें ११ योग छे.

दश प्रकारें दश भवनपतीना; दश दंडकनेविषें ११ योग होय तेनी विगत.

४ मनना चार योग　　１ वैक्रीकाय योग
४ वचनना चार योग　　१ कार्मणकाय योग
　　　　　　　　　　१ वैक्रीयमिश्रकाय योग

ए रीतें भवनपतीना दश दंडकना देवताने ११ योग छे.

पृथ्वीकायना दंडकनेविषें ३ योग होय तेनी विगत.
१ उदारिककाय योग २ उदारिकमिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग

अप्पकायना दंडकनेविषे ३ योग होय तेनी विगत
१ उदारिककाय योग २ उदारिकमिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग

तेऊकायना दंडकनेविषे ३ योग होय तेनी विगत
१ उदारिककाय योग २ उदारिकमिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग

वाउकायना दंडकनेविषें ५ योग होय तेनी विगत.
१ उदारीककाय योग २ उदारीकामिश्रकाय योग
३ वैक्रीयकाय योग ४ वैक्रीयामिश्रकाय योग
५ कार्मणकाय योग

वनस्पतीकायना दंडकनेविषें ३ योग होय तेनी विगत

१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग
ए रीतें ३ योग जाणवा
बेंद्रीना दंडकनेविषें ४ योग होय तेनी विगत.
१ उदारीककाय योग २ उदारीकामिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग ४ असत्यअमृषवचन योग
तेंद्रीना दंडकनेविषें ४ योग होय तेनी विगत
१ उदारीककाय योग २ उदारीकामिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग ४ असत्यअमृषवचन योग
चोरेंद्रीना दंडकनेविषें ४ योग होय तेनी विगत.
१ उदारीककाय योग २ उदारीकामिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग ४ असत्यअमृषावचन योग
तिर्यंचपंचेंद्रीना दंडकना बे भेद छे तेनी विगत.
१ समुर्छीम तिर्यंचपंचेंद्रीनें ४ योग होय
१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग ४ असत्यअमृषवचन योग
२ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीने १३ होय तेनी विगत
५ कायना पांच योग होय तेनी विगत
१ उदारिककाय योग २ उदारिकमिश्रकाय योग
३ वैक्रियकाय योग ४ वैक्रियमिश्रकाय योग
५ कार्मणकाय योग
४ मनना चार योग ४ वचनना चार योग
ए रीत तेर योग कह्या.

मनुष्य पचेंद्रीना दंडकनेविषे बे भेद छे तेनी विगत
१ पेला समुर्छीम मनुष्यने ३ योग होय
१ उदारीककाय योग २ उदारीकमिश्रकाय योग
३ कार्मणकाय योग
२ बीजा गर्भज मनुष्यने १५ योग उपर कह्या तेनी विगत
४ मनना योग ४ वचनना योग ७ कायना योग
वाण वितरना दंडकनेविषे ११ योग होय तेनी विगत

४ मनना योग १ वैक्रियकाय योग
४ वचनना योग १ वैक्रियमिश्रकाययोग
१ कार्मणकाय योग
ए रीते ११ योग होय
ज्योतिषीना दंडकनेविषें ११ योग होय तेनी विगत
४ मनना योग ४ वचनना योग ३ कायना योग
वैमानिक देवताना दंडकनेविषें ११ योग होय तेनी विगत
४ मनना योग ४ वचनना योग ३ कायना योग
ए रीतें चोवीस दंडकनेविषें योगद्वार छे.

इति तेरमुं योगद्वार संपूर्ण

अथ चौदमुं उपयोगद्वार लिख्यते.

उपयोगद्वारना बार भेद छे तेनी विगत

५ प्रथम ज्ञानना भेद पांच छे तेनी विगत

१ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधीज्ञान

४ मनःपर्यवज्ञान ५ केवलज्ञान

ए रीते ज्ञानना ५ भेद कह्या

३ अज्ञानना त्रण भेद होय तेनी विगत

१ मतिअज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ विभंगअज्ञान

४ दर्षनना चार भेद छे तेनी विगत

१ चक्षु दर्शन २ अचक्षु दर्षन ३ अवधी दर्शन

४ केवल दर्शन

ए रीतें चार दर्शनना भेद जाणवा.

ए रीतें बार उपयोगना नांम कह्या पण चोवीस दंडक माहेथी एकएक दंडकनेविषें उपयोग कहे छे तेनी विगत.

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे ९ उपयोग होय तेनी विगत

३ पेलाज्ञान ३ अज्ञान ३ पेलादर्शन

ए रीते समुच्चय नारकीनेविषे उपयोग ९ थया तेनी विगत

१ समकित दृष्टीमे उपयोग ६ होय

३ पेलाज्ञान ३ पेलादर्शन

२ मिथ्या दृष्टीवालाने उपयोग ६ होय

३ अज्ञान ३ पेला दर्शन

दश प्रकारे दश भवनपतिना दंडकनेविषें उपयोग ९ होय तेनी विगत

३ पेला ज्ञान ३ अज्ञान ३ पेला दर्शन

पृथ्वीकायना दंडकनेविषे उपयोग ३ होय तेनी विगत

१ मती अज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ अचक्षु दर्शन

अप्पकायना दंडकनेविषें उपयोग ३ होय तेनी विगत

१ मतिअज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ अचक्षुदर्शन

तेउकायना दंडकनेविषें उपयोग ३ होय तेनी विगत

१ मतिअज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ अचक्षुदर्शन

वाउकायना दंडकनेविषें उपयोग ३ होय तेनी विगत

१ मतिअज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ अचक्षुदर्शन

वनस्पतीकायना दंडकनेविषें उपयोग ३ होय तेनी विगत

१ मतिअज्ञान २ श्रुतअज्ञान ३ अचक्षुदर्शन

बेंद्रीना दंडकनेविशेष एकने पांच उपयोग होय ते अपर्याप्ता लगे अने पर्याप्ताने ३ उपयोग होय तेनी विगत

२ ज्ञान पेला २ अज्ञान पेला १ अचक्षुदर्शन

तेंद्रीना दंडकनेविशेष एकने पांच उपयोग होय ते

अपर्यासा लगे अने पर्यासाने ३ उपयोग होय तेनी विगत.

२ ज्ञान पेला २ अज्ञान पेला १ अचक्षुदर्शन

चोरद्रीना दंडकनेविशेष एकने ६ उपयोग अपर्यासा- लगे होय पछे उपरांत पर्यासाने उपयोग ४ होय ते नी विगत

२ ज्ञान पेला २ अज्ञान पेला २ दर्शन पेला

तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे उपयोगना २ भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीविशेष एकने अपर्यासालगे ६ उपयोग होय अने उपरांत पर्यासाने ४ उपयोग हो- य तेनी विगत

२ ज्ञान पेला २ अज्ञान पेला २ दर्शन पेला

२ गर्भज तिर्यंच पचेंद्रीने उपयोग ९ होय प्रथम नार- कीनी परें

मनुष्यपंचेंद्रीना दंडकनेविषें उपयोगना बे भेद छे

१ समुर्छीम मनुष्यने उपयोग ४ होय तेनी विगत

२ अज्ञानपेला २ दर्शनपेला

२ गर्भज मनुष्यने उपयोग १२ होय तेनी विगत उपर लख्या प्रमाणें

वाणवितरना दंडकनेविषें उपयोग ९ होय ते प्रथम नारकीनी परें

ज्योतीषीना दंडकनेविषें उपयोग ९ होय ते समुचयें प्रथम नारकीनी परे

वैमानीक देवताना दंडकनी विगत

१ बार देवलोक अने नवग्रैवेयकना देवताने उपयोग ९ समुच्चयें होय ते प्रथम नारकीनी परें

२ पांच अनुत्तर विमानना देवताने उपयोग ६ होय अने एनी सम्यकदृष्टी छे मिथ्यादृष्टी नथी ते माटे ३ ज्ञान पेला ३ दर्शन पेला

ए रीत चोवीस दंडकनेविषे उपयोगद्वार कह्या.

इति श्री चौदमुं उपयोगद्वार संपूर्ण.

अथ पन्नरमुं उपजवानुं द्वार लिख्यते.

चोवीस दंडकमाहेथी एकएक दंडकने उपजवा द्वार छे एटले एक समयमा आश्रीने केटला जीव उपजे कया दंडकनेविषे तेनो खुलासो छे

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे एक समयमां जघन्यथी एक वे अथवा त्रण जीव उपजे अने उत्कृष्टा संख्याता अने असख्याता जीव उपजे

ए रीते प्रथम दंडक कह्या.

दश प्रकारना भवनपतीना दश दंडकना देवता १ समयमां जघन्यथी एक वे त्रण जीव उपजे अने उत्कृष्टा संख्याता अथवा असंख्याता उपजे

पृथ्वीकायना दंडकनेविषें एक समयमां असंख्याता जीव उपजे

अप्पकायना दंडकनेविषे एक समयमा असंख्याता जीव उपजे

तेऊकायना दंडकनेविषे एक समयमां असंख्याता जीव उपजे

वाऊकायना दंडकनेविषे एक समयमां असंख्याता जीव उपजे

वनस्पतीकायना दंडकनेविषे एक समयमा अनंत जीव उपजे

बेंद्रीना दंडकनेविषे एक समयमां जघन्यथकी एक बे त्रण जीव उपजे अने उत्कृष्टा संख्याता अने असंख्याता जीव उपजे

तेंद्रीना दंडकनेविषे एक समयमां जघन्यथी एक बे त्रण जीव उपजे उत्कृष्टा संख्याता अने असंख्याता जीव उपजे

चोरंद्रीना दंडकनेविषे एक समयमां जघन्यथी एक बे त्रण जीव उपजे उत्कृष्टा संख्याता अने असंख्याता जीव उपजे

गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकनेविषे एक समयमा एक बे त्रण जीव उपजे उत्कृष्टा संख्याता अने असंख्याता जीव उपजे

मनुष्य दंडकनेविषे एक समयमां उपजवानी विगत

समुर्छीम मनुष्य असंख्याता उपजे ए मिथ्या दृष्टी जीव जाणवा

२ गर्भज मनुष्य जघन्यथी एक बे त्रण उपजे ने उत्कृष्टा असंख्याता उपजे

वाणविंतरना दंडकनेविषे एक समयमां जघन्यथी एक बे त्रण उपजे अने उत्कृष्ट संख्याता अने असख्याता उपजे

ज्योतिषीना दंडकनेविषे एक समयमां जघन्यथी एक बे त्रण उपजे पण उत्कृष्टा संख्याता अने असंख्याता उपजे

वैमानिकना दंडकनेविषे एक समयमां जघन्यथी एक बे त्रण उपजे पण उत्कृष्टा उपजवानी विगत.

१ पेला देवलोकथी आठमां देवलोकसुधी संख्याता अने असख्याता उपजे

२ नवमां देवलोकथी सर्वार्थसिद्ध लगे संख्याता जीव उपजे ते मनुष्यमाथी आवे अने मनुष्यमां जाय.

ए रीतें चोवीस दंडकनेविषे उपजवानु एक समयने आश्रीने समुच्चये विवरीने कह्या छे

इति उपजवानुं पन्नरमुं द्वार संपूर्ण

अथ सोळमुं चवनद्वार लिख्यते

सोळमुं चवनद्वार ते प्रथम पन्नरमुं द्वार उपजवानुं कह्यु तेज प्रमाणे चोवीस दंडकमाहे एक एक दं-

डकनेविषे एक समयमां जघन्यथकी अथवा उत्कृष्टो- चववानो समुच्चय केटला जीव चवे ते प्रथम उपजवा- ना द्वारनी परे प्रतिपक्ष जाणवू जे दंडकनेविषे जेट- ला उपज एक समये ते दंडकनेविषे तेटला एक सम- यमा चवे

ए रीतें चोवीस दंडकनेविषे जीवोनुं उपजवानी परे चववानु द्वार जाणवुं

तेथी करीने एक एक दंडकनो खुलासो करीने लख्यो नथी माटे पन्नरमा उपजवाना द्वारनी परे सोलमुं चवनद्वार जाणवुं

इति सोलमुं चवनद्वार संपूर्ण

अथ सतरमुं आयुद्वार लिख्यते.

हवे चोवीस दंडकमाहेथी एक एक दंडकनेविषे आ- युद्वार विवरीने कहीए छीए तेनी विगत

हवे प्रथम सात नारकीना दंडकनुं आउखुं विवरीने लखिए छीए

सात नारकीना नाम	जघन्यआयु	उत्कृष्टुंआयु
१ रत्नप्रभा	१० हजार वर्ष	१ सागरोपम
२ शर्कप्रभा	१ सागरोपम	३ सागरोपम
३ वालुकप्रभा	३ सागरोपम	७ सागरोपम

४ पंकप्रभा	७ सागरोपम	१० सागरोपम
५ धूमप्रभा	१० सागरोपम	१७ सागरोपम
६ तमःप्रभा	१७ सागरोपम	२२ सागरोपम
७ तमस्तमः	२२ सागरोपम	३३ सागरोपम

ए रीते सात नारकीना दंडकनु आऊखु विवरीने कह्युं.

सात नरकनेविषे ४९ पाथडा छे ते माहेथी एक एक नरकनेविषे जुदा जुदा पाथडा छे तेमांथी एक एक पाथडानेविषे नरकना जीवोनु जघन्य तथा उत्कृष्ट आऊखानुं यंत्र लखीए छीए

१ प्रथम रत्नप्रभा नरकनेविषे १३ पाथडा छे तेना आउखानुं यंत्र लिख्यते

पाथडा	जघन्यथी सागरोपम	भाग दसीया
१	वर्ष	१० हजार
२	वर्ष	१ लाख
३	वर्ष	९ लाख
४	वर्ष	९० लाख
५	०	१
६	०	२

७	०	३
८	०	४
९	०	५
१०	०	६
११	०	७
१२	०	८
१३	०	९

उत्कृष्टो सागरोपम	भाग दर्सीया	एक सागरना भाग
वर्ष	९ लाख	०
वर्ष	९० लाख	०
वर्ष	१ कोटी	०
०	१	१०
०	२	१०
०	३	१०

०	४	१०
०	५	१०
०	६	१०
०	७	१०
०	८	१०
०	९	१०
१	०	१०

२ बीजी शर्कराप्रभा नरकनेविषे ११ पाथडा छे तेना आऊखानु यंत्र लिख्यते

पाथडा	जघन्यथी सागरोपम	उपरे भाग
१	१	०
२	१	२
३	१	४
४	१	६
५	१	८

६	१	१०
७	२	१
८	२	३
९	२	५
१०	२	७
११	२	९

उत्कृष्ट सागरोपम	उपरे भाग	एक सागरना भाग
१	२	११
१	४	११
१	६	११
१	८	११
१	१०	११
२	१	११
२	३	११

२	५	११
२	७	११
२	९	११
३	०	११

२ त्रीजी वालुकाप्रभा नरकनेविषे ९ पाथडा छे तेना आउखानुं यंत्र लिख्यते

पाथडा	जघन्यथी सागरोपम	भाग
१	३	०
२	३	४
३	३	८
४	४	३
५	४	७
६	५	२
७	५	६

८	६	१
९	. ६	५

उत्कृष्ट सागरोपम	भाग	एक सागरोपमना भाग
३	४	१
३	८	१
४	३	१
४	७	१
५	२	१
५	६	१
६	१	१
६	५	१
७	०	१

५ शेथी धूमप्रभा नरकने विषे ७ पाथडा छे तेना आउखानु यन्त्र लिख्या

पाथडा	जघन्यआयु सागरोपम	भाग
१	७	०
२	७	३
३	७	६
४	८	२
५	८	५
६	९	१
७	९	४

उत्कृष्टआयु सागरोपम	भाग	एक सागरना भाग करवा
७	३	७
७	६	७
८	२	७
८	५	७

९	१	७
९	४	७
१०	०	७

५ पांचमी धूमप्रभा नरकनेविषे ५ पाथडा छे तेनुं आऊखानुं यन्त्र लिख्यते

पाथडा	जघन्यआऊखु सागरोपम	भाग
१	१०	०
२	११	२
३	१२	४
४	१४	१
५	१५	३

उत्कृष्टआ-उखु साग रोपम	भाग	एक सागरोपमना भाग करवा
११	२	५

१२	४	६
१४	१	६
१५	३	६
१७	०	५

६ छठी तम.प्रभा नरकनेविषे पाथडा ३ छे तेनुं. यंत्र लिख्यते

पाथडा	जघन्यथी सागरोपम	भाग
१	१७	०
२	१८	२
३	२०	१

उत्कृष्ट सागरोपम	भाग	एक सागरना भाग
१८	२	३
२०	१	३
२२	०	३

७ सातमी तमस्तमःप्रभा नरकनेविषे पाथडो १ छे तेनुं यंत्र लिख्यते

पाथडा	जघन्यआऊखुं सागरोपम	उत्कृष्टआउखुं सागरोपम
१	२२	३३

ए रीते सात नरकनेविषे पाथडा ४९ तेनुं आउखुं जघन्य तथा उत्कृष्ट विवरीने कह्यूं

हवे दश प्रकारें भवनपतिना दंडकनुं आयु कहिए छीए

१ प्रथम असुर कुमार नीकायना वे इंद्री छे तेनी विगत

१ दक्षिण दिशानो अधिपति चमरेंद्रनी निकायनु आउखु जघन्यथकी १० हजार वर्ष अने उत्कृष्ट एक सागरोपमनुं जाणवो तथा ते चमरेंद्रनी निकायनी देवीनु आऊखुं जघन्यथकी दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट ३॥ साडात्रण पल्योपमनुं जाणवू.

उत्तर दिशानुं अधिपतीवल इंद्रनी निकायनुं आऊखु जंघन्यथकी दस हजार वर्षनुं अने उत्कृष्ट एक सागरोपम झाझेरु जाणवो तथा ते वल इंद्रनी निकायनी देवीनुं आऊनुं जघन्य १० हजार वर्षने अने उत्कृष्ट ४॥ साडाचार पल्योपमनुं जाणवुं.

१० बाकी नागकुमारथी करीने स्तनितकुमार सुधी नव निकायनेविषे बे बे इंद्र छे तेना आयुनी विगत.

१ दक्षीण दिशाना नव निकायना इद्रनुं आयू जघन्य १० हजार वर्ष अने उत्कृष्ट १॥ दोढ पल्योपमनु जाणवूं अने ते दक्षिण दिशाना नव निकायना इन्द्रनी देविनुं आउखु जघन्ययकी १० हजार वर्ष अने उत्कृष्ट ०॥ अर्ध पल्योपमनुं जाणवू

२ उत्तर दिशाना नव निकायना इंद्रनूं आयू जघन्यथी १० हजार वर्ष अने उत्कृष्ट २ पल्योपमे देशे उणो अने ते उत्तर दिशाना नव निकायना इंद्रनी देवीनुं आयू जघन्यथकी १० हजार वर्षनुं अने उत्कृष्ट १ पल्योपम देशे उणो जाणवूं.

ए रीत नव निकायना देवतानुं आउखु कह्युं.

ए रीत दश प्रकारे भवनपतिना दश दंडकनेविषे आउखुं कह्यु.

पृथ्वीकायना दंडकनु आउखुं जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट २२ हजार वर्षनु ते पृथ्वी छ प्रकारनी छे तेनुं आउखुं जुदु जुदु लखी देखाडे छे.

१ सुनानुं १ हजार वर्ष
२ सुधानुं १२ हजार वर्ष
३ वालूआनुं १४ हजार वर्ष
४ मणसलनुं १६ हजार वर्ष
५ शर्करानुं १८ हजार वर्ष

६ षरपुढवीनु २२ हजार वर्ष

ए रीत छ प्रकारे पृथ्वीनुं उत्कृष्ट आऊखु कह्यूं

अप्पकायना दंडकनुं आऊखु जघन्य अंतरमुहूर्त अने उत्कृष्ट ७ हजार वर्षनुं जाणवु

तेऊकायना दंडकनुं आऊखु जघन्य अंतरमुंहूर्त अने उत्कृष्ट ३ अहोरात्रीनुं जाणवुं

वाऊकायना दंडकनुं आऊखुं जघन्य अतरमुहूर्त अने उत्कृष्ट ३ हजार वर्ष

वनस्पतीकायनुं आऊखुं जघन्य अंतरमुंहूर्त अने उत्कृष्ट १० हजार वर्ष

बेंद्रीनु आऊखुं जघन्य अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्ट १२ वर्षनु

तेंद्रीनुं आऊखु जघन्य अंतरमुंहूर्त अने उत्कृष्ट ४९ दिवसनु

चोरेंद्रीनुं आऊखुं जघन्य अंतरमुंहूर्त अने उत्कृष्ट छ मासनु

तिर्यंचपंचेंद्रीनुं आऊखुं जघन्य अंतरमुंहूर्त अने उत्कृष्ट ३ पल्योपमनु ते तिर्यंचपंचेद्रीना २ भेद छे एक गर्भज अने बीजो समुर्छीम तेनी विगत

१ एक गर्भज तिर्यंचपंचेंद्रीना ५ भेद छे तेना आऊखा उत्कृष्टनी विगत

१ जलचरनुं आयू पुरव कोडी

२ खेचरनु अयू पल्यापमनु असंख्यातमो भाग

३ थलचरनुं ३ पल्योपम

४ उरपरी सर्पनुं पूरव कोडी

५ भुजपरी सर्पनु पूरव कोडी

२ बीजा समुर्छीम तिर्यंचपंचेंद्रीनुं आऊखुं उत्कष्ट कह्यूं तेनी विगत.

१ जलचरनु पूरव कोडी

२ थलचरनुं ८४ हजार वर्ष

३ खेचरनुं ७२ हजार वर्ष

४ उपरीनुं ५३ हजार वर्ष

५ भुजपरीनुं ४२ हजार वर्ष

ए रीते तिर्यंचपंचेंद्रीनु आऊखुं उत्कष्ट विवरीने कह्युं

मनुष्य दंडकनेविषे समुर्छिम मनुष्यनुं जघन्य अने उत्कष्ट अंतर मुहूर्तनुं जाणवू अने बीजा गर्भज मनुष्यनुं आऊखुं जघन्य अंतर मुहूर्त अने उत्कष्ट त्रण पल्योपमनु आऊखुं जाणवूं ते गर्भज मनुष्यना ३ भेद छे

१ जुगलीआ क्षेत्रना मनुष्य

२ महाविदेह क्षेत्रना मनुष्य

३ भरत क्षेत्रना मनुष्य तथा ऐरवत क्षेत्रना मनुष्य

ए रीते त्रण भेद कह्या तेनी विगत.

१ पेहला जुगलीया मनुष्यना ४ भेद छे तेनी विगत.

१ पांच देव कुरुक्षेत्रना मनुष्य अने पांच उत्तर कुरु क्षेत्रना मनुष्यनुं जघन्य आयु त्रण पल्योपम देशे उणो अने उत्कृष्ट ३ पल्योपमनुं जाणवु

२ पांचहरी वर्ष क्षेत्रना मनुष्य अने पांच रम्यक क्षत्रना मनुष्यनुं जघन्य आऊखुं बे पल्योपम देशे उणो अने उत्कृष्ट आउखुं बे पल्योपमनु जाणवुं

३ पांच हेमवंत क्षेत्र अने पांच ऐरण्यवत क्षेत्रना मनुष्यनुं आयु जघन्य एक पल्योपम देशे उणो अने उत्कृष्ट पल्योपम एकनुं आउखुं जाणवु

४ छपन्न अंतरद्विपना मनुष्यनुं आउखुं पल्योपमनो असंख्यातमो भाग होय.

ए रीते जुगलीआ क्षेत्रना चार प्रकार कह्या.

२ पांच महा विदेह क्षेत्रना मनुष्यनुं आउखु जघन्य अंतरमुहूर्त अने उत्कृष्ट पुरव कोडीनुं जाणवूं

३ पांच भरत क्षेत्र अनें पांच ऐरावत क्षेत्रनुं काल वर्तमान सरखो सरखे जाणवो ते ए बे क्षेत्र मध्यें आउखुं सरखुं छे ते ए बे क्षेत्रमां मनुष्य भरत आपणने छे तेथी भरत क्षेत्रना छ आर ना मनुष्यनो आऊखुं जघन्य अतर मुहूर्त अने उत्कृष्ट विवरीने संक्षेपे लखीए छिए.

१ पेलो आरो चार कोडा कोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यने त्रण पल्यापमनुं आऊखुं उत्कृष्ट होय

२ बीजो आरो त्रण कोडा कोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यनुं बे पल्योपमनुं आऊखुं उत्कृष्ट होय

३ त्रीजो आरो बे कोडा कोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यनुं एक पल्यापमनु आऊखु उत्कृष्ट होय

४ चोथो आरो एक कोडा कोडी सागरोपमनो तेमांथी बतालीस हजार वर्ष ओछु ते आरामां मनुष्यनुं आउखुं पुर्व कोडीनुं उत्कृष्ट कह्युं

५ पांचमुं आरो एकवीस हजार वर्षनु तेमां मनुष्यनुं आउखुं सो वर्ष झाझेरु उत्कृष्ट ते उतरते वर्ष २० नुं

६ छठो आरो एकवीस हजार वर्षनु तेमां मनुष्यनु आउखुं २० वर्षनो उत्कृष्ट ते उतरते वर्ष १६ नुं

ए रीते भरतक्षेत्रना मनुष्यनु आउखुं छ आरा प्रमाणे जाणवुं

अने तेजप्रमाणे ऐरवत क्षेत्रना मनुष्यनुं आऊखुं सरखुं जाणवुं

ए रीते मनुष्य दंडकनुं आयु उत्कृष्टुं कह्युं

वाणविंतरना दंडकनुं आउखुं जघन्य १० हजार वर्ष

अने उत्कृष्ट एक पल्योगमनुं जाणवुं अने तेनी वाण वितरनी देवीनूं आऊखुं जघन्य १० हजार वर्षनुं अने उत्कृष्ट अर्धे पल्योपमनुं जाणवुं

ज्योतीषीनुं आउखुं जघन्य एक पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट एक पल्योपम अने एक लाख वर्षनुं कह्यूं पण जोतीषीना पांच भेद छे. तेना आऊखानी विगत

१ प्रथम चंद्रमानुं आऊखुं जघन्य एक पल्योपमनो चोथा भाग अने उत्कृष्ट एक पल्योपम अने एक लाख वर्षनुं जाणवू अने चंद्रमानी देवीनुं आउखुं जघन्य पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्ट पल्योमपनो अर्धो भाग अने उपरे ५० हजार वर्षनुं

२ सुरजनु आऊखुं जघन्य एक पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्ट एक पल्योपम अने एक हजार वर्ष उपरे जाणवूं अने सूरजनी देवीनुं आऊखुं जघन्य पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्ट पल्योपमनो अर्धो भाग अने ५०० वर्ष उपरे जाणवूं

३ ग्रहनुं आऊखुं जघन्य पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्ट एक पल्योपमनो जाणवूं. अने ग्रहनी देवीनुं आउखुं जघन्य पल्योमनो चोथो भाग अन उत्कृष्ट पल्योपमनो आर्धो भाग जाणवूं

४ नक्षत्रनुं आयु जघन्य पल्योपमनुं चोथो भाग अने उत्कृष्ट पल्योपमनुं अर्धो भाग जाणवू अने नक्षत्रनी देवीनु आऊखु जघन्य पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट पल्योपमनो चोथो भाग जाणवुं

५ तारानुं आऊखुं जघन्य पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट पल्योपमनो चोथो भाग जाणवूं. अने तारानी देवीनुं आऊखुं जघन्यथी पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट पल्योपमनो आठमो भाग झाझेरो जाणवुं

ए रीते पांच ज्योतिषी देवतानुं आऊखुं कह्युं.

वैमानिक देवतानुं आऊखुं जघन्य एक पल्योपम अने उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनुं जाणवूं पण तेमां २ भेद छे तेनी विगत

१ प्रथम बार देवलोकनुं आऊखुं जघन्य उत्कृष्ट कहे छे

देवलोकना नांम	जघन्यआयु	उत्कृष्टआयु
१ सुधर्मा	१ पल्योपम	२ सागरोपम
२ इशान	१ पल्योपम झाझेरो	२ सागरोपम झाझेरो
३ सनत्कुमार	२ सागरोपम	७ सागरोपम
४ महेंद्र	२ सागरोपम झा०	७ सागरोपम झाझेरो
५ ब्रह्म	७ सागरोपम	१० सागरोपम
६ लांतक	१० सागरोपम	१४ सागरोपम
७ महाशुक्र	१४ सागरोपम	१७ सागरोपम

८ सहस्रार	१७ सागरोपम	१८ सागरोपम
९ आनत	१८ सागरोपम	१९ सागरोपम
१० प्राणत	१९ सागरोपम	२० सागरोपम
११ आरण	२० सागरोपम	२१ सागरोपम
१२ अच्युत	२१ सागरोपम	२२ सागरोपम

ए रीतें बार देवलोकना देवतानुं आउखुं कह्युं

२ हवे बीजा नवग्रैवेयकनुं आऊखु कहीये छीये

नवग्रैवेयक नांम	जघन्यआयु	उत्कृष्टआयु
१ सुदर्शन	२२ सागरोपम	२३ सागरोपम
२ सुप्रतिबंध	२३ सागरोपम	२४ सागरोपम
३ मनोरम	२४ सागरोपम	२५ सागरोपम
४ सर्वभद्र	२५ सागरोपम	२६ सागरोपम
५ विशाल	२६ सागरोपम	२७ सागरोपम
६ सुमनस	२७ सागरोपम	२८ सागरोपम
७ सुमणूस	२८ सागरोपम	२९ सागरोपम
८ प्रियंकर	२९ सागरोपम	३० सागरोपम
९ आदित्य	३० सागरोपम	३१ सागरोपम

ए रीते नवग्रैवेयकना देवतानुं आऊखुं विवरीने कह्युं.

३ त्रीजा पांच अनुत्तर वैमानिक देवतानुं आऊखुं कहीये छिए.

अनुत्तरविमानना नांम	जघन्यआयु	उत्कृष्टआयु
१ विजय	३१ सागरोपम	३३ सागरोपम
२ विजयंत	३१ सागरोपम	३३ सागरोपम

३ जयंत	३१ सागरोपम	३३ सागरोपम
४ अपराजित	३१ सागरोपम	३३ सागरोपम
५ सर्वार्थसिद्ध	३३ सागरोपम	३३ सागरोपम

ए रीते पांच अनुत्तर विमानना देवतानु आयु कहयुं. हवे वैमानिक देवताना ६२ प्रतर छे. तेनांहि प्रतरनु जुदुजुदुं आऊखुं उत्कृष्ट तेनु यंत्र विवरीने लखीए छीए. १ सुधर्मा अने इशान देवलोकनेविषे १३ तेर प्रतर छे तेनुं आऊखानुं यंत्र तेमां इशान साधिक वाच्य ते सागरोपम तथा सागरोपमनु तेराऊ भाग कहे छे.

प्रतर	सागरोपम	भाग	छेदांक
१	०	२	१३
२	०	४	१३
३	०	६	१३
४	०	८	१३
५	०	१०	१३
६	०	१२	१३
७	१	१	१३
८	१	३	१३

९	१	५	१३
१०	१	७	१३
११	१	९	१३
१२	१	११	१३
१३	२	०	१३

सनत्कुमार अने माहेंद्र देवलोकनो प्रतर १२ छे तेना आऊखानुं यंत्र. तेमां माहेंद्र साधिकं वाच्य

प्रतर	सागरोपम	भाग	छेदांक
१	२	५	१२
२	२	१०	१२
३	३	३	१२
४	३	८	१२
५	४	१	१२
६	४	६	१२
७	४	११	१२

८	५	४	१२
९	५	९	१२
१०	६	२	१२
११	६	७	१२
१२	७	०	१२

ब्रह्मकल्पे ६ प्रतर छे तेना आउखानुं यंत्र

प्रतर	सागरोपम	भाग	छेदांक
१	७	३	६
२	८	०	६
३	८	३	६
४	९	०	६
५	९	३	६
६	१०	०	६

लंतके ५ प्रतर छे तेनुं उत्कृष्ट आउखानुं यंत्र

प्रतर	सागरोपम	भाग	छेदांक
१	१०	४	५
२	११	३	५
३	१२	२	५
४	१३	१	५
५	१४	०	५

महाशुक्रे ४ प्रतर तेना आऊखानुं यंत्र.

प्रतर	सागरोपम	भाग	छेदांक
१	१४	३	४
२	१५	२	४
३	१६	१	४
४	१७	०	४

सहस्रार देवलोकनां ४ प्रतरना आऊखानुं यंत्र.

प्रतर	सागरोपम	भाग	छेदांक
१	१७	१	४

२	१७	२	४
३	१७	३	४
४	१८	०	४

आनत अने प्राणत ए बे देवलोकना प्रतर ४ छे तेनुं उत्कृष्ट आयुनु यंत्र

प्रतर	सागरोपम		भाग	छेदांक
१	१८	१९	१	४
२	१८	१९	२	४
३	१८	१९	३	४
४	१९	२०	०	४

आरण अने अच्युत ए बे देवलोकना प्रतर ४ छे तेनु उत्कृष्ट आयुनुं यंत्र

प्रतर	सागरोपम		भाग	छेदांक
१	२०	२१	१	४
२	२०	२१	२	४

३	२०	२१	२	४
४	२१	२२	०	४

अथ नवग्रैवेयकना प्रतर ९ छे तेनुं उत्कृष्ट आयुनुं यंत्र

प्रतर	सागरोपम	
१	२१	२३
२	२३	२४
३	२४	२५
४	२५	२६
५	२६	२७
६	२७	२८
७	२८	२९
८	२९	३०
९	३०	३१

अनुत्तरे प्रतर १ नुं उत्कृष्ट आयुनुं यंत्र

प्रतर	सागरोपम	
१	३१	३३

ए रीते वैमानिक देवताना ६२ प्रतरना आऊखानो मान विवरीने कह्यो.

हवे वैमानिक देवतानी देवीनुं आऊखु लखीए छीए. तेनी विगत.

१ पेला देवलोकनी देवी प्रग्रहीत देवीनुं आऊखुं जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट ७ पल्योपमनुं जाणवुं अप्रग्रहीत देवीनुं आऊखुं जघन्य एक पल्योपम अने उत्कृष्ट ५० पल्योपमनुं जाणवूं.

२ बीजा देवलोकनी प्रग्रहीत देवीनुं आऊखु जघन्य १ पल्योपम झाझेरु अने उत्कृष्ट ९ पल्योपमनु जाणवुं अने अप्रग्रहीत देवीनुं आउखुं जघन्य १ पल्योपम झाझेरु अने उत्कृष्ट ५५ पल्योपमनुं जाणवुं

३ कृष्णराजीनुं लोकातीत देवतानुं आऊखुं सागरोपम ८ नुं जाणवुं

४ कल्मष देवता ते सुधर्मा इशान देवलोकने नीचे तेनुं आऊखुं जघन्य एक पल्योपम अने उत्कृष्ट ३ पल्योपमनुं जाणवुं

५ सनत्कुमार अने माहेंद्र देवलोक नीचे कल्मष आ देवतानुं आऊखुं जघन्य उत्कृष्ट ३ सागरोपमनु जाणवुं.

६ लांतक देवलोकने नीचे तेहनुं आऊखुं जघन्य उत्कृष्ट १३ सागरोपमनुं जाणवुं.

ए रीतें आयुद्वार विचार विस्तारीने कह्यो छे.

इति सत्तरमुं आयुद्वार संपूर्ण

अथ अढारमुं पर्याप्तीनुं द्वार लिख्यते

अढारमुं पर्याप्तिनुं द्वार तेना छ भेद छे तेनी विगत

१ आहार पर्याप्ती ४ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ती

२ शरीर पर्याप्ती ५ भाषा पर्याप्ती

३ इंद्री पर्याप्ती ६ मनःपर्याप्ती

ए रीते पर्याप्ती छ कही तेमांथी त्रण पर्याप्ती बांध्या-विना कांई जीव मरे नहीं. उपरांत जे जीवनी जेटली पर्याप्ती होय तेटली पूरी बांधीने मरेतो पर्याप्तो कहीए. अने जेनी जेटली पर्याप्ती छे ते पर्याप्ती पूरी बांध्याविना जीव मरे तो ते जीव अपर्याप्तो कहीए ते चोवीस दंडकनेविषे एकेक दंडकने पर्याप्ती विवरीने कहीए छीए तेनी विगत.

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे पर्याप्ती ६ होय पण भाषा पर्याप्ती अने मनःपर्याप्ती ए बे साथे हाय तेथी पांच पर्याप्ती पण कहिये

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकनेविषे पर्याप्ती ६ होय पण भाषा पर्याप्ती अने मनःपर्याप्ती साथे होय तेथी पांच पण कहिये.

पृथ्वीकायना दंडकनेविषे पर्याप्ती ४ होय तेनी विगत.

१ आहार पर्याप्ती ३ इंद्री पर्याप्ती

२ शरीर पर्याप्ती ४ श्वासोच्छ्वास

अप्पकायना दंडकनेविषे पर्याप्ती पेली ४ होय

तेऊकायना दंडकनेविषे पर्याप्ती पेली ४ होय
वाउकायना दंडकनेविषे पर्याप्ती पेली ४ होय
वनस्पतीकायना दंडकनेविषे पर्याप्ती पेली ४ होय
बेंद्रीना दंडकने पर्याप्ती पेली पांच होय मनःपर्याप्ती वर्जीने
तेंद्रीना दंडकनेविषे पेली पांच पर्याप्ती होय
चोरेंद्रीना दंडकनाविषे पेली पांच पर्याप्ती होय
तिर्यंच पचेंद्रीना दंडकनेविषे पर्याप्तीना २ भेद छे
१ समुर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे पेली ५ पर्याप्ती होय
२ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीनेविषे छ पर्याप्ती होय
मनुष्यना दंडकनेविषे पर्याप्तीना २ भेद छे.
१ समुर्छिम मनुष्यनेविषे पेली ४ पर्याप्ती होय
२ गर्भज मनुष्यनेविषे ६ पर्याप्ती होय
वाणवितरणा दंडकनेविषे पर्याप्ती ६ होय पण भाषापर्याप्ती अने मनःपर्याप्ती साथे उपजे एटले पांच पर्याप्ती पण कहिये
ज्योतीषीना दंडकनेविषे ६ पर्याप्ती होय पण भाषा अने मन साथे उपजे तेथी पांच पर्याप्ती कहीये.
वैमानिक देवताना दंडकनेविषे पर्याप्ती ६ होय पण भाषा अने मनसाथे उपजे तेथी पांच पर्याप्ती कही
ए रीते चोवीस दंडकनेविषे पर्याप्तीद्वार कह्युं.

इति श्री अढारमुं पर्याप्तीद्वार संपूर्ण.

अथ ओगणीसमुं दिगाहारद्वार लिख्यते.

हवे समस्त ससारी जीवने छ दिशीनो आहार होय तेनी विगत

१ अधोदिशी २ उर्ध्वदिशी ३ पूर्वदिशी ४ पश्चीमादिशी ५ दक्षिणदिशी ६ उत्तरदिशी

ए रीते छ दिशीनो आहार कह्युं ते चोवीस दंडकने विषे एक एक दंडकवाला केटली दिशीनो आहार ले तेनी विगत.

प्रथम सात नारकीना दंडकवाला छ दिशीनो आहार ले

दश प्रकारना भवनपतीना दश दंडकवाला ६ दिशीनो आहार ले

पृथ्वीकायना दंडकवाला ३ अथवा ४ थी ५ अने ६ दिशीनो आहार ले

अप्पकायना दंडकवाला ३ अथवा ४ थी ५ अने ६ दिशीनो आहार ले

तेउकायना दंडकवाला ३ अथवा ४ थी ५ अने ६ दिशीनो आहार ले

वाउकायना दंडकवाला ३ अथवा ४ थी ५ अने ६ दिशीनो आहार ले

वनस्पतिकायना दंडकवाला ३ अथवा ४ थी ५ अने ६ दिशीनो आहार ले

बेंद्रीना दंडकवाला ६ दिशीनो आहार ले
तेंद्रीना दंडकवाला ६ दिशीनो आहार ले
चउरेंद्रीना दंडकवाला ६ दिशीनो आहार ले
तिर्यंचपंचेंद्रीना दंडकवाला ६ दिशीनो आहार ले
मनुष्यपंचेंद्रीना दंडकवाला ६ दिशीनो अहार ले
वाणविंतरना दंडकवाला ६ दिशीनो अहार ले
ज्योतीषी देवताना दंडकवाला ६ दिशीनो आहार ले
वैमानिक देवताना दंडकवाला ६ दिशीनो आहार ले
ए रीते चोवीस दंडकवाला छ दिशीनो आव्यो आहार ले तेने दिगाहार कहीये
ए रीतें ओगणीसमुं आहारद्वार कह्युं

इति श्री ओगणीसमु दिगाहारद्वार संपूर्ण

अथ वीसमुं संज्ञाद्वार लिख्यते.

संज्ञा ३ त्रण प्रकारें कही छे तेनी विगत
१ दीर्घकालिकी संज्ञा २ हेत्वोपदेशीकी संज्ञा
३ दृष्टीवादोपदेशिकी संज्ञा
ए रीते संज्ञाना ३ भेद कह्या
तेना लक्षण विवरीने कहीए छीए.

१ दीर्घकालिकी संज्ञा तेनो अर्थ ए छे जे तीहां अतीत अनागतनुं चेतववुं एम उद्यम करीने एम कर्युं मए चेतवबु तेने दीर्घकालिकी संज्ञा कहीए

२ बीजी हेत्वोपदेशिकीसंज्ञा एटले समजाना लागे जे इछाये आवे भूख लागे आहार थाय भमे तेने हेत्वोप देशिकीसज्ञा कहिये

३ त्रीजो दृष्टीवादोपदेशिकी संज्ञा एटले पूर्वानाने अनुसरी मंत्र एम गणीये एम साधिये एम थशे एवी उंडी विचारणा करिये एवी चेतवणा करिये तेने दृष्टी वादोपदेशिकी संज्ञा कहिये.

ए रीते त्रण संज्ञानो अर्थ कह्यो.

चोवीस दंडकनेविषे एक एक दंडकनी संज्ञा कहिये छिये

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे पेली दीर्घ कालीकी संज्ञा होय

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकनेविषे १ दीर्घ कालीकी संज्ञा होय

पृथ्वीकायना दंडकवालाने संज्ञा न होय

अप्पकायना दंडकवालो संज्ञा रहित होय

तेउकायना दंडकवालो संज्ञा रहित होय

वाउकायना दंडकवालो संज्ञा रहित होय

वनस्पतिकायना दंडकवालो संज्ञा रहित होय

बेंद्रीना दंडकवालाने एक हेत्वोपदेशिकी संज्ञा होय

तेंद्रीना दंडकवालाने एक हेत्वोपदेशिकी संज्ञा होय.

चोरेंद्रीना दंडकवालाने एक हेत्वोपदेशिकी संज्ञा होय
तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकवालाने त्रण संज्ञा होय
मनुष्य पंचेंद्रीना दंडकवालाने ३ संज्ञा होय
वाणावेंतरना दंडकवालाने एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय
ज्योतिषी देवताना दंडकवालाने एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय
वैमानिक देवताना दंडकवालाने एक दीर्घकालिकी संज्ञा होय
ए रीते चोवीस दंडकविषे संज्ञाद्वार कह्युं

इति वीसमुं संज्ञाद्वार संपूर्ण.

अथ एकवीसमुं गतिद्वार लिख्यते.

चोवीस दंडक माहेथी जीवो मरीने चोवीस दंडक माहेशी केटला दंडकमां जाय तेनी विगत
सात नारकीवाला चवीने बे दंडकमां जाय तेनी विगत
१ मनुष्य गर्भजमां जाय   २ तिर्यंच गर्भजमां जाय
ए रीते बे दंडकमां जाय तेनी विगत

१ सातमी नरकमांथी निकळेलो गर्भज तिर्यंचमां जाय
२ छठी नरकमांथी नीकळेलो मनुष्य थाय पण साधु न थाय

३ पांचमी नरकमाथी नीकळेलो साधु थाय पण केवली न थाय

४ चोथी नरकमाथी नीकळेलो केवली थाय पण तीर्थंकर न थाय

५ तीजी नरकमाथी नीकळेलो तीर्थंकर थाय पण बलदेव वासुदेव न थाय

६ बीजी नरकमाथी नीकळेलो बलदेव वासुदेव थाय पण चक्रवर्ती न थाय

७ पेली नरकमाथी नीकळेलो तीर्थंकर चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव थाय

ए रीते बे दंडकमा जाय तेनी विगत कही

दश प्रकारना भवनपतिना दंडकवाला चवीने पांच दंडकनेविषे जाय तेनी विगत

१ मनुष्य २ तिर्यंचपंचेंद्री ३ पृथ्वीकाय
४ अप्पकाय ५ वनस्पतीकाय

पृथ्वीकायना दंडकवाला चवीने दश दंडकनेविषे जाय तेनी विगत

५ थावरना दंडकमा १ मनुष्यना दंडकमा
३ विगलेंद्रीना दंडकमा १ तिर्यंचपंचेंद्री

ए रीते दश दंडकनेविषे उपजे

अप्पकायना दंडकवाला चवीने दश गतिना दंडकमा

५ थावरना दंडकमा १ मनुष्यना दंडकमा
३ विगलेंद्रीना दंडकमा १ तिर्यंच पंचेंद्रीना

ए रीते दश दंडकमा जई उपजे
तेउकायना दंडकवाला चवीने ९ दंडकमा जाय
५ थावरना दंडकमा ३ विगलेंद्रीना दंडकमा
१ तिर्यंचपचेंद्रीना
वाउकायना दंडकवाला चवीने ९ दंडकमा जाय
५ थावरना दंडकमा ३ विगलेंद्रीना दंडकमा
१ तिर्यंचपचेंद्रीना दंडकमा
वनस्पतिकायना दंडकवाला चवीने १० दंडकमा जाय तेनी विगत
५ थावरना दंडकमा १ मनुष्यपंचेंद्रीना
३ विगलेंद्रीना दंडकमा १ तिर्यंचपंचेंद्री
ए रीते दस दंडकमा जई उपजे
बेंद्रीना दंडकवाला चवीने १० दंडकमा जाय तेनी विगत
५ थावरना दंडकमा १ मनुष्यना दंडकमा
३ विगलेंद्रीना दंडकमा १ तिर्यंचपंचेंद्री
ए रीते दश दंडकमाहे उपजे
तेंद्रीना दंडकवाला चवीने १० दंडकमा जाय तेनी विगत
५ थावरना दंडकमा ३ विगलेंद्रीना दंडकमा
१ तिर्यंचपंचेंद्री १ मनुष्यना दंडकमा
चोरेंद्रीना दंडकवाला चवीने १० दंडकमा जाय तेनी विगत

५ थावरना दंडकमा ३ विगलेंद्रीना दंडकमां

१ तिर्यंचपचेंद्री १ मनुष्यना दंडकमा

तिर्यंचपचेंद्रीना दंडकना २ भेद छे.तेनी विगत

१ समुछिम तिर्यंचपंचेंद्रीवाला मरीने एक ज्योतिषी अने बीजो वैमानिक ए बे दंडक वर्जीने बाकी २२ दंडकमा जई उपजे

२ गर्भजतिर्यंचवाला मरीने २४ दंडकमा जई उपजे ए रीते तिर्यंचपंचेंद्रीना २ भेद कह्या

मनुष्यना २ भेद छे ते मरीने कया दंडकोनेविषे जाय तेनी विगत

१ समुर्छिम मनुष्यवालो मरीने दश दंडकमां जाय तेनी विगत

५ थावरना दंडकमां १ तिर्यंचपंचेंद्रिना दंडकमां

३ विगलेंद्रीना दंडकमां १ मनुष्यना दंडकमां

ए रीते दश दंडक माहे जइ उपजे

२ गर्भज मनुष्यवालो मरीने २४ दंडकमां जाय ए रीते मनुष्यना बे भेद विगतसरीने कह्या

वाणविंतरना दंडकवालो मरीने पांच दंडक माहे जाय तेनी विगत

१ पृथ्वीकायना दंडकमां

१ अप्पकायना दंडकमां

१ वनस्पतीकायना दंडकमां

१ तिर्यंचपचेंद्रीना दंडकमां

१ मनुष्यना दंडकमां

ए रीतें पांच दंडकमां जई उपजे

ज्योतीषीना दंडकवाळो मरीने ५ दंडकमांहे जाय ते-
नी विगत

१ पृथ्वीकायना दंडकमां

२ अप्पकायना दंडकमां

३ वनस्पतीकायना दंडकमां

४ तिर्यंचपचेंद्रीना दंडकमां

५ मनुष्यना दंडकमां

ए रीतें ५ दंडकमांहे जई उपजे

वैमानिकना दंडकवाळाना त्रण भेद छे ते चवीने क-
या दंडकमां जाय तेनी विगत

१ पेला देवलोकवाळा अने बीजा देवलोकवाळा चवी-
ने ५ दंडकमां जाय

१ पृथ्वीकायना दंडकमां

२ अप्पकायना दंडकमां

३ वनस्पतीकायना दंडकमां

४ तिर्यंचपचेंद्रीना दंडकमां

५ मनुष्यकायना दंडकमां

२ त्रीजे, चोथे, पांचमे, छठे, सातमे, आठमे,
ए छ देवलोकवाळा चवीने बे दंडकमांहे जई उपजे
तेनी विगत

१-गर्भजतिर्यंच २ गर्भज-मनुष्य

३ नवमो, दशमो, इग्यारमो, बारमो, ए चार देवलोकवाला अने नवग्रैवेयकवाला पांच अनुत्तरविमानवाला ए देवता मरीने १ मनुष्य गर्भजमां जाय
ए रीते वैमानिक देवताना ३ भेद कह्या.
ए रीते चोवीस दंडकवाला मरीने किया किया दंडकमां उपजे तेनो खुलासो विवरीने कह्यो

इति श्री एकवीसमुं गतिद्वार संपूर्ण.

अथ बावीसमुं आगतीद्वार लिख्यते.

चोवीस दंडकमाहे एकेक दंडकनेविषे केटला दंडकवाला मरीने आवी उपजे तेनो आगतिद्वार लखीए छीए तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकमां २ दंडकमाथी आवीने उपजे तेनी विगत

१ तिर्यंचपंचेंद्री १ गर्भजमनुष्य

ए रीते वे दंडकवाला नारकीमाहे उपजे

ए वे दंडकवालामाथी सात नारकीनेविषे कयो दंडक केटली नारकी लगे जाय तेनुं प्रमाण कहेछे.

१ समुर्छिम तिर्यंचपंचेंद्री पेली नारकीलगे जाय

२ गर्भज भुजपरिसर्प बीजी नरकलगे जाय

३ गर्भज खेचर त्रीजी नारकीलगे जाय

४ गर्भजथलचर तिर्यंच मरीने चोथी नरकलगे जाय

५ गर्भज उरपरी सर्प मरीने पांचमी नरकलगे जाय

६ मनुष्यनी स्त्री मरीने छठी नरकलगें जाय

७ मनुष्य अने माछला ए मरीने सातमी नरकलगे जाय

ए रीते बे दंडकवालाने साते नरकना जवानो विचार विवरीने कह्यो

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकमाहे बे दंडकवाला आवी उपजे,

१ गर्भजमनुष्य २ तिर्यंचपंचेंद्री

पृथ्वीकायना दंडकमाहे १ नारकी वर्जीने बाकी २३ दंडकवाला आवे,

अप्पकायना दंडकमाहे १ नारकी वर्जीने बाकी २३ दंडकवाला उपजे

तेउकायना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवी उपजे तेनी विगत

५ थावरना ३ विगलेंद्रिना १ तिर्यंचपंचेंद्रीना

१ मनुष्यना

ए रीते दश दंडकवाला मरीने आवी उपजे

वाउकायना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवी उपजे तेनी विगत

५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेंद्रीना
१ मनुष्यना
वनस्पतीकायना दंडकमहे १ नारकी वर्जीने बाकी
२३ दंडकवाला उपजे
बेंद्रीना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवीने उपजे
तेनी विगत
५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेंद्रीना
१ मनुष्यना
तेंद्रीना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवी उपजे तेनी
विगत
५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेंद्रीना
१ मनुष्यना
चोरंद्रीना दंडकमाहे १० दंडकवाला आवीने उपजे ते-
नी विगत
५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेंद्रीना
१ मनुष्यना
तिर्यचपंचेंद्री दंडकना बे भेद छे तेनी विगत
१ समुर्छिम तिर्यच पंचेंद्रीमाहे १० दंडकवाला आ-
वीने उपजे
५ थावरना ३ विगलेंद्रीना १ तिर्यचपंचेंद्रीना
मनुष्यना
२ गर्भज तिर्यचपंचेंद्रीमाहे २४ दंडकवाला आवीने
उपजे

ए रीते तिर्यंचपंचेंद्रीना २ भेद कह्या
मनुष्यपचेंद्रीना दंडकना २ भेद कहे छे
१ समुर्छीम मनुष्यवाला माहे ८ दंडकवाला आवी उपजे तेनी विगत
१ पृथ्वीकायना २ अप्पकायना ३ वनस्पतीकायना ४ वेंद्रीना ५ तेंद्रीना ६ चोरेंद्रीना ७ तिर्यंचपंचेंद्रीना ८ मनुष्यना
२ गर्भेज मनुष्यमाहे १ तेऊ अने १ वाऊ ए वर्जीने वाकी २२ दंडकवाला आवी उपजे अने एक मनुष्य दंडकवाला कर्मक्षय करी मोक्षें पण जाय
ए रीते मनुष्य दंडकना वे भेद कह्या.
वाणविंतरना दंडकमाहे वे दंडकवाला आवीने उपजे
१ तिर्यंचपचेंद्री १ मनुष्यगर्भेज
ज्यातीषीदेवताना दंडकमांहे वे दंडकवाला आवी उपजे
१ तिर्यंचपचेंद्री २ मनुष्यगर्भज
वैमानीक देवताना दंडकना २ भेद छे तेनी विगत
१ पेला देवलोकथी आठमा देवलोकमाहे २ दंडकवाला आवी उपजे
१ तिर्यंचपचेंद्री १ गर्भजमनुष्यपचेंद्री
२ नवमा देवलोकथी बारमा देवलोकसुधी ए चार देवलोक अने नवग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान एटला माहे एक गर्भजमनुष्य आवीने उपजे

ए रीते वैमानिक देवतानी आगती कही
ए रीते चोवीस दंडकनेविषे आगतीद्वार कहयूं
इति श्री बावीसमुं आगतीद्वार संपूर्ण.

अथ त्रेविसमुं वेदद्वार लिख्यते

वेदद्वारनेविषे त्रण वेद छे तेनी विगत
१ पुरुष वेद २ स्त्री वेद ३ नपुसक वेद
ए रीते त्रण वेद कह्या पण चोवीस दंडकमाहे एक एक दंडकनेविषे केटला केटला वेद होय तेनी विगत
सात नारकीना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकनेविषे बे वेद होय
१ पुरुषवेद २ स्त्रीवेद
पृथ्वीकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
अप्पकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
तेऊकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
वाऊकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
वनस्पतीकायना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
बेंद्रीना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
तेंद्रीना दंडकनेविषे एक नपुसक वेद होय
चोरंद्रीना दंडकनाविषे एक नपुसक वेद होय
तिर्यंचपंचेंद्रीना दंडकना २ भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिम तिर्यचने एक नपुसक वेद होय

२ गर्भज तिर्यचने त्रण वेद होय-१ पुरुषवेद २ स्त्री वेद ३ नपुसकवेद

मनुष्यपंचेंद्रीना वे भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छीम मनुष्यने एक नपुसक वेद होय

२ गर्भज मनुष्यने त्रण वेद होय

वाणविंतरना दंडकनेविषें २ वेद होय

१ पुरुषवेद २ स्त्रीवेद

ज्योतीषीना दंडकनेविषे वे वेद होय

१ पुरुषवेद २ स्त्रीवेद

वैमानिक देवताना दंडकना वे भेद छे तेनी विगत

अथ चोवीसमुं अठाणुं बोलनुं अल्पावहुत्वद्वार विचार लिख्यते.

प्रथम सर्व थकी थोडा गर्भज मनुष्य संख्याती कोडा कोडी प्रमाण ते माटे

ते थकी मनुष्यनी स्त्री संख्यात गुणी अधिक ते सत्यावी सगुणी अधिक पामीइ ते माटे ए वे बोल मळीने अढी द्विपमां १०१ क्षेत्रना मनुष्य तेनी संख्या ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ सात क्रोड कोडा कोडी कोडी वाणू लाख कोडी को-

डी अठावीस हजार कोडा कोडी कोडी एकसो कोडा कोडी कोडी बासठ कोडा कोडी कोडी एकावन लाख कोडा कोडी बेतालीस हजार कोडा कोडी छसो कोडा कोडी तेतालीस कोडा कोडी सणत्रीस लाख कोडी ओगणसाठ हजार कोडी त्रणसो कोडी चोपन कोडी ओगणचाळीस लाख पचास हजार त्रणसो छत्रीस

ए रीते ओगणत्रीस आंकनी संख्या कही तेटला मनुष्य जाणवा

तेहथकी बादर तेऊकाय पर्याप्ता असंख्य गणा ते किमजे एक आवलीकाना समयनुं वर्ग करीका इक न्यून आवलीका समय साथे गणता जे तलासम थाए ते प्रमाणे होय ते माटे

तेहथकी अनुत्तर विमानना देवता असंख्य गणा छे क्षेत्र पल्योपमने असंख्यात मे भ.गे जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला होय ते माटे

तेहथकी उपरला त्रिकग्रैवेयकना देवता संख्यात गणा छे

तेहथकी मध्य त्रिकग्रैवेयकना देवता संख्यात गणा छे

तेहथकी हेटल्या त्रिकग्रैवेयकना देवता संख्यात गणा छे

तेहथकी अच्युत देवलोकना देवता संख्यात गणा छे

तेहथकी आरण देवलोकना देवता संख्यात गणा छे

तेहथकी प्राणत देवलोकना देवता संख्यात गणा छे

तेहथकी आणत देवलोकना देवता संख्यात गणा छे
तेहथकी हेटली सातमी नरक तमसतमःप्रभा पृथ्वीना नारकी असंख्य गणा छे
एक श्रेणीना असंख्याता भागमां जे आकाश प्रदेशराशि ते प्रमाणें छे ते माटे
तेहथकी छठी तमःप्रभा पृथ्वीना नारकी असंख्य गणा छे नरकवासा घणा छे माटे अने उत्कृष्ट पापकारी थकी हीन पापकारी घणा छे माटे
तेहथकी सहस्रार देवलोकना देवता असंख्य गणा छे
तेहथकी महाशुक्रे देवता असंख्य गणा छे विमान घणा छे माटे
तेहथकी पांचमी धूमप्रभा पृथ्वीमा नारकी असंख्य गणा छे
तेहथकी लांतक देवलोके देवता असंख्य गणा छे.
तेहथकी चोथी पंकप्रभा पृथ्वीमा नारकी असंख्य गणा छे
तेहथकी ब्रह्मदेवलोकें देवता असंख्यात गणा छे
तेहथकी त्रीजी वालुकप्रभा पृथ्वीमां नारकी असंख्य गणा छे
तेहथकी मांहेंद्र देवलोकें देवता असंख्य गणा छे
तेहथकी सनत्कुमार देवलोके देवता असंख्य गणा छे
तेहथकी शर्करप्रभा पृथ्वीमां नारकी असंख्य गणा छे

बारमा बोलथी त्रेवीसमो बोल लगे ए बार बोल प्रत्येके सर्व घनीकृत लोकनी एक श्रेणीने असंख्य तमे भागे जेटला आकाश प्रदेश होय ते प्रमाणें छे अने एक एकथी असंख्य गणा छे असंख्याताना असंख्य भेद छे ते माटे विरूद्ध नही

तेहथकी समुर्छिम मनुष्य असंख्य गणा छे अंगुलमात्र क्षेत्र तेमा जेटला आकाश प्रदेश श्रेणिनेविषे जेटला छे तेटला छे ते माटे

तेहथकी ईशान देवलोके देवता असंख्य गणा छे अंगुलमात्र क्षेत्र प्रदेशराशी रावधी द्वितिय वर्गमूल तृतीय वर्गमूलसाथे गुणता जेटला प्रदेश थाय तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणीनेविषे जेटला आकाश प्रदेश होए तेटला छे ते माटे

तेहथकी इशान्य देवलोकें देवी संख्यात गणा छे बत्रीस गुणी अधीक छे माटे

तेहथकी सौधर्म देवलोके देवता संख्यात गणा छे विमान घणा माटे अने दक्षीण दिशी कृष्णपक्षी गणा छे माटे

तेहथकी सौधर्म देवलोके देवी संख्यात गणा छे ते बत्रीस गुणी छे माटे

तेहथकी भवनपति देवता असंख्य गणा छे अंगुलमात्र आकाशक्षेत्र प्रदेश राशीअंवंशी प्रथम वर्गमूलसाथे गुणता जेटला प्रदेश थाय तेटली घनीकृत लोकनी

एक प्रदेशनी श्रेणीनिविषे जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला छे ते माटे

तेहथकी भवनपतिनी देवी संख्यात गुणी छे बत्रीस गुणी छे

तेहथकी एह रत्नप्रभा पृथ्वीमां नारकी असंख्य गणा छे अंगुलमात्र जे प्रदेशराशी संबंधी प्रथम वर्ग मूल गणीत द्वितीय वर्ग मूलप्रमाण श्रेणीनिविषे जेटला आकाश प्रदेश हुए तेटला छे

तेहथकी खेचर पचेंद्रीतिर्यंच योनीया पुरुष असंख्य गणा छे एक प्रदेश प्रतर असंख्यात भागवर्ती असंख्यात श्रेणी गत आकाश प्रदेश प्रमाण छे ते माटे

तेहथकी खेचर पचेंद्री तिर्यंच योनी यानी स्त्री संख्यात गुणी त्रिगुणी छे ते माटे

तेहथकी थलचर पंचेंद्री तिर्यंच योनी या पुरुष संख्यात गणा छे एक प्रतर असंख्य भाग वर्ति प्रभूत असंश्रेणीगत आकाश प्रदेश राशीप्रमाणे छे ते माटे

तेहथकी थलचर पचेंद्री तिर्यंच योनीआनी स्त्रीनी संख्यात गुणी त्रिगुणी छे ते माटे

तेहथकी जलचर पंचेंद्री तिर्यंच योनीया पुरुष संख्यात गणा छे एक प्रतर असंख्यात भागवर्ती अति प्रभूत असंख्यात श्रेणी गत आकाश प्रदेश राशी प्रमाणे छे ते माटे

तेहथकी जलचर पंचेंद्री तिर्यंच योनीआनी स्त्री सं-

ख्यात गणी छे त्रिगणी छे ते माटे

तेहथकी व्यंतर देवता संख्यात गणा छे एक प्रतरने-
विषे संख्यात कोडा कोडी योजन प्रमाण सूचीरूप खं-
ड जेटला थाय तेटला छे ते माटे

तेहथकी वाणव्यंतरी देवी संख्यात गणी छे बत्रीस ग-
णी ते माटे

तेहथकी ज्योतिषी देवता संख्यात गणा छे एक प्रतर-
नेविषे बसछप्पन अंगुल प्रमाण सूचीरूप खंड जेटला
थाय तेटला थाय तेटला छे ते माटे

तेहथकी ज्योतिषीनी देवी संख्यात गणी बत्रीसगणी
छे ते माटे

तेहथकी खेचर पंचेंद्री तिर्यंच योनिया नपुसक सं-
ख्यात गणा छे

तेहथकी थलचर पंचेंद्री तिर्यंच योनिया नपुसक सं-
ख्यात गणा छे

तेहथकी जलचर पंचेंद्री तिर्यंच योनिया नपुसक सं-
ख्यात गणा छे

तेहथकी चौरेंद्री पर्याप्ता संख्यात गणा छे एक प्रतरने-
विषे अंगुल संख्यात भाग मात्र सूचीरूप खंड जेटला
होय तेटला छे

तेहथकी पंचेंद्री सर्व पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी बेंद्री पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी तेंद्री पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी अपर्याप्ता असंख्य गणा छे एक प्रतर गत अंगुल असंख्य भाग मात्र सूचीखंड प्रमाण छे ते माटे
तेहथकी चोरेंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक छे
तेहथकी तेंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक छे
तेहथकी बेंद्री अपर्याप्ता विशेषाधिक छे
तेहथकी प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पति कायीआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे एक प्रतर गत प्रभूत अंगुल असंख्य भाग सूचीखंड जेटला होय तेटला छे ते माटे
तेहथकी बादर निगोद पर्याप्ता असंख्य गणा छे संख्यात प्रतर गत असंख्य भाग मात्र सूचीखंड प्रमाण माटे
तेहथकी बादर पृथ्वीकायिआ पर्याप्ता असंख्य गणा छे प्रभूत संख्यात प्रतर गत अंगुल असंख्य भागमात्र सूची खंड प्रमाण माटे
तेहथकी बादर अप्पकायीआ पर्याप्ता असंख्य गणा छे अति प्रभूत संख्यात प्रतर गत अंगुल असंख्य भागमात्र सूचीखंड प्रमाण माटे
तेहथकी बादर वाऊकायिआ पर्याप्ता असंख्य गणा छे घनीकृत लोकना असंख्य प्रतर गत आकाश प्रदेश राशीप्रमाण छे ते माटे
तेहथकी बादर तेऊकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे अति प्रभूत संख्यात प्रतर गत लोकाकाश प्रदेश राशीप्रमाण छे ते माटे

तेहथकी प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी बादर पृथ्वीकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी बादर अप्पकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी बादर वाऊकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे

तेहथकी सुक्ष्म तेऊकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे सर्व लोक व्यापी माटे

तेहथकी सूक्ष्म पृथ्वीकायिआ अपर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म अप्पकायिआ अपर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म वाऊकायिआ अपर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म तेऊकायिआ पर्याप्ता संख्यात गणा छे इहां सूक्ष्ममा स्वभावेज अपर्याप्ताथी पर्याप्ता घणा छे माटे

तेहथकी सूक्ष्म पृथ्वीकायिआ पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म अप्पकायिआ पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म वाऊकायिआ पर्याप्ता विशेषाधिक छे

तेहथकी सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता संख्यात गणा छे

तेहथकी सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गणा छे

तेहथकी अभव्य सिद्धिआ अनंत गणा छे जघन्ययु-

क्तानत प्रमाण माटे
तेहथकी प्रति पतित सम्यक्दृष्टी अनंत गणा छे
तेहथकी सिद्ध अनंत गणा छे मध्यम युक्त अनंत प्रमाण माटे
तेहथकी बादर वनस्पतिकायिआ पर्याप्ता अनंत गणा छे एक निगोदने अनंतमे भागे सिद्ध छे एहवा असंख्य निगोद पर्याप्ता बादर वनस्पतिमाहे छे ते माटे
तेहथकी बादर जीव पर्याप्ता विशेषाधिक छे बादर पर्याप्ता पृथ्व्यादिक भेल ते माटे
तेहथकी बादर वनस्पतिकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा छे बादरमाहे एकेक पर्याप्तानी निश्राइ असंख्य अपर्याप्ता निश्चये होय ते माटे
तेहथकी बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक छे बादर अपर्याप्तात्रिये पृथ्व्यादिक भेला छे ते माटे
तेहथकी सर्व जीव बादर विशेषाधिक छे पर्याप्ता अपर्याप्ता भेला छे ते माटे
तेहथकी सूक्ष्म वनस्पतिकायिआ अपर्याप्ता असंख्य गणा बादरथी सूक्ष्म घणां अने सर्व लोकव्यापी माटे
तेहथकी सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेष छे सूक्ष्म अपर्याप्त पृथ्व्यादि भेला छे ते माटे
तेहथकी सूक्ष्म वनस्पतिकायिआ पर्याप्ता संख्यात गणा छे सूक्ष्म माहे अपर्याप्ता घणा माटे
तेहथकी सूक्ष्म जीव पर्याप्ता विशेषाधिक छे सूक्ष्म पर्याप्ता पृथ्व्यादि भलता

तेहथकी सर्व सूक्ष्म जीव विशेषाधिक छे सूक्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता भेलता

तेहथकी भवसिद्धिक भव्य जीव विशेषाधिक छे जे जघन्य युक्तानत प्रमाण अभव्य टाली बीजा सर्व जीव भव्य छे ते माटे

तेहथकी निगोदना जीव विशेषाधिक छे जे भणी निगोदना जीव टाली बीजा सर्व जीव असंख्य लोकाकाश प्रदेश प्रमाणेज छे

तेहथकी वनस्पतिना जीव विशेषाधिक छे निगोदमां प्रत्येक वनस्पतिना पण भेलवाथी

तेहथकी एकेंद्री विशेषाधिक छे वनस्पतिमाहे पृथ्व्यादिकना पण भेलवाथी

तेहथकी तिर्यंच योनीआ विशेषाधिक छे बेंद्रीयादिकना पण भेलवाथी

तेहथकी मिथ्यादृष्टी विशेषाधिक छे चारगतिना मिथ्यादृष्टी भेलता

तेहथकी अविरति विशेषाधिक छे अविरति सम्यक्दृष्टी पण भेलवाथी

तेहथकी सकषायी विशेषाधिक छे देशविरत्यादिकना भेलवाथी

तेहथकी छद्मस्थ विशेषाधिक छे उपशांत मोहना पण भेलवाथी

तेहथकी सयोगी विशेषाधिक छे ते सयोगी केवलीना पण भेलवाथी

तेहथकी सर्व संसारी जीव विशेषाधिक छे अयोगी केवलीना पण भेळवाथी

तेहथकी सर्व जीव विशेषाधिक छे सिद्धना जीव पण प्रक्षेपवाथकी

इति चवीसमुं अठाणु बोलनुं अल्पाबहुत्वद्वार संपूर्ण.

अथ पचीसमुं भवनद्वार लिख्यते

भवनद्वार कहिये छिये ते एक मनुष्यना दंडक अने बीजा तिर्यंचपचेंद्रीना नव दंडक ए दश दंडकनेविषे भवन न होय ते केम जे अशाश्वता पदार्थ छे ते माटे अने नारकीना एक दंडक तथा देवताना १३ दंडक एटले ए चौद दंडकनेविषे भवन होय अने ए शाश्वता पदार्थ छे ते माटे तेहवे ए चौद दंडकना भवनद्वार कहीये छिये तेनी विगत.

प्रथम सात नारकीना दंडकनुं भवनद्वार कहे छे

१ पृथ्वीनु पिंड ते उपजे २ नरकावासा ३ पाथडा ए बोल सात नरकीनेविषे ए त्रण भेद लख्या छे तेना एकेक नरकनेविषे खुलासो करीने लखीए छीए

१ प्रथम रत्नप्रभा नरकनेविषे

३० लाख नरकावासा १ लाख ८० हजार पृथ्वीनो पिंड १३ पाथडा

२ बीजी शर्कराप्रभा नरकनेविषे

२५०००००० नरकावासा १३२००० पृथ्वीनो पिंड
११ पाथडा

३ त्रिजी वालुकप्रभा नरकनेविषे

१५०००००० नरकावासा १२८००० पृथ्वीनो पिंड
९ पाथडा

४ चोथी पंकप्रभा नरकनेविषे

१०००००० नरकावासा १२०००० पृथ्वीनो पिंड
७ पाथडा

५ पांचमी धूमप्रभा नरकनेविषे

३००००० नरकावासा ११८००० पृथ्वीनो पिंड
५ पाथडा

६ छठी तमःप्रभा नरकनेविषे

९९९९९ नरकावासा ११६००० पृथ्वीनो पिंड
३ पाथडा

७ सातमी तमस्तमःप्रभा नरकनेविषे

५ नरकावासा १०८००० पृथ्वीनुं पिंड १ पाथडो
ए रीतें सात नरकोनेविषे चोराशी लाख नरकावासा अने ४९ पाथडा कह्या

दश प्रकारना दश भवनपतिना दश दंडकनेविषे दश निकायना बे श्रेणीना भवनद्वार कहिये तेनी विगत

१ प्रथम भवनपतिना दक्षीण श्रेणीना दश इंद्रना नाम तथा भवन लिख्यते

१० नि ाय	१० दक्षेंद्रना नाम	दक्षीणदिशना भवन
१ असुरकुमार	चमरेंद्र	३४ लाख
२ नागकुमार	धरणेंद्र	४४ लाख
३ सुवर्णकुमार	वेणुदेव	३८ लाख
४ विद्युत्कुमार	हरीकांत	४० लाख
५ अग्नीकुमार	अनतीगी	४० लाख
६ द्वीपकुमार	पुरणेंद्र	४० लाख
७ उदधीकुमार	जलकांत	४० लाख
८ दिशीकुमार	अमीत	४० लाख
९ वायुकुमार	वलेंद्र	५० लाख
१० स्तनितकुमार	घोषेंद्र	४० लाख

ए रीते भवनपति देवताना दक्षिण श्रेणीना दस इंद्रना भवन ४०६०००० ए रीते चार क्रोड ने छ लाख भवन जाणवा

२ बीजा भवनपतिना उत्तर श्रेणीना दस इंद्रना नाम तथा तेना भवन लिख्यते

१० निकाय	१० उत्तरेंद्रना नाम	उत्तर दिशीना भवन
१ पेली निकाय	वलेंद्र	३० लाख
२ जी निकाय	भूतानेंद्र	४० लाख
३ जी निकाय	वेणुदलेंद्र	३४ लाख
४ थी निकाय	हरिचंद्र	३६ लाख
५ मी निकाय	अग्नीमा	३६ लाख
६ ठी निकाय	वशीष्ट	३६ लाख
७ मी निकाय	जलप्रभ	३६ लाख

८ मी निकाय	अमितवाहा	२६ लाख
९ मी निकाय	अमितवाहा	४६ लाख
१० मी निकाय	महाघोष	२६ लाख

ए रीते भवनपति देवतानी उत्तर श्रेणीना दस इंद्रना भवन ३६६०००० त्रण क्रोड छासट लाख भवन जाणवा ए रीते भवनपतिनी दश निकायनेविषे २० इंद्रना कुलभवन ७७२०००० नी संख्या कही.

हवे भवनपतिना दस निकायना देवताना चिन्ह तथा शरीरवर्ण तथा वस्त्रना वर्ण तेनी विगत लखीए छीए

१० निकायना अंक	चिन्ह	शरीरवर्ण	वस्त्रवर्ण
१ ली निकाय	चूडामणी	कृष्ण	रक्त
२ जी निकाय	सर्प	गौर	नील
३ जी निकाय	गरूड	कंचन	श्वेत
४ थी निकाय	वज्र	रक्त	नील
५ मी निकाय	कलश	रक्त	नील
६ ठी निकाय	सिंह	रक्त	नील
७ मी निकाय	अश्व	गौर	नील
८ मी निकाय	गज	कंचन	श्वेत
९ मी निकाय	मच्छ	नील	संध्याराग
१० मी निकाय	सरावसंपट	कंचन	स्वेत

ए रीते दस निकायना उत्तर श्रेणीना इंद्रना चिन्ह तथा शरीरना वर्ण तथा वस्त्रना वर्ण सर्वे उपर लख्या प्रमाणें जाणवा

हवे विंतर देवताना दंडकना भवन कहे छे जे तिरछा
लोकमां व्यंतरना भवन असंख्य जाणवा
ज्योतिषीना दंडकनेविषे भवनद्वारना पाच भेद छे ते
कहे छे

१ तेमा चंद्रमाना प्रथम भवनद्वार कहे छे तेनी विगत
२ जंबूद्वीपमाहे वे चंद्रमा
४२ कालोदधि समुद्रमा वेतालीस चंद्रमा
४ लवण समुद्रमा चार चंद्रमा
७२ पुष्करार्ध खंडमा वहोत्तर चंद्रमा
१२ धातकी खंडमां वार चंद्रमा

ए रीते अढी द्वीपमा सर्वे चंद्रमा १३२ थाय ते अढी
द्वीपसुधी चंद्रमा चल छे उपरांत चंद्रमा थीर छे ए
रीते जे असंख्य योजनना द्वीप समुद्र छे ते असंख्य
चंद्रमा जाणवा अने जे असंख्य योजनना द्वीप समुद्र
छे ते असंख्य चंद्रमा जाणवा अने चंद्रमानु विमान
जोयण १ ना भाग ६१ कीजे एवा भाग ५६ लांवा
पोहोला छे उंच पण भाग २८ तेनी परिधी त्रगुणी
जाणवी अने चंद्रमाना भवनने १६००० देवता उपा-
डे छे ते ४००० देवता पूर्व दिशीनेपासे सिंहने रूपे
अने ४००० देवता पश्चीम दिशीनेपासे वृषभने रूपे
अने ४००० देवता उत्तर दिशीनेपासे घोडाने रूपे
अने ४००० देवता दक्षिण दिशीनेपासे हाथीने रूपे
ए रीते चारी दिशी मलीने १६००० देवता चंद्रमाना

विमानने उपाडे छे ते शंभुतला पृथ्वीथकी ८८० योजन उंचो चंद्रमानो विमान छे

२ बीजुं सूरजनुं भवनद्वार तेमां प्रथम चंद्रमांना विमाननी परे सूरजना विमान जाणवा ने सूरजनुं विमान योजन एकना भाग ६१ किजे एना ४८ भाग लांबो पोळो छे अने उंच पण भाग २४ तेनी परीधी त्रिगुणी अधिक जाणवी ते सूरजना विमानने १६००० देवता उपाडे छे. ते एक एक दिशिनेविषे चार चार हजार देवता प्रथम चंद्रमानी परे चार रूपे उपाडे छे ते शंभुतला पृथ्वीथकी ८०० योजन उचुं सूर्यनु विमान छ

३ त्रीजा ग्रहना विमान कहे छे चंद्रमाना एक विमानने पछवाडे ८८ ग्रहना विमान होय ते ग्रहनु विमान गाऊ २ लांबुं पोलुं छे अने गाऊ १ नु उंच अने तनी परधी त्रिगुणी जाणवी ते ग्रहना विमानने ८००० देवता उपाडे छे शंभुतला पृथ्वीथकी उच ८८८ योजनथी ९०० योजन सुधी ग्रहना विमान जाणवा

४ हवे चोथुं नक्षत्रनुं विमानद्वार कहे छे चंद्रमाना एक विमान पछवाडे २८ नक्षत्रना विमान होय तेनुं विमान गाउ १ नुं लांबु पोलुं अने गाउ अर्ध उंच पण अने तनी परधी त्रिगुणी जाणवी अने ते नक्षत्रना विमानने ४००० देवता उपाडे छे ते शंभुतला

पृथ्वीथकी ८८४ योजन उचा नक्षत्रना विमान जा-
णवा

५ पांचमा ताराना विमान कहे छे चंद्रमाना एक वि-
मान पछवाडे ६६९७५ कोडा कोडी ताराना विमान
होय तेतुं विमान गाऊ अर्धु लांबु पोलु अने गाऊ
१ नो चोथो भाग उच पण होय अने तेनी परीधी
त्रिगुणी जाणवी अने ते ताराना विमानने २०००
देवता उपाडे छे ते संभूतला पृथ्वीथकी ७९० योजन
उंच ताराना विमान जाणवा

ए रीते पांच ज्योतिषीना भवनद्वार कह्या ते ५ ज्यो
तिषीनुं चक्र अढी द्वीपमुधी चले छे उपरांत थिर छे.

वैमानिक देवताना भवनना त्रण भेद छे तेनी विगत

१ प्रथम बार देवलोकवालाना विमाननी विगत

देवलोक	इंद्र	चिन्ह	विमान	पाथडा
सौधर्म	सौधर्म	मृग	३२०००००	१३
इशान	इशान	महिष	२८०००००	
सनत्कुमार	सनत्कुमार	वराह	१२०००००	१२
माहेंद्र	माहेंद्र	सिंह	८०००००	
ब्रह्म	ब्रह्मेंद्र	बोकडो	४०००००	६
लांतक	लांतक	डेडक्कु	५००००	५
महाशुक्र	महाशुक्र	अश्व	४००००	४
सहस्रार	सहस्रार	गज	६०००	४
आनत	आनत	भुजंग	२००	४
प्राणत	प्राणत	खडगी	२००	

आरण	आरण	वृषभ १५०	
अच्युत	अच्युत	मेंढो १५०	४

ए रीते बार देवलोकना विमान ८४९६७०० कुल थया तेना इंद्र १० कह्या कारण जे नवमा ने दशमा देवलोकनुं इंद्र १ छे अने इग्यार अने बा मा देवलोकनो इंद्र १ छे तेथी १० इंद्र थया नथा तेना पाथडा ५२ कह्या

२ नवग्रैवेयकने विषे ३१८ विमान छे तेमा पेली त्रिकनेविषे विमान १११ छे बीजी त्रिकनेविषे विमान १०७ छे त्रिजी त्रिकनेविषे विमान १ ० छे ए रीते त्रण त्रिकनेविषे विमान ३१८ जाणवा अने तेना पाथडा नव जाणवा तिहां इंद्र नथी पोतेज स्वामी छे ए रीते नवग्रैवेयकनुं भवनद्वार कहयुं

पांच अनुत्तर विमाननेविषे विमान ५ छे अने ते पांच अनुत्तर विमानमां पाथडुं १ छे अने तिहा इंद्र नथी पोते स्वामी छे

ए रीते वैमानिक देवताना भवनद्वार कह्या अने ए रीते सरवे वैमानिक देवताना विमान कुल ८४९७०२३ थया अने वैमानिक देवनाना कुल पाथडा ६२ थया ए रीते वैमानिक देवतानु भवन द्वार कहयुं

ए रीते चौद दंडकनेविषे भवनद्वार कहयुं

वितरना भवन तथा ज्योतिषीना विमान वर्जीने वा-

की अधो अने उर्ध्व अने तिरछा लोकनेविषे शाश्वता देरासर छे ८५६९७२३४ एटला देरासर सदा काले छे तेनी आदि पण नथी ते देरासरमध्ये कुलशश्वाती जिन प्रतिमा १५४२९१२९१४० एटली छे तेनी विगत

१ पेला अधोलोकनेविषे दश प्रकारना भवनपतिमाहे दश निकायना वीस इंद्र छे तेना भवन ७७२००००० भवन ते एक एक भवननेविषे एक एक देरासर शाश्वत जाणवु एटले ७७२००००० देरासर शाश्वता थया ते एक एक देरासरमाहे शाश्वती जिन प्रतिमा १८० छे एटले सर्व जिन प्रतिमा १३८९६०००००० छे

ए रीते भवनपतीविषे देरासर तथा जिन प्रतिमानी संख्या कही

२ बीजा उर्ध्व लोकमाहे वैमानिक देवताना विमाननेविषे पेला देवलोकथी माडीने यावत पांच अनुत्तर विमानसुधी कुल विमान ८४९७०२३ छे ते एकेक विमाननेविषे एकेक देरासर शाश्वतु जाणवु एटले ८४९७०२३ देरासर थया ते एकेक देरासरमाहे शाश्वती जिन प्रतिमा १८० छे एटले सर्व प्रतिमा १५२९४६४१४० ए रीते बार देवलोक नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमाननाविषे देरासर तथा प्रतिमानी संख्या जाणवी

३ त्रिजा तिरछा लोकमांइ जबूद्वीपथी मांडी रुचक द्वीप लगे शाश्वता देरासर ५०१ छे तेनी विगत

१ वैताढ्य पर्वत १७० छे ते उपरे देरासर १७ छे ते एक एक देरसरमां जिन प्रतिमा १२० प्रमाणे छे एटले कुल जिन प्रतिमा २०४०० थई

२ वर्षधर पर्वत ३० छे ते उपरे देरासर ३० छे ते एक एक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० एटले कुल जिन प्रतिमा ३६०० थई

३ कांधमवृक्ष १० छे ते उपरे देरासर १० छे ते एकेक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० छे एटले कुल जिन प्रतिमा १२०० थई

४ गजदंता पर्वत २० छे ते उपरे देरासर २० छे ते एकेक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० प्रमाणे छे एटले कुल जिन प्रतिमा २४०० थई

५ कांचन पर्वत ८० छे ते उपरे देरासर ८० छे ते एकेक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० प्रमाणे छे एटले कुल जिन प्रतिमा ९६०० थई

६ वषारा पर्वत ८० छे ते उपरे देरासर ८० छे ते एक एक देरासरमांहे जिन प्रतिमा १२० छे एटले कुल जिन प्रतिमा ९६०० थई

७ मेरू पर्वत ५ छे ते एक एक मेरू पर्वत उपरे १७ देरासर छे एटले मेरू ५ उपरे देरासर ८५ छे ते एक एक देरासरमांहे जिन प्रतिमा १२० छे एटले

कुल जिन प्रतिमा १०२०० थई

८ इषुकार पर्वत ४ छे ते उपर देरासर ४ छे ते एकेक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० प्रमाणें छे एटले कुल जिनप्रतिमा ४८० थई

९ मानुषोत्तर पर्वत १ छे ते उपरे देरासर ४ छे ते एकेक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० प्रमाणें छे एटले कुलजिनप्रतिमा ४८० थई

१० नंदीसर द्वीप उपरे देरासर २० छे ते एक एक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२४ प्रमाणें छे एटले कुल जिन प्रतिमा २४८० थई

११ कुंडल पर्वत १ छे ते उपरे देरासर ४ छे ते एक एक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० प्रमाणें छे एटले कुल जिन प्रतिमा ४८० थई

१२ रुचक पर्वत १ छे ते उपर देरासर ४ छे ते एक एक देरासरमाहे जिन प्रतिमा १२० प्रमाणें छे एटले कुल जिन प्रतिमा ४८० थई

ए रीतें बार बोल तिर्छा लोकमाहे छे तेनेविषे शाश्वता देरासर ५११ छे ते माहे कुल जिन प्रतिमा ६१४०० छे एटले तिर्छा लोकनेविषे देरासर तथा प्रतिमानी संख्या थई

ए रीतें त्रण लोकनेविषे कुल शाश्वता देरासर ८५६९७२३२ छे ते माहे कुल जिन प्रतिमा १५२२९५२९५४० छे तथा ए उपरांत विंतर देवता-

ना असंख्य भवन छे एटले तेमा असख्य देरासर छे तेमा असंख्य जिन प्रतिमा जाणवी अने वली ज्योतिषी देवताना असख्य विमान छे एटले तेमा असंख्य देरासर छे तेमा असंख्य जिन प्रतिमा छे ए रीते शाश्वता देरासर तथा शाश्वती जिन प्रतिमा कही तेने वंदना कर्‍याथी अनंता भवना पाप कीधा होय ते चकचूर थई जाय तेमा संदेह नही ए रीते भवनद्वार कह्युं

इति पचीसमुं भवनद्वार संपूर्ण.

अथ छवीसमुं विरहकालद्वार लिख्यते.

विरहकालद्वार समुच्चय गति चारने मुहूर्त १२ ना होय ते चोवीस दंडकमाहेथी एकेक दंडकने विरहकाल जघन्य अने उत्कृष्ट विवरीने लखीए छीए तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकने जघन्य एक समये अने उत्कृष्ट मास ६ नुं जाणवुं तेनी विगत

१ पेली नरके जघन्य एक समये अने उत्कृष्ट २४ मुहूर्त

२ बीजी नरके विरहकाल दिन ७ नो जाणवो

३ त्रीजी नरके विरहकाल दिन १५ नो जाणवो

४ चोथी नरके विरहकाल मास १ नो जाणवो

५ पांचमी नरके विरहकाल मास २ नो जाणवो

६ छठी नरके विरहकाल मास ४ नो जाणवो
७ सातमी नरके विरहकाल मास ६ नो जाणवो
ए रीते सात नारकीनो विरहकाल कह्यो
दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकनेविषे विरह काल
१ जघन्य एक समये २ उत्कृष्ट २४ मुहूर्त.
पृथ्वीकायना दंडकनेविषे विरहकाल नथी
अप्पकायना दंडकनेविषे विरहकाल नथी.
तेउकायना दंडकनेविषे विरहकाल नथी
वाउकायना दंडकनेविषे विरहकाल नथी.
वनस्पतीकायना दंडकनेविषे विरहकाल नथी
बेंद्रीना दंडकनेविषे जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट १ मुहुर्त
तेंद्रीना दंडकनेविषे जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट १ मुहुर्त
चोरेंद्रीना दंडकनेविषे जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट. १ मुहूर्त.
तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकनेविषे विरहकालना २ भेद छे तेनी विगत
१ सम्मुर्छीम तिर्यंचने जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट २४ मुहुर्त
२ गर्भजतिर्यंचने जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट १२ मुहुर्त

मनुष्यना दंडकनेविषे विरहकालना बे भेद छे तेनी विगत.

१ समुर्छिम मनुष्यने जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट २४ मुहुर्त

२ गर्भज मनुष्यने जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट १२ मुहुर्त

वाणविंतरना दंडकनेविषे जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट २४ मुहूर्त

ज्योतिषीना दंडकनेविषे जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट २४ मुहुर्त

वैमानिक देवताना दंडकनेविषे जघन्य १ समये अने उत्कृष्ट विरहकाळनी विगत

१ पेला अने बिजा देवलोके विरहकाल उत्कृष्ट २४ मुहुर्त

२ तिजा देवलोके विरहकाल उत्कृष्ट ९½ दिन अने २० मुहुर्त

३ चोथे देवलोके विरहकाल उत्कृष्ट १२ दिन अने १० मुहूर्त

४ पांचमा देवलोके विरहकाळ उत्कृष्ट २२ दिन

५ छठा देवलोके विरहकाल उत्कृष्ट ४५ दिन

६ सातमा देवलोके विरहकाल उत्कृष्ट ८० दिन

७ आठमा देवलोके विरहकाल उत्कृष्ट १०० दिन

८ नवमे देवलोके अने दशमे देवलोके विरहकाळ

संख्याता मासना जाणवो.

९ इग्यारमा अने बारमा देवलोकनेविषे विरहकाल उत्कृष्ट संख्याता वरसनो जाणवो

१० ग्रैवेयकनी पेली त्रिकनेविषे उत्कृष्ट विरहकाल संख्याता सेकडा वरसनो जाणवो

११ ग्रैवेयकनी बिजी त्रिकने विरहकाल उत्कृष्ट संख्याता हजार वर्ष

१२ ग्रैवेयकनी त्रीजीत्रिकनेविषे विरहकाल उत्कृष्ट संख्याता लाख वर्ष

१३ चार अनुत्तर विमानने विरहकाल उत्कृष्ट पल्योपमनो असंख्यातमो भाग

१४ पांचमा सर्वार्थसिद्धने विरहकाल उत्कृष्ट पल्योपमनो संख्यातमो भाग जाणवो

ए रीते वैमानिक देवतानो विरहकाल कह्यो.

ए रीते चोवीस दंडकने विरहकाल विवरीने कह्या

इति छवीसमुं विरहकालद्वार संपूर्ण



अथ सत्तावीसमुं गुणठाणाद्वार लिख्यते.

गुणठाणाद्वार कहिये छीए ते गुणठाणा १४ छे तेना नामनी विगत

१ मिथ्यात गुणठाणुं २ सस्वाद गुणठाणुं

३ मिश्र गुणठाणो   ४ अवरती समकित गुणठाणो

५ देशवरती गुणठाणो ६ परमत गुणठाणा

७ अपरमत गुणठाणो ८ अपुर्व गुणठाणो

९ अनीवृतबादर गुणठाणो

१० सुषसंपराय गुणठाणो

११ उपशांत मोह गुणठाणो

१२ क्षीण मोह गुणठाणो

१३ संयोगी केवली गुणठाणो

१४ अयोगी केवली गुणठाणो

ए रीते चौद गुणठाणाना नाम कह्या.

चोवीस दंडकमाहेथी एकेक दंडकनेविषे केटला गुणठाणा लाभे तेनी विगत

सात नारकीना दंडकने पेला ४ गुणठाणा लाभे

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकने पेला ४ गुणठाणा लाभे

पृथ्वीकायना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे

अप्पकायना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणु लाभे

तेउकायना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे

वाऊकायना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणु लाभे

वनस्पतीकायना दंडकनेविषे एक मिथ्यात्व गुणठाणो लाभे

बेंद्रीना दंडकने पेला २ गुणठाणा लाभे

तेंद्रीना दंडकने पेला २ गुणठाणा लाभे

चोरेंद्रीना दंडकने पेला ? गुणठाणा लाभे

तिर्यंचपचेंद्रीना दंडकनेविषे गुणठाणाना बे भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिम तिर्यंचपंचेंद्रीना दंडकने पेला २ गुणठाणा लाभे

२ गर्भज तिर्यंचपचेंद्रीना दंडकने पेला गुणठणा लाभे

मनुष्यना दंडकनेविष गुणठाणाना बे भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिम मनुष्यना दंडकने एक मिथ्यात्व गुणठाणुं लाभे

२ गर्भज मनुष्यना दंडकने १४ गुणठाणा लाभे

वाणविंतरना दंडकने पेला ४ गुणठाणा लाभे

ज्योतीषीना दंडकने पेला ४ गुणठाणा लाभे

वैमानिक देवताना दंडकनेविषे गुणठाणाना २ भेद छे तेनी विगत

१ बार देवलोकना देवता अने नवग्रैवेयकना देवताने पेला ४ गुणठाणा लाभे

२ पांच अनुत्तर विमानना देवताने एक अविरति गुणठाणुं होय

ए रीत चोवीस दंडकनेविषे गुणठाणा कह्या

इति २७ मुं गुणठाणानुं द्वार संपूर्ण

अथ अट्ठावीसमुं प्राणनु द्वार लिख्यते

प्राणद्वारना दश भेद छे तेना नामनी विगत

१ स्पर्शेंद्री	५ श्रोत्रेंद्री	८ मनोबल
२ रसेंद्री	६ कायबल	९ श्वासोश्वास
३ घ्राणेंद्री	७ वचनबल	१० आयु
४ चक्षुरिंद्री		

ए रीतें १० प्राणना नाम कह्या

चोवीस दंडकमांहेथी एक एक दंडकनेविषे केटला प्राण होय तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे १० प्राण होय

दश भवनपतिना दश दंडकने १० प्राण होय

पृथ्वीकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

अप्पकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

तेऊकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

वाऊकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

वनस्पतिकायना दंडकने ४ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ कायबल ३ श्वासोश्वास ४ आयु

बेंद्रीना दंडकने ६ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री ३ वचनबल ४ कायबल

५ श्वासोश्वास ६ आयु

तेंद्रीना दंडकने ७ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री ४ वचनबळ

५ कायबळ ६ श्वासोश्वास ७ आयु

चोरेंद्रीना दंडकने ८ प्राण होय तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री ४ चक्षुइंद्री

५ वचनबळ ६ कायबळ ७ श्वासोश्वास ८ आयु

तिर्यंचपंचेंद्रीना बे भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिम तिर्यंचपंचेंद्रीना दंडकने ९ प्राण होय. तेनी विगत

१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री ४ चक्षुइंद्री

५ श्रोत्रेंद्री ६ वचनबळ ७ कायबळ ८ श्वासोश्वास

९ आयु

२ गर्भज तिर्यंचपंचेंद्रीना दंडकने १० प्राण होय. तेनी विगत

मनुष्य दंडकने २ भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिम मनुष्यना दंडकने ७ अथवा ८ प्राण होय

१ स्पर्शेंद्री २ रसेंद्री ३ घ्राणेंद्री ४ चक्षुइंद्री

५ श्रोत्रेंद्री ६ कायबळ ७ श्वासोश्वास ८ आयु

२ गर्भज मनुष्यना दंडकने १० प्राण होय

वाणवितरना दंडकने १० प्राण होय

ज्योतिषीना दंडकने १० प्राण होय

वैमानिक देवताना दंडकनेविषे १० प्राण होय -

ए रीते चोवीस दंडकनेविषे प्राणद्वार कह्या

इति आठावीसमुं प्राणद्वार संपूर्ण



अथ ओगणत्रीसमु संयतीद्वार लिख्यते

संयतीद्वारना बोल ८ छे तेनी विगत

१ संयती	असंयती	संयतासंयती
२ व्रती	अव्रती	व्रताव्रती
३ पचखाणी	अपचखाणी	पचखाणापचखाणी
४ पडीआ	बाला	बालापडीआ
५ संवुडा	असंवुडा	संवुडासवुडा
६ जगरा	च्युता	च्युताजगरा
७ धर्मीया	अधर्मीया	धर्माधर्मीया
८ धर्मविवसाइया	अधर्मविवसाइया	धर्माधर्मविवसाइया

ए रीतें संयतीना ८ बोल कह्या पण एक एक बोल-ना त्रण ३ बोल जाणवा

चोवीस दंडकमाहे एक एक दंडकमां संयतीना केटला बोल होय तेनी विगत

प्रथम सात नारकीना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद होय तेनी विगत

१ असयती	२ अव्रती	३ अपचखाणी
४ बाला	५ असंवुडा	६ च्युता
७ अधर्मीया	८ अधर्मविवसईया	

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकनेविषे सयती-
ना ८ भेद नारकीनी परे जाणवा

पृथ्वीकायना दंडकनेविषे सयतीना ८ भेद नारकी-
नी परे जाणवा

अप्पकायना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकी
नी परे जाणवा

तेउकायना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकीनी
परे जाणवा

वाऊकायना दंडकनेविपे संयतीना ८ भेद नारकी-
नी परें जाणवा

वणस्पतिकायना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नार-
कीना परें जाणवा

बेंद्रीना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकीनी परें
जाणवा

तेंद्रीना दंडकनेविपे संयतीना ८ भेद नारकीनी परें
जाणवा

चोरेंद्रीना दंडकनेविषे संयतीना ८ भेद नारकीनी
परे जाणवा

तिर्यचपंचेंद्री दंडकना २ भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिम तिर्यचपंचेंद्रीना दंडकने सयतीना ८ भे
द नारकीनी परे जाणवा

२ गर्भजातिर्यचना दंडकनेविपे संयतीना २ भेद छे
तेनी विगत

१ असंयती २ असंयतासंयती

मनुष्यना दंडकना २ भेद छे तेनी विगत

१ समुर्छिम मनुष्यना दंडकने संयतीना ८ भेद नार कीनी परें जाणवा

२ गर्भज मनुष्यना दंडकने संयतीना ८ बोल सघळे प्रकारें लाभे

ज्योतिषीना दंडकनेविषे संयतीना ८ बोल त्रीजा प्रकारें लाभे

वैमानिक देवताना दंडकनेविषे संयतीना ८ बोल त्रिजा प्रकारें लाभे

ए रीते संयतीना भेद २४ दंडकनेविषे कह्या.

इति २९ मुं संयतीद्वार संपूर्ण.

अथ त्रीसमुं आहारद्वार लिख्यते

आहारनुं द्वार लखीए छिए ते आहारना ३ भेद छे तेनी विगत

१ सचेत आहार २ अचेत आहार ३ मिश्र आहार

ए रीतें ३ प्रकारना आहार कह्या

चोवीस दंडकमां एक एक दंडकवालो केटला प्रकारनो आहार लिए तेनी विगत

सात नारकीना दंडकवालो १ अचेत आहार लिये

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकवालो १ अचेत

आहार लिये
पृथ्वीकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
अप्पकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
तेऊकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
वाऊकायनो दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
वनस्पतिकायना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
बेंद्रीना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
तेंद्रीना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
चोरेंद्रीना दंडकवालो ३ प्रकारनो आहार लिये
तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकवालाना २ भेद छे ते पण ३ प्रकारें आहार लिये
१ सम्मूर्छिम तिर्यंच पंचेंद्रीना दंडकवाला
२ बिजा गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रीवाला
मनुष्यना दंडकना २ भेद छे ते पण ३ प्रकारना आहार लिये
१ सम्मूर्छिम मनुष्य २ गर्भज मनुष्य
वाणवितरना दंडकवाला १ अचेत आहार लिये
ज्योतिषीना दंडकवाला १ अचेत आहार लिये
वैमानिकना दंडकवाला १ अचेत आहार लिये
ए रीते २४ दंडकनेविषे आहारद्वार कह्यूं.

इति ३० मुं आहारद्वार संपूर्ण.

अथ एकत्रीसमुं आहारजातीनुं द्वार लिख्यते

आहार त्रण जातीना छे तेनी विगत

१ ओजाहार   २ लोमाहार   ३ कवलाहार

ए रीतें ३ जातीना आहार कह्या

चोवीस दंडकमां एक एक दंडकवालो केटली जाती-नो आहार लीये तेनी विगत

सात नारकीना दंडकवाला २ जातीनो आहार लिये

१ ओजाहार   २ लोमाहार

दश प्रकारना भवनपतिना दश दंडकवाला बे जाति-ना आहार लिये

१ ओजाहार   २ लोमाहार

पृथ्वीकायना दंडकवाला एज २ जातिना आहार लिये

अप्कायना दंडकवाला एज २ जातिना आहार लिये

तेऊकायना दंडकवाला एज २ जातिना आहार लिये

वाऊकायना दंडकवाला एज २ जातिना आहार लिय

वनस्पतीकायना दंडकवाला एज २ जातीना आहा र लिय

बेंद्रीना दंडकवाला ३ जातीना आहार लिये

१ उजाआहार २ लोमाआहार ३ कवलआहार

तेंद्रीना दंडकवाला एज २ जातिना आहार लिये
चोरेंद्रीना दंडकवाला एज २ जातिना आहार लिये
तिर्यंच पचेंद्रीना दंडकना २ भेद छे ते पण एज २ जातिना आहार लिये

१ समुर्छिम तिर्यंच २ गर्भज तिर्यंच

मनुष्यदंडकना २ भेद छे ते पण २ जातिना आहार लिये

१ समुर्छिम मनुष्य २ गर्भज मनुष्य

वाणव्यंतरना दंडकवाला बे जातीना आहार लिये

१ ओजाआहार २ लोमआहार

ज्योतिषी दंडकवाला एज २ जातीनो आहार लिये
वैमानिक दंडकवाला एज २ जातीनो आहार लिये
ए रीतें २४ दंडकनेविषे आहार जातीनो द्वार कह्या

इति ३१ मु आहार जातीनुं द्वार संपूर्ण

अथ बत्रीसमुं आहारइच्छाद्वार लिख्यते.

३२ मु आहारइच्छाद्वार ते चोवीस दंडकमा एकेक दंडकवालाने जघन्य तथा उत्कृष्ट आहार लेवानी इच्छा केटले कालें थाय तेनी विगत

सात नारकीना दंडकवालाने जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट १ अंतर्मुहूर्तें इच्छा उपजे

दश प्रकारना भवनपतीना दश दंडकवालाने आहार-

नी इच्छा उपजे तेनी विगत

१ जेनुं आउखुं दस हजार वर्षनुं छे तेने चोथ भ-
गतें आहार इच्छा उपजे

२ जेनु आउखु पल्योपमनुं छे तेने २ दाहाथी
९ दाहासुधी आहारइच्छा उपजे

३ जेनुं आउखु सागरोपमतुं छे तेने एक हजार वर्षे
आहारइच्छा उपजे

४ जेनु आऊखुं सागरोपमथी झाझेरू छे तेने एक
हजार वर्ष झाझेरे आहार इच्छा उपजे

पृथ्वीकाय दंडकवालाने समयें समयें आहारनी इ
च्छा उपजे

अप्पकायना दंडकवालाने समयें समये आहारनी इ-
च्छा उपजे

तेऊकायना दंडकवालाने समयें समयें आहारनी इच्छा
उपजे

वाऊकायना दंडकवालानें समये समये आहारनी इ-
च्छा उपजे

वनस्पतिकायना दंडकवालाने समये समये आहारनी
इच्छा उपजे

बेंद्रीना दंडकवाला एक समय जघन्य अने उत्कृष्ट
एक अंतर्मुहूर्ते आहारनी इच्छा उपजे

तेंद्री दंडकवालाने जघन्य एक समये अने उत्कृष्ट
एक अंतर्मुहुर्तें आहारनी इच्छा उपजे

चौरेंद्रीना दंडकवालाने जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक अंतर्मुहूर्त आहारनी इच्छा उपजे

तिर्यंच पंचेंद्रीवालाने आहार लेवानी इच्छा उपजे तेनी विगत

१ सम्मुर्छिम तिर्यंचने जघन्य एक समये अने उत्कृष्ट एक अंतर्मुहुर्त

२ गर्भज तिर्यंचने जघन्य एक अंतर्मुहुर्त अने उत्कृष्ट छठ भगते

मनुष्य दंडकवालाने आहारनी इच्छा उपजे तेनी विगत

१ सम्मुर्छिम मनुष्यने जघन्य एक समये अने उत्कृष्ट अंतर्मुहुर्त

२ गर्भज मनुष्यने जघन्य एक अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अठम भगते

वाणविंतरवाला दंडकने आहारनी इच्छा उपजे तेनी विगत

१ जेनु १० हजार वर्षनुं आऊखुं होय तेने चोथ भगते इच्छा उपजे

२ जेनुं आऊखुं पल्योपमनु होय तेने २ दाडाथी ९ दाडासुधी इच्छा उपजे

ज्योतीषीना दंडकवालाने जघन्य अने उत्कृष्ट २ दाडाथी ९ दाडासुधी आहारनी इच्छा उपजे

वैमानिक देवताना दंडकवालाने आहार लेवानी इच्छा उपजे तेनी विगत

१ जेनुं आउखु एक पल्योपमनुं होय तेने २ दाडा-
थी ९ दाडासुधी आहारनी इच्छा उपजे

२ जेनुं आउखुं सागरोपमनुं होय तेने एक हजार
वर्षे आहार इच्छा उपजे

३ जेनुं जेटला सागरोपम आउखुं छे, तेने तेटला
हजार वर्षे आहार इच्छा उपजे

४ छेल्ला सर्वार्थ सिद्धना देवतानु ३३ सागरोपमनुं
आऊखुं छे तेने ३३ हजार वर्षे आहारनी इच्छा
ऊपजे

ए रीतें २४ दंडकनेविषे आहारनी इच्छा उपजवानुं
द्वार कह्युं

इति बत्रीसमु आहार इच्छानु द्वार सपूर्णं



अथ तेत्रीसमुं कायास्थितिनुं द्वार लिख्यते

चोवीस दंडकमां एक एक दंडकने पोतानी कायाने-
विषे उपजवू केटला भव लग तेना कालनो परीमाण
लखीए छिये तेनी विगत

सात नारकीना दंडकवालानी पोतानी कायाविषें
जेटली भवस्थिति होय तेटली कालस्थिति जाणवी
ते माटे नारकीनो जीव मरीने नारकीमां न
जाय

दश प्रकारना भवनपतीना दशदंडकवाला देवता

मरीने भवनवर्ती न थाय

पृथ्वीकायनी कायास्थितीनी विगत

पृथ्वीकाय सुक्ष्मनी कायस्थिती जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट असंख्यानी उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी कालनी जाणवी

२ बादर पृथ्वीकायनी कायस्थिती जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट सीतेर कोडा कोडी सागरोपम

ए रीते पृथ्वीकायनी कायस्थिती कही अने जेने जेटली भवस्थिती तेनुं तटलु आऊखुं जाणवू

अप्पकायनी कायस्थिती पृथ्वीकायनी परे जाणवी

तेऊकायनी कायस्थिती पृथ्वीकायनी परे जाणवी

वाऊकायनी कायस्थिती पृथ्वीकायनी परे जाणवी

वनस्पतीकायनी कायस्थितीनी विगत

१ प्रत्येक वनस्पतीकाय जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्ट कायस्थिती सीतेर कोडा कोडी सागरोपमनी जाणवी

२ साधारण वनस्पतीकायनी कायस्थितीनी विगत.

१ सुक्ष्म निगोदनी कायस्थिती जघन्य एक अंतर्मुहुर्तने उत्कृष्ट असंख्य अवसर्पिणी काल लगे ते चौदराज लोकप्रमाणे असंख्य लोक कल्पवा तेमां जेटला आकाशप्रदेश छे एटली उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काल लगे रहे

२ बादर निगोदनी कायस्थिती जघन्य अंतर्मुहुर्त

अने उत्कृष्ट सितेर कोडाकोडी सागरोपम जाणवी

३ सूक्ष्म नीगोद बादरनीगोदपणे रहे तो कायस्थिती जघन्य अंतरमुहूर्त अने उत्कृष्ट अनंतो काल ते अनंती उत्सार्पणी अवसर्पिणी लगे एटले अढी पुद्‌गल परावर्त रहे

४ सूक्ष्मनी गोद बादरनीगोद प्रत्येक प्रत्येक थईने कायस्थिती रहे तो असख्य पुद्‌गल परावर्त होय

अंगुलना असंख्य भागना क्षेत्रमां जेटला आकाशप्रदेश छे तेटला पुदगल परावर्त जाणवा

ए रीते साधारण वनस्पतिकाय व्यवहार राशीनी कायस्थिती कही

ए रीते वनसपतिकायनी कायस्थिती कही

बेंद्रीनी कायस्थिती संख्याता वर्षनी जाणवी

तेंद्रीनी कायस्थिती संख्याता दिननी जाणवी

चोरेंद्रीनी कायास्थिती संख्याता मासनी जाणवी

तिर्यच पंचेंद्रीनी कायस्थिती सात आठ भवनी जाणवी

मनुष्यना दंडकवाल्हानी कायास्थिती सात आठ भवनी जाणवी

वाणविंतरनी कायास्थिती ते वाणविंतर मरीने देवतानी गतिमा न उपजे

ज्योतीषीनी कायस्थिती ते ज्योतीषी मरीने ज्यो
तीषी न थाय
वैमानिकना देवतानी कायास्थिती ते वैमानिक मरी-
ने वैमानिक न थाय
ए रीतें चोवीस दंडकनी कायस्थिती विवरीने कही
इती तेत्रीसमु कायास्थितीनुं द्वार संपूर्ण

अथ चोत्रीसमुं योनीद्वार लिख्यते.

१४ राजलोकमाहे जीवयोनी ८४ लाख छे ते चो-
वीस दंडकमा विवरीने लखीए छीए
सात नारकीना दंडकनेविषे चार लाख जीव-
योनी छे
दश प्रकारना भवनपतीना दश दंडक तथाव्यंतरनुं
एक दंडक तथा ज्योतीषीनु दंडक तथा वैमानिक
नुं एक ए तेर दंडकनेविषे चार लाख जीव
योनी छे
पृथ्वीकायना दंडकनेविषे ७ लाख जीवयोनी छे
अपकायना दंडकनेविषे सात लाख जीवयोनी छे
तेऊकायना दंडकनेविषे ७ लाख जीवयोनी छे
वाऊकायना दंडकनेविषे ७ लाख जीवयोनी छे
वनस्पतिकायना दंडकना दंडकनेविषे २४ लाख; जी-
वयोनी छे तेना २ भेद छे

१४ लाख साधारण वनस्पतीकायमां जीवयोनी छे
१० लाख प्रत्येक वनस्पतीकायमां जीवयोनी छे
बेंद्रीना दंडकनेविषे २ लाख जीवयोनी छे
तेंद्रीना दंडकनेविषे २ लाख जीवयोनी छे
चोरेंद्रीना दंडकनेविषे २ लाख जीवयोनी छे
तिर्यचपचेंद्रीना दंडकनेविषे ४ लाख जीवयोनी छे
मनुष्यपंचेंद्रीना दंडकनेविषे १४ लाख जीवयोनी छे
ए रीतें चोवीस दंडकनेविषे ८४ लाख जीवयोनी कही

इति चोत्रीसमुं योनीद्वार संपूर्ण

अथ पांत्रीसमुं कुलकोडीनुं द्वार लिख्यते.

३५ मा कुलकोडीनुं द्वार लखीए छीए ते कुलकोडी चोवीस दंडकमा कुलनी संख्या १९७५०००००००००० एक कोड साडीसताणूं लाख कोड एटली कुलकोडी छे ते चोवीस दंडकनेविषे विवरीने कहे छे

सात नारकीना दंडकवालाना २५ लाख कोडी एटला कुल जाणवा

देवताना १३ दंडकमा २६ लाख कोडीकुल जाणवा

पृथ्वीकायना दंडकनेविषे १२ लाख कोडीकुल जाणवा

अपकायना दंडकवालाने विषे ७ लाख कोडी कुल जाणवा

तेऊकायना दंडकवालामां ३ लाख कोडी कुल जाणवा

वाऊकायना दंडकवालामां ७ लाख कोडी कुल जाणवा

वनसपतीकायना दंडकवालामां २८ लाख कोडी कुल जाणवा

बेंद्रीना दंडकवालामा ७ लाख कोडीकुल जाणवा

तेंद्रीना दंडकवालामा ८ लाख कोडीकुल जाणवा

चोरेंद्रीना दंडकवालामा ९ कोडीकुल जाणवा

तिर्यंच पचेंद्रीना दंडकवालामा ५३॥ साडीत्रेपन लाख कोडीकुल जाणवा

तिर्यंच पचेंद्रीना पांच भेद छे तेनी विगत

१ जलचर तिर्यंचना १२॥ सडाबार लाख कोडी

२ थलचचरातिर्यंचना १० लाख कोडी

३ खेचरतिर्यंचना १२ लाख कोडी

४ उरपरीतिर्यंचना १० लाख कोडी

५ भुजपरीतिर्यंचना ९ लाख कोडी

ए रीते तिर्यंचपचेंद्रीना दंडकवालामां ५३॥ लाख कोडी कही

मनुष्यना दंडकवालामां १२ लाख कोडी कुल जाणवा

ए रीते चोवीस दंडकनी कुलकोडी कही

इति ३१ मुं कुलकोडीद्वार संपूर्ण.

इति ३५ द्वार समाप्त. ए रीते चोवीस दंडकनेविषे समुचयें करीने ३५ द्वारनो विचार संक्षेपे लख्यो छे एथी विशेष जीवविचार तथा संघयण तथा दंडक अने महादंडकथी अने वलीसूत्रसिद्धांतथी जाणवुं अने एमा भूलचुक लखाणी होय तेनो मिछामी दुकडं छे अने वांचनारा पुरुषों गुरुना मुखथकी निर्धे करीने वांचवुं.

श्री १४ गुणस्थानक उपर ४९ द्वार.

श्री समवायांग सूत्रमां १४ गुणस्थानक कह्या छे ते पर ४९ द्वार कहे छे तेना नाम लखिए छीए.

१ नामद्वार, २ लक्षणद्वार, ३ स्थितिद्वार ४ क्रियाद्वार, ५ सत्ताद्वार. ६ बंधद्वार, ७ उदयद्वार ८ उदीरणाद्वार, ९ निर्जराद्वार, १० भावद्वार, ११ करणद्वार, १२ परिषहद्वार, १३ आत्मद्वार, १४ संज्ञीअसज्ञीद्वार, १५ संज्ञाद्वार, १६ आहारिक अनाहारिकद्वार, १७ वेदद्वार, १८ प्राणद्वार, १९ पर्यायद्वार, २० शरीरद्वार, २१ कषायद्वार, २२ संघयणद्वार, २३ संस्थानद्वार, २४ समोसरण द्वार, २५ समुद्घातद्वार, २६ अवगाहनाद्वार, २७ कायद्वार, २८ जातिद्वार, २९ गतीद्वार, ३० दृष्टीद्वार, ३१ सम्यक्तद्वार, ३२ ज्ञानाज्ञानद्वार ३३ दर्शनद्वार, ३४ भवद्वार, ३५ संयमद्वार, ३६ चारित्रद्वार, ३७ नीयठाद्वार, ३८ भेदद्वार, ३९ गुणठाणाद्वार, ४० जागद्वार, ४१ उपयोगद्वार ४२ लेश्याद्वार, ४३ हेतुद्वार, ४४ मार्गनाद्वार, ४५ ध्यानद्वार, ४६ दंडकद्वार, ४७ जीवयोनीद्वार, ४८ सांतरनिरतरद्वार, ४९ अल्पबहुत्वद्वार

प्रथम नामद्वार लखीए छीए

१ मिथ्यात्व गुणस्थानक, २ सास्वादन गुणथतानक ३ मिश्र गुणस्थानक ४ अविरति सम्यक्दृष्टी गुण-स्थानक, ५ देशविरति गुणस्थानक, ६ प्रमत्त गुण-स्थानक, ७ अप्रमत्त गुणस्थानक, ८ अपूर्वकरण गुणस्थानक, ९ अनिवृत्ति गुणस्थानक, १० सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक, ११ उपशांत गुणस्थानक, १२ क्षीणमोह गुणस्थानक, १३ सयोगी गुणस्थानक, १४ अयोगी गुणस्थानक

नामद्वार संपूर्ण.

हवे लक्षणद्वार लखीए छीए.

प्रथम गुणठाणानुं लक्षण कहिए छीए श्री वीतराग-नी वाणी अधिकी ओछी प्ररूपे विपरीत सर्द्दहे जिन धर्म उपर मेला परिणाम राखे तेने मिथ्यात्व गुणठा-णुं कहे छे त्यारे गौतमस्वामी हाथ जोडी वंदना न-मस्कार करी श्री भगवंतने पूछे छे स्वामीजी ! आ जीवादिक पदार्थने क्रिया गुण प्राप्त थाय छे त्यारे कहे छे हे गौतम जीवरूप दडो कर्मरूप लकडी चार गति चोवीं दंडकने परीभ्रमण करे पण सिद्धिग ति नहीं पामे कही पण सुखसाता नहीं मिथ्यादृष्टी

संक्लिष्ट परिणामी नरक गतीनो बंध पाडे तो नाम कर्मनी २८ प्रकृतीनो बंध पाडे ते कहे छे.

१ नरक गति, २ पचेंद्री जाति, ३ वैक्रीय शरीर ४ तैजस शरीर, ५ कार्मण शरीर, ६ वैक्रीय शरीरना अंगोपांग, ७ हुडक संस्थान, ८ वर्ण, ९ गंध, १० रस, फरस खराब, ११ नरक अनुपूर्वी, १३ अगुरु लघुनाम १४ पराघात नाम, १५ उपघात नाम, १६ उसास नाम, १७ अप्रशस्त नाम १८ त्रस, १९ बादर, २० प्रत्येक नाम, २१ पर्याप्ति, २२ अस्थिर, २३ अशुभ, २४ दौर्भाग्य २५ दुःस्वर, २६ अनादेय, २७ अजस, २८ निर्माण नाम मिथ्या दृष्टी विकलेंद्री अपर्याप्ति रजन संक्लिष्ट परिणामी नाम कर्मनी २८ प्रकृतीनो बंध पाडे ते कहे छे. १ तिर्यंच गति, २ विकलेंद्रि जाती, ३ उदारिक शरीर, ४ उदारिकना अंगोपांग, ५ तेजस शरीर, ६ कार्मण शरीर, ७ छेवठो संघयण, ८ हुंडक संस्थान, ९ वर्ण, १० गंध ११ रस, ११ फरस, १२ तिर्यंचनी आनुपूर्वी, १४ अगुरु लघुनाम, १५ पराघात नाम, १६ उपघात, १७ उश्वास नाम, १८ अप्रशस्त नाम, १९ त्रस, २० बादर, २१ प्रत्येक, २२ अपर्याप्ति २३ अस्थिर, २४ अशुभ, २५ दौर्भाग्य, २६ दुःस्वर, २७ अनादेय, २८ अयश कीर्ती निर्माण मिथ्यात्व

गुणठाणे सन्नी मनुष्यातिर्यंचमां ७८ प्रकृतीनो बंध पाडे तथा मनुष्यगतीनो बंध पाडे तो नाम कर्मनी ७८ प्रकृतीनो बंध पाडे ते कहे छे. १ मनुष्यनी गति, २ पंचेंद्री जाती, ३ उदारिक शरीर, ४ वैक्रीय शरीर, ५ तेजस शरीर, ६ कार्मण शरीर, ७ उदारिक वैक्रीय अंगोपांग, ८ थी १२ उदारिक, वैक्रीय, तेजसकार्मण बंधन एवं १२ उदारिक, वैक्रीय, तेजसकार्मण, संघातन एव १६ संघयण ६ संस्थान ६ एव २८ वर्ण ५ गंध २ रस ५ फरस ८ एवं ४८ त्रस ४९ बादर ५० प्रत्येक ५१ पर्याप्ति ५२ स्थिर नाम ५३ शुभ ५४ सौभाग्य ५५, सुस्वर ५६, आदेय ५७, यशकीर्ती ५८ थावर, ५९सूक्ष्म, ६० साधारण, ६१ पर्याप्ति, ६२ अस्थिर, ६३ अशुभ, ६४ दौर्भाग्य, ६५ दुःस्वर, ६६ अनादेय, ६७ अयश कीर्तिनाम, ६८ अगुरुलघु ६९ पराघात नाम ७० उपघात ७१ उद्योत नाम ७२ आतप नाम ७३ उश्वास नाम ७४ प्रशस्त नाम, ७५ अप्रशस्त नाम, ७६ निर्माण नाम ७७ मनुष्यकी आनुपूर्वी, ७८ मिथ्यात्व गुणठाणे देवगतिनो बंध पाडे तो नाम कर्मनी २८ प्रकृतीनो बंध पाडे ते नारकीनी परें जाणवूं देवतामां शुभ अने नारकीमां अशुभ तथा अभव्य जीव मोहनी कर्मनी सत्ता आसरी प्रकृतीनो बंध पाडे तो सम्यक्त्व मोहनी

मिश्र मोहनी छोडीने पाडे तथा अन्य जीव मोहनी कर्मनी सत्ता आसरी २८ प्रकृतीनो बंध पाडे ए रीते प्रथम गुणठाणानुं लक्षण कह्यु

सास्वादन गुणस्थानना लक्षण कहे छे तेना ३ दृष्टांत छे प्रथम दृष्टांत तो आ छे के, केटलाक पुरुष घणा कालथी क्षुधातूर था तेने खीरखांड जिमाडे तो तथा तेने उलटी होवाथी किंचित् स्वाद बाकी रहे छे ते प्रमाणे सम्यक्त्व पाछो जाय तो वमन करी दिधा ते प्रमाणें सास्वादन साम्यक्त्व कहे तथा बीजो दृष्टांत घडीनो अवाज प्रथम तो गहीर, गंभीर शद्ब थाय ते प्रमाणे सास्वादन सम्यक्त्व कहवू तथा त्रीजो दृष्टांत आ छे के, जीवरूप आंबो परिणामरूप डाल सम्यक्त्वरूपी फल मिथ्यात्वरूपी धरती परिणामरूपी डालथी सम्यक्त्वरूपी फल टुटयु मिथ्यात्वरूपी भूमीउपर पड्यूं नहीं तेनेसास्वादन सम्यक्त्व केहवुं त्यारे गौतमस्वामी हाथ जोडीने वंदना नमस्कार करीने श्री भगवंतने पुछ्यू हे स्वामी आ जीवादिक पदार्थने शु गुण उत्पन्न थया त्यारे भगवंत कहे छे के, हे गौतम अर्ध पुद्गल परावर्त संसार परिभ्रमण करीने मुक्ति जासे ते आ दृष्टांतथी जाणवूं एम के, केटलाक पुरुषना शिरउपर देणुं घणा कालनुं हतुं केटलाक कमावतो अने देतो गयो हवे बाकी अर्ध रुपीयो रह्यो त्यारे आ कहे हवेतो माराथी पेदा होता नथी उपज थता तो सर्व देणुं उतरी जतुं एम

के २४३ राजलोकना अनंता पुद्गल परावर्तन करे त्यो ते ६ आंविलना उपगमसमकित फरसवे करी अनंता पुद्गल छेदे एक पुद्गलमाथी अर्ध्र पुद्गल बाकी रह्यो तेने फरता अनंतो काल लागे एवा गुण पेदा थया ए रीते सास्वादन गुणठाणानु लक्षण जाणवू.

मिश्र गुणस्थानकना लक्षण कहे छे. तनो दृष्टांत एम के, कांई एक नगरनाविषे साधुजी पधार्‍या घणा गुणवंत क्षमावंत त्यारे कोई एक जीव मनमा चिंतावणा करी के आज साधुजीने वंदना करवी एवा मनमा विचार करीने वंदननामाटे पग उचल्यो पछे परिणाम फरी गयो पग आगळ मुकी शक्या नहीं वळी पण दृष्टांत कहे छे के, श्रीखंडनो स्वाद मिठा समान समक्त्व खाटासम न मिथ्यात्व अनंता कालना उलटा हता तेने सुलटो कर्‍यो समकत्व सन्मुख बेठो पण पग आगळ मुकवाने समर्थ नहीं थयो त्यारे गौतमस्वामी हाथ जोडीने प्रश्न कर्‍यो के हे स्वामी आ जीवादिक पदार्थने शु गुण पेदा थया त्यारे भगवंत कहे छे के हे गौतम जीव अनंत कालनो कृष्णपक्षी हतो पछे शुक्लपक्षी थई. अर्ध पुद्गलमां संसारने राख्यो. प्रथम मलीन परिणाम हता पछे तेनुं उज्जल परिणाम थयुं समकत्व वंदवा फरसवा मोहनी कर्मनी २७ प्रकृती बंधनो थयो सम्यक्त्व मोहनी टळी. इति श्री मिश्र गुणठाणाना लक्षण.

अविरती सम्यक् दृष्टी गुणठाणाना लक्षण कहे छे तेनी प्रकृति ७ अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व मोहनी, सम्यक्त्व मोहनी, मिश्र मोहनी, ए सात उपर नव भाग कहे छे पहेला भागमां ४ प्रकृती खपावे प्रथम ३ प्रकृती उपशमावे तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहे छे तथा बीजा भागमा ५ प्रकृती पेहेली खपावे बे उपशमावे तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहे छे तिसरा भागमां ६ प्रकृती पहेली खपावी एक उपशमावे तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहे छे चोथा भागमा चार प्रकृती पहेली खपावे बे उपशमावे एक वेदे तेने क्षयोपशम वेदक सम्यक्त्व कहे छे पांचमा भागमा पांच प्रकृती खपावे एक उपशमावे एक वेदे तेने क्षयोपशम वेदक सम्यक्त्व कहे छे. छठा भागमा ६ प्रकृती उपशमावे एक वेदे तेने उपशम वेदक सम्यक्त्व कहे छे सातमा भागमा ६ प्रकृती खपावे एक वेदे तेने क्षायक वेदक सम्यक्त्व कहे छे आठमा भागमा सात प्रकृती उपशमावे तेने उपशम सम्यक्त्व कहे छे नवमा भागमा सात प्रकृती खपावे तेने क्षायक सम्यक्त्व कहे छे ए वखत जीवने चोथु गुणस्थानक आवे जीवादिक पदार्थना जाण थाय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, गुण थकी नवकारसी आदिथी करली तपनी सद्दहणा यथोक्त शुद्ध सम्यक्त्व पाळवुं त्यारे शिष्य पुछे छे के

हे भगवंत ए जीवादिक पदार्थने शुं गुण प्राप्त थयो भगवंत कहे छे के हे गौतम ए सम्यक्त्व दृष्टीना भला अध्यवसाय वर्तता थका एकांत सम्यक्त्वमां बंध पाडे सात स्थानक वरजीने एक वैमानिक देवनी गति बांधे सात स्थानक कहे छे नारकी १ भवनपती २ वाणव्यंतर ३ ज्योतीषी ४ तिर्यंच ५ स्त्रीवेद ६ नपुंसक वेद ७ ए सात स्थानक समांकित दृष्टी न बांधे एक वैमानिकमां जाय ते २९ प्रकृती कहे छे. आठावीस जा मिथ्यातगुणस्थानक देवगतीनो बंध पाडे ते जाणवा वळी एक तीर्थंकर नामकर्म ए २९ प्रकृतिनो बंध पाडे ४ गुणस्थानकना लक्षण संपूर्ण

देशविरती गुणस्थानकना लक्षण कहे छे तेनी प्रकृति ११ छे ७ पूर्वोक्त कह्या ते वे चार अप्रत्याख्यानी क्रोध मान माया लोभ ए ११ प्रकृतीनां उपशम करे त्यारे पांचमुं गुणस्थानक आवे जीवादिक पदार्थ ओळखे द्रव्यने द्रव्यथी ओळखे क्षेत्रना १४ राजलोक आकाशनी जाण थाय; कालथी समय समय आवालिकानो जाण थाय; भावथी वर्ण, गंध, रस, स्पर्शना पर्यायना भावनी जाण थाय, गुणथी जीवतत्व अजीवतत्व ज्ञान दर्शन चारित्र तपना पर्यायना भावना जाण होय. द्रव्य, क्षेत्र काल भाव गुणथी नवकारसीआदि वरसी तपनी सद्दहणा करवी,

शक्तिमुजब तप करवुं. शिष्य पूछे छे हे भगवंत ए जिवादिक पदार्थने शुं गुण थयो त्यारे भगवंत कहे हे गौतम, जघन्य ३ भव उत्कृष्ट १५ भवे मुक्ति मा जाय. इति पांचमां गुणठाणाना लक्षण संपूर्ण.

छठा प्रमाद गुणस्थानकना लक्षण कहे छे एनी प्रकृती १५ छे ११ प्रकृती पूर्वोक्त कही ते वळी ४ प्रकृती प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ ए १५ प्रकृतीनो उपशम करे त्यारे छठुं गुणस्थानक आवे जीवादिक पदार्थना जाण होय द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, गुणथी नवकारसीआदि लइने बारसी तपनी सद्दहणा तेना शक्ति अनुसार तप करवुं त्यारे शिष्य पूछे छे के हे भगवत ए जीवादिक पदार्थने शुं गुण थयो त्यारे भगवंत कहे छे के हे गौतम जघन्य एजभवे मध्यम त्रण भवे उत्कृष्ट पंधर भवे मुक्त्यां जाय इति छठा गुणस्थानकना लक्षण संपूर्ण

सातमा गुणस्थानकनुं लक्षण कहे छे एनी गाथा

मद्दविसय कषाय निंदाय विकहा पंच
भणिया पमाया जीवा पाडंती संसारे १

ए पंच प्रमाद त्यागे त्यारे जीव सातमा गुणस्थाने आवे तेनी प्रकृती १५ पूर्वोक्त प्रकृती बोल क्षयोपशम

करे त्यारे सातमा गुणस्थानके आवे जीव पदार्थनु जाणपणु थाय. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, गुणथी नवकारसी आदिथी वरसी तपनी सद्दहणा करवी शक्ति अनुसार तप करे त्यारे शिष्य पुछे छे ए जीवादिक पदाथने शुं गुण थयो त्यारे भगवंत कहे छे हे गौतम, जघन्य १, २, ३ भवे अने उत्कृष्ट ७, ८ भवें मुक्ति थाय इति सातमा गुणस्थानकना लक्षण संपूर्ण

आठमा गुणस्थानकना लक्षण कहे छे अपूर्व करण शुक्ल ध्यान आवे त्यारे आठमु गुणस्थानक आवे तेनी प्रकृती पंदर पूर्वोक्त जाणवी इहां व श्रेणी आरंभे १ उपसम श्रेणी १ क्षपक उपशम श्रेणी ते उपसमनुं लक्षण कहे छे ते पंदर प्रकृती उपशमावे त्यारे आठमुं गुणस्थानक थाय

हवे नवमा गुणस्थानकनुं लक्षण कहे छे तेनी प्रकृती २१ छे पंदर पूर्वोक्त अने हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, ए २१ प्रकृती उपशमावे त्यारे नवमु गुणस्थानक आवे

हवे १० मा गुणठाणाना लक्षण कहेछे तेनी प्रकृती २७ कहे छे २१ पूर्वोक्त तथा ६ वळी संज्वलन, क्रोध, मान, माया, २४ स्त्रीवेद २५ पुरुषवेद २६ नपुसकवेद २७ एवं ए प्रकृती अने उपसमावे त्यारे १० मुं गुणठाणुं आवे

हवे ११ मो गुणठाणाना लक्षण कहे तेनी प्रकृती २८ जेमां २७ पूर्वोक्त अने एक संज्वलनो लोभ मेळवता एवं २८ उपसमावे त्यारे ११ मुं गुणठाणुं आवे त्यां काल करे तो सर्वार्थसिद्ध विमानमां जाय अगर निचा पडे तो १०।९।८।७।६ मां आवे पछी पेहेला गुणठाणामां आवी पडे त्यारे शिष्य पूछे के, भगवंत आ जीव उपर चढी केम पडे छे त्यारे भगवंत कहे के, हे गौतम, जीवे मोहनी कर्म उपसमाव्युं हतुं पण क्षय कर्युं हतुं तेथी पाछो पडे.

हवे क्षपक श्रेणीनुं लक्षण कहे छे. पूर्वोक्त १५ प्रकृति खपावे त्यारे आठमे गुणठाणे आवे पूर्वोक्त २१ प्रकृति खपावे त्यारे ९ मे गुणठाणे आवे पूर्वोक्त २७ प्रकृति खपावे त्यारे १० मे गुणठाणे आवे त्या संज्वलन सूक्ष्म लोभ जे रह्यो हतो ते खपावी ११ मु गुणठाणुं ओलंघी १२ में गुणठाणे आवे त्यां ३ जानना लाडवा कोई साधुए चुरेला हता पण परठव्या नहीं. जेम ३ घनघातिया कर्म ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अंतराय ए खपावी बारमा गुणठाणाथी १३ मे गुणठाणे आवे त्यां १० बोल प्रगट थाय छे. वा लाव्या आवे छे ते कहे छे, शरीर१ सयोगी २ सलेसी ३ शुक्लेसी ४ शुक्लध्यान ५ पंडित वीर्य ६ क्षायकसमकित ७ यथाख्यात चारित्र ८ केवळज्ञान ९ केवळदर्शन १० ए दश बोल

तेरमा गुणठाणासुधी होय छे तेरमां गुणठाणाथी चऊद्मा गुणठाणामां जाय त्यां सात बोल साथे लेई जाय. सयोगी १ सलेसी २ शुक्ललेसी ३ ए त्रण बोल दशमाथी छुटी गया

हवे चौदमां गुणठाणाना लक्षण कहे छे ४ अघाती कर्म खपावी मोक्षमां जाय. त्यां ३ बोल साथे लेई जाय क्षायकसमकित १ केवलज्ञान २ केवलदर्शन ३

इति लक्षणद्वार संपूर्ण.

हवे स्थितीद्वार कहे छे

पेहेला गुणठाणानी त्रण प्रकारनी स्थिती छे अणादिया अपज्जवसिया जे मिथ्यात्वनी आदि अने अंत नथी ते अभव्य जीव आश्रयी जाणवा अणाइया सपज्जवसिया बे ते मिथ्यात्वनी आदि नथी पण अंत छे ते भव्य जीवनो मिथ्यात्व आश्रय जाणवो तथा साइया सपज्जवसिया ते जे मिथ्यात्वने आदि, अंत बन्नो छे ते पडवाइसम्द दिठीनो मिथ्यात्व आश्रय तेनी स्थिती जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्टो अर्धपुद्गल परावर्तन देसे ऊणी जाणवी पछी अवश्य समकित पामी मोक्ष जाय. बीजा गुणठाणानी स्थिती जघन्य समय उत्कृष्ट ६ आवलिका सात समयनी त्रिज

गुणठाणानी स्थिती जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी चोथा गुणठाणानी स्थिती जघन्य अंतर्मुहूर्तनी उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झाझेरा २२ सागरोपमनी स्थिती ३ वखत १२ देवलोकमां उपजे त्रण पूर्व कोडी मनुष्य ना भव आश्रयी जाणवो अगर बे वखत अनुत्तर विमानमां ३३ सागरोपमनी स्थितीए उपजे ३३ व मणी ६६ सागरोपम अने पूर्व कोडी ३ अधिक मनुष्यभव जाणवी पांचमा, छठा अने तेरमां गुणठाणानी स्थिती जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्ट देशे उणी पूर्व कोड सात, आठ, नव, दश, अग्यारनी जघन्य १ समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी बारमा गुणठाणानी जघन्य उत्कृष्टी अंतर्मुहुर्तनी तेरमा गुणठाणानी जघन्य अंतर्मुहुर्त उत्कृष्ट देश उण कोड पूर्व चौदमां गुणठाणानी स्थिती पांच लघु अक्षरनी अ, इ, उ, ऋ, ऌ एटलुं उच्चारण काळ जाणवी.

इति स्थितीद्वार संपूर्ण.

हवे चोथुं क्रियाद्वार कहे छे.

मूल पांच क्रिया आरंभिया १ परिग्रहीया २ माया वत्तीया ३ अपच्चक्खाणिया ४ मिथ्यादर्शनवत्तीया ५ हवे पहेलातीजा गुणठाणामां पांचे क्रिया लाभे बीजा चोथा गुणठाणामां ४ लाभे मिथ्यात्व टल्युं पांचमे गुण

ठाणे ३ क्रिया लाभे अपच्चख्काणिया टली छठे गुणठाणे २ क्रिया लाभें परिग्राहिया टली ७।८।९।१० मे गुणठाणे एक क्रिया लाभे आरंभियाटली ११।१२।१३।१४ मे गुणठाणे पांच क्रियामांथी केई क्रिया नथी। २५ प्रकारनी उत्तरक्रिया कहे छे. १।३ गुणठामां २४ क्रिया लाभे इर्यावहि क्रिया छोडी। बीजे चोथे गुणठाणे २३ क्रिया लाभे इर्यावही अने मिथ्यात्वनी ए बे छोडी पांचमे गुणठाणे २२ क्रिया लाभे मिथ्यात्व अविरती इर्यावही ए त्रण छोडी छठा गुणठाणामां २ क्रिया लाभे आरंभिया मायावत्तिया सातमां गुणठाणाथी दशमासुधी मायावत्तिया क्रिया लाभे अग्यार बार तेर ए त्रण गुणठाणामां इर्यावहि क्रिया लाभे चौदमामां कोई क्रिया नथी.

इति क्रियाद्वार संपूर्ण

हवे सत्ताद्वार कहे छे.

पेहेला गुणठाणाथी ११मा सुधी ८ कर्मनी सत्ता १२ में गुणठाणे ७ कर्मनी सत्ता मोहनी कर्म वर्ज्यो तेरमे चौदमे गुणठाणे चार अघाती कर्मनी सत्ता.

इति सत्ताद्वार संपूर्ण.

हवे बंधद्वार कहे छे.

पेहेला गुणठाणेथी त्रीजू गुणठाणु छोडी सातमासुधी ८ कर्म अगर ७ कर्म बांधे. सात बांधे त्यारे आउखुं छोडी त्रीजे आठमे नवमे गुणठाणे कर्म बांधे आउखुं छोडी दश-मे गुणठाणे ६ कर्म बांधे आउखुं मोहनी छोडी ११ १२।१३ ए त्रण गुणठाणे साता वेदनी कर्म बांधे १४ मे गुणठाणे बंध नथी.

इति बंधद्वार संपूर्ण

हवे उदयद्वार कहे छे.

पेहेला गुणठाणाथी दशमासुधी ८ कर्मोना उदय ११।१२ मामां मोहनी कर्म छोडी सात कर्मोनो उ-दय १३।१४ मा गुणठाणे ४ अघाती कर्मनो उदय.

इति उदयद्वार संपूर्ण

हवे उदीरणा द्वार कहे छे.

हवे गुणठाणाथी त्रीजू गुणठाणु छोडी छठा गुणठा सुधी ७।८ कर्म उदिरे ७ उदिरे त्यारे आयुकर्म व-र्जवू ३ गुणठाणे आठ कर्म उदिरे ७।८।९ मा ६ क-र्म उदिरे आयु वेदनी छोडी १० मे गुणठाणे ६ त-

था ५ उदिरे ६ प्रथम कह्या तेज पांच उदिरे तो मोहनी छुटे ११ मे गुणठाणे ५ कर्म उदिरे दशमा प्रमाणे १२ मे गुणठाणे ५ कर्म उदिरे तेज तथा नाम, गोत्र, कर्म उदिरे १३ मे गुणठाणे नाम, गोत्र, कर्म उदिरे १४ मे गुणठाणे उदिरणा नथी।

इति उदिरणाद्वार संपूर्ण.

हवे निर्जराद्वार कहे छे

पेहला गुणठाणाथी १० मा गुणठाणासुधी ८ कर्म निर्जरे ११।१२ गुणठाणे ७ कर्म निर्जरे मोहनी कर्म छोडी १३।१४ मे गुणठाणे ४ अघाती कर्म निर्जरे

इति निर्जराद्वार संपूर्ण.

हवे भावद्वार कहे छे.

५ भावोना नाम उदयभाव १ उपशम भाव २ क्षायक भाव ३ क्षयोपशम भाव ४ परिणामिक भाव ५ १।२।३ गुणठाणामा ३ भाव लाभे उपशम क्षायक छुटे चोथा गुणठाणाथी ११ मा सुधी ५ भाव लाभे १२ मामा ४ लाभे उपशम छुट्युं १३।१४ मा गुणठाणे ३ भाव लाभे उदय क्षायक परिणामिक

इति भावद्वार संपूर्ण

हवे कारणद्वार कहे छे.

५ कारण छे १ मिथ्यात्वकारण, २ अविरति, ३ प्रमाद, ४ कषाय, ५ योग १।३ गुणठाणामां ५ कारण लाभे २।४ गुणठाणामां ४ कारण लाभे मिथ्यात्व छुट्युं ५।६ गुणठाणामां ३ कारण लाभे मिथ्यात्व, अविरति छांडी ७।८।९।१० मा २ कारण लाभे कषाय ने योग ए बे लाभे ११।१२।१३ माना १ कारण लाभे योग एक १४ मामां कारण नथी.

इति कारणद्वार संपूर्ण.

हवे परिसह द्वार कहे छे

२२ परिसह छे आयुकर्मना उदयथी परिसह उपजे ते छे ज्ञानावरणी कर्मना उदयथी २ परिसह उपजे २०।२१ दर्शनावरणी कर्मना उदयमां परिसह नथी वेदनी कर्मना उदयथी ११ परिसह उपजे १।२।३।४।५।९।११।१३।१६।१७।१८ मोहनी कर्मना उदयथी परिसह उपजे तेना २ भेद छे समकित मोहनीना उदयथी १ परिसह उपजे २२ मां चारित्र मोहनी कर्मना उदयथी ७ परिसह उपजे ६।७।८ १०।१२।१४।१९ आऊखु नाम कर्म अने गोत्र कर्मना उदयमां परिसह नथी अंतराय कर्मना उदये एक अलाभ परिसह उपजे १५ मां १ गुणठाणाथी ९ मा गुणठाणासुधी २२ परिसह उपजे ते मध्ये २० व-

दे २ ना वेदे शीत होय त्यां उष्ण नहीं उष्ण होय त्यां शीत नहीं चरिया होय त्यां निसिया नही निसिया छे त्यां चरिया नहीं १०।११।१२। मे गुणठाणे चौद परिसह उपजे मोहनी कर्मना ८ परिसह वर्ज्या तेमांथी १२ वेदे २ न वेदे १३।१४ मां गुणठाणामां ११ परिसह उपजे तेमां ९ वेदे २ न वेदे २ वेदवेदनी कर्मना ११ परिसह जाणवा

इति परिसहद्वार संपूर्ण

हवे आत्माद्वार कहे छे.

आत्माना आठ भेद छे १ द्रव्यआत्मा, २ कषायआत्मा, ३ योगआत्मा, ४ उपयोगआत्मा, ५ ज्ञानआत्मा, ६ दर्शनआत्मा, ७ चारित्रआत्मा ८ वीर्यात्मा. ए आठ आत्मामांथी १।३ गुणठाणामा ६ आत्मा लाभे ज्ञानात्मा, चारित्रात्मा छुटी गया ३।४ ५ मां गुणठाणामा ७ आत्मा लाभे चारित्रात्मा छोडी ६ थी १० मा सुधी ८ आत्मा लाभे ११।१२।१३ मांमां ७ आत्मा लाभे कषायआत्मा छुट्यो १४ मामा ६ आत्मा लाभे कषाय योगात्मा छुटी गयो.

इति आत्माद्वार संपूर्ण.

हवे सन्नीअसन्नीनुं द्वार कहे छे.

१।२। गुणठाणामां सन्नीअसन्नी बे लाभे ३ आ गुणठाणाथी १४ सुधी एकलुं सन्नी लाभे.

इति सन्नीअसन्नी द्वार संपूर्ण.

हवे संज्ञाद्वार कहे छे.

संज्ञा ४ छे. आहारसंज्ञा १ भयसंज्ञा २ मैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहसंज्ञा ४. १ गुणठाणाथी ६ सुधी संज्ञा छे १४ सुधी संज्ञा नथी.

इति संज्ञाद्वार संपूर्ण.

हवे आहारिक अणाहारिकद्वार कहे छे.

१।२।४।१३ ए चार गुणठाणामां आहारिक अणाहारिक बने लाभे ३।५।६।७।८।९।१०।११।१२ ए गुणठाणामां एक आहारिक लाभे अने १४ मुं गुणठाणु अणाहारिक छे.

इति आहारिक अणाहारिकद्वार संपूर्ण.

हवे वेदद्वार कहे छे.

वेद ३ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद २ नपुंसकवेद ३ प्रथम गुणठाणा थी ९ मां गुणठाणा सुधि वेद ३ लाभे दश

माथी १४ सुधीं वेद नथी.

इति वेदद्वार संपूर्ण.

हवे प्राणद्वार कहे छे

प्राण १० छे प्रथम गुणठाणाथी १२ सुधीं १० प्राण लाभे १३ मा गुणठाणे ५ प्राण लाभे पांच इंद्रि टली १४ मांमा १ आयुष्यबल प्राण लाभे.

इति प्राणद्वार संपूर्ण

हवे पर्यायद्वार कहे छे

पर्याय ६ छे प्रथम गुणठाणाथी १२ गुणठाणासुधी ६ पर्याय लाभे १३ मामा ५ पर्याय लाभे इंद्री पर्याय छूटी गयो चौदमामा १ शरीर पर्याय लाभे.

इति पर्यायद्वार संपूर्ण

हवे शरीरद्वार कहे छे.

शरीर ५ छे १ उदारिक शरीर २ वैक्रिय शरीर ३ आहारक शरीर ४ तेजस शरीर ५ कारमण शरीर ए पाचमाथी १।२।३।४।५ ए पांच गुणठाणामा ४ शरीर लाभे १ आहारक छोडी ६।७ मामा ५ शरीर लाभे ८ माथी १४ मासुधी ३ शरीर लाभे उदा-

रिक, तेजस्, कारमण

इति शरीरद्वार संपूर्ण.

हवे कषायद्वार कहे छे.

कषाय २५ छे तेना नाम अनुतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ ए ४ प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ एह ४ संजलन क्रोध, मान, माया, लोभ एवं १६ हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुर्गच्छा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद २५ ए २५ मांथी १।२ गुणठाणे २५ कषाय लाभे ३।४ गुणठाणे २१ कषाय लाभे अनुतानीनी चोकडी छुटी गई ५ मामां १७ कषाय लाभे अप्रत्याख्यानी ४ छुटी ६।७।८ गुणठाणामा १३ कषाय लाभे चार प्रत्याख्यानी टली गया ९ मामा ७ कषाय लाभे संजलननी चोकडी अने ३ वेद ए ७ लाभे दशमामा १ संजलनना लोभ लाभे ११।१२।१३।१४ मे गुणठाणे कषाय नथी.

इति कषायद्वार संपूर्ण.

हवे संघयण द्वार कहे छे

संघयण ६ छे प्रथम गुणठाणाथी ७ मा सुधी ६ संघयण लाभे ८।९।१०।११ ए चारमा प्रथमना ती-

न संघयण लाभे १२।१३।१४। ए त्रणमां ए ऋषभ नाराच संघयण लाभे.

इति संघयणद्वार संपूर्ण

हवे संठाण द्वार कहे छे

प्रथम गुणठाणाथी १४ गुणठाणा सुधी ६ संठाण लाभे

इति संठाणद्वार संपूर्ण

हवे समोसरण द्वार कहे छे

समोसरण ४ छे १ क्रियावादी २ अक्रियावादी ३ अज्ञानवादी ४ विनयवादी प्रथम गुणठाणे समोसरण ३ लाभे क्रियावादी टळी गयुं २ जे गुणठाणे १ क्रियावादी लाभे ३ गुणठाणे समोसरण २ लाभे अज्ञानवादी विनयवादी २ चोथा गुणठाणाथी १४ मा गुणठाणासुधी एक क्रियावादी लाभे

इति समोसरणद्वार संपूर्ण.

हवे समुद्घातद्वार कहे छे.

समुद्घात ७ छे तेमांथी १।२।४।५ गुणठाणामां समुद्घात ५ पहेली लाभे २ जा गुणठाणामां समुद्-

घा१ ३ पहेली लाभे ६ ठा गुणठाणामा समुद्घात ६ लाभे केवळ समुद्घात वर्जी ७ मा गुणठाणाथी वारमा गुणठाणासुधी समुद्घात नथी तेरमामा १ केवली समुद्घात लाभे चौदमा गुणठाणामा समुद्घात नथी.

इति समुद्घातद्वार संपूर्ण.

हवे अवगाहनाद्वार कहे छे.

पेहेला बीजा त्रीजा चोथा गुणठाणानी अवगाहना जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्ट १००० जोजन पांचमा गुणठाणानी जघन्य अंगुलनो असख्यातमो भाग उत्कृष्ट १००० जोजन छठा गुणठाणाथी १४ मा [illegible] जघन्य पृथक्त हाथनी उत्कृष्ट ५०० धनुष्यनी

इति अ[illegible]हना[illegible] संपूर्ण.

हवे कायद्वार कहे छे

काय ६ छे ते कहे छे प्रथम गुणठाणामा काय ६ लाभे २ जा गुणठाणाथी १४ गुणठाणा सुधी एकत्रस काय लाभे

इति कायद्वार संपूर्ण

हवे जातिद्वार कहे छे.

जाति ५ छे प्रथम गुणठाणे जाति ५ लाभे २ गुणठाणे जाति ४ लाभे एकेंद्री छुटी गई ३ जा गुणठाणाथी १४ मा सुधी एक पंचेंद्री जाति लाभे.

इति जातिद्वार संपूर्ण.

हवे गतिद्वार कहेछे.

प्रथमना ४ गुणठाणा ४ रे गतिमा लाभे पांचमुं गुणठाणुं मनुष्य तिर्यंच ए बे गतिमा लाभे छठा गुणठामाथी १४ गुणठाणा सुधी एक मनुष्य गतिमा लाभे पेहेला बीजा गुणठाणामा काल करेतो ४ गतिमां जाय ३ जा गुणठाणामा काल नही करे चोथा गुणठाणामा काल करेतो मनुष्य देव ए बे गतिमां जाय पांचमा गुणठाणाथी ११ मा सुधी काल करे तो १ देवगतिमां जाय

इति गतिद्वार संपूर्ण

हवे दृष्टीद्वार कहे छे.

दृष्टि ३ छे प्रथम गुणठाणे एक मिथ्यादृष्टि लाभे २ जें गुणठाणे एक समकितदृष्टि लाभे ३ जे गुणठाणे एक समामिथ्यादृष्टि लाभे चोथाथी चौदमासुधी सम-

कितदृष्टि लाभे

इति दृष्टिद्वार संपूर्ण.

हवे समकित द्वार कहे छे

समकित ५ छे पेहला अने तीजा गुणठाणामा समकित नथी बीजामा सास्वादान समकित लाभे चोथा गुणठाणाथी ७ मा सुधी समकित ४ लाभे सास्वान छोडी आठमा नवमा गुणठाणामा ३ समकित लाभे उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायक ३ दशमा अग्यारमामा २ समकित-लाभे उपशम १ क्षायक २ बारमा तेरमा चौदमा गुणठाणे अने सिद्धमा क्षायक समकित लाभे

इति समकितद्वार संपूर्ण

हवे ज्ञानअज्ञानद्वार कहे छे.

तेमां ज्ञान ५ अज्ञान ३ ते कहे छे पहेला अने तीजा गुणठाणामा ३ अज्ञान लाभे बीजा, चोथा अने पांचमामा ३ ज्ञान लाभे छठा गुणठाणाथी १२ मा गुणठाणासुधी ४ ज्ञान लाभे-१३।१४ मा गुणठाणामा एक केवलज्ञान लाभे.

इति ज्ञानअज्ञानद्वार संपूर्ण.

हवे दर्शनद्वार कहे छे

दर्शन ४ छे प्रथम गुणठाणाथी १२ गुणठाणा सुधी दर्शन ३ लाभे १३।१४ मांमा एक केवल दर्शन लाभे

इति दर्शनद्वार संपूर्ण

हवे भव्यद्वार कहे छे

पेहेला गुणठाणे भव्यअभव्य लाभे बीजाथी १४ मा सुधी एक भव्य लाभे

इति भव्यद्वार संपूर्ण

हवे संयमद्वार कहे छे

प्रथम गुणठाणाथी १ असयम लाभे ५ मा गुणठाणामा संजमासंजम लाभे ६ गुणठाणाथी १४ गुण ठाणासुधी १ संयम लाभे

इति संयमद्वार संपूर्ण

हवे चारित्रद्वार कहे छे.

चारित्र पांच प्रकारनुं छे प्रथम गुणठाणाथी ५ मा सुधी चारित्र नथी ६।७ मा गुणठाणामा ३ चारित्र

लाभे सामायक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहार विशुद्धी ३ आठमा नवमामा २ चारित्र लाभे सामायक १ छेदोपस्थापनीय २ दसमा गुणठाणामामा १ सूक्ष्म संपराय चारित्र लाभे ११।१२।१३।१४ ए चार गुणठाणामा १ यथाख्यात चारित्र लाभे

इति चारित्रद्वार संपूर्ण

हवे नियंठा द्वार कहे छे

नियठा ६ छे पुलाक १ बकुस २ परिसलेवणा ३ कषायकुशील ४ स्नातक १।२।३।४।५ ए पांचमा नियंठा नथी ६।७ मा नियठा ४ प्रथमना लाभें ८।९ मामा नियंठा ३ पेहेला छोडी लाभे १० मा गुणठाणामा १ कुशील लाभे ११।१२ मा गुणठाणे नियंठा १ लाभे १३।१४ मामा एक स्नातक लाभे

इति नियठा द्वार संपूर्ण

हवे जीवभेदद्वार कहे छे

पेहेले गुणठाणे जीवना भेद १४ लाभे २ गुणठाणे जीवना भेद ६ लाभे ३ जे गुणठाणे जीवनो भेद १ सन्नी पंचेंद्रिपर्याप्ति चोथा गुणठाणामा जीवना भेद २ संज्ञी पंचेंद्रिना पर्याप्ता अपर्याप्तो पांचमा गुण

ठाणाथी १४ मा गुणठाणासुधी जीवनो १ भेद संज्ञी पंचेंद्रि पर्यासो लाभे

इति भेदद्वार संपूर्ण

हवे गुणठाणा द्वार कहे छे

गुणठाणा १४ पोताना ठेकाणे जाणवा त्राटव्हेते जीवमा गुणठाणा ३ जाणवा पेहला वीजा चोथा ती-र्थंकर ४।५ गुणठाणा फरसे नही १।२।३।५।११ ती र्थंकर गोत्र ४ गुणठाणे वांधे ४।५।६।७ ए चारमा

इति गुणठाणा द्वार संपूर्ण

हवे योगद्वार कहे छे

योग १५ छे १।२ गुणठाणे योग १३ लाभे आहारक १ आहारक मिश्र २ टली गया त्रीजे गुणठाणे योग १० लाभे चार मनना चार वचना १ उदारिक १ वैक्रीय एव १० चोथे गुणठाणे योग १३ लाभे आहारक १ आहारक मिश्र एव व छूटी गया पांचमे गुणठाणे योग १२ लाभे वे आहारकना एक कार्मणकाययोग एवं ३ छूटी गया छठे गुणठाणे योग १४ लाभे कार्मण टल्या सातमे गुणठाणे योग ११ लाभे ४ मनना ४ वचनना १ उदारिक १ वैक्रीय

१ आहारक एवं ११ आठमा गुणठाणाथी १२ मा सुधी योग ९ लाभे ४ मनना ४ वचनना १ उदारिक एवं ९ तेरमे गुणठाणे योग ७ लाभ २ मनना २वचनना १ उदारिकमिश्र १ उदारिक १ कार्मण एवं ७ चौदमे गुणठाणे योग नथी.

इति योगद्वार संपूर्ण

हवे उपयोग द्वार कहे छे

उपयोग १२ छे ५ ज्ञानना ३ अज्ञानना ४ दर्शनना एव १२ छे तेमाथी १।३ गुणठाणे ६ उपयोग लाभे ३ अज्ञान ३ दर्शन ए ६ लाभे ४।५ मां उपयोग ६ लाभे ३ ज्ञानना ३ दर्शनना ६ गुणठाणाथी-१२ सुधी उपयोग ७ लाभे ४ ज्ञान ३ दर्शन १३, १४ मामा उपयोग २ लाभे केवलज्ञान केवलदर्शन

इति उपयोगद्वार संपूर्ण

हवे लेश्याद्वार कहे छे.

लेश्या ६ छे पहेला गुणठाणाथी ६ सुधी लेश्या ६ लाभे ७ मे गुणठाणे लेश्या उपरनी ३ लाभे ८ गुणठाणाथी १३ मा सुधी लेश्या एक शुक्ल लाभे १४

मामा लेश्या नथी.

इति लेश्याद्वार संपूर्ण.

हवे हेतुद्वार कहे छे

हेतु ५७ छे ५ मिथ्यात्व १ आभिग्रहीत २ अनाभिग्रहीत ३ अभिनिवेशक ४ अनाभिनिवेशक ५ अनाभाग योग १५ अविराति १२ ते कहे छे ६ कायनी ५ इंद्रीनी १ मननी एवं १२ सर्व ३२ कषाय १६ नोकषाय ९ एवं ५७ एमाथी १ गुणठाणे हेतु ५५ लाभे आहारक १ आहारक मिश्र २ छुटे. २ जा गुणठाणे हेतु ५० लाभे ५ मिथ्यात्व टली गयुं ३ जामा हेतु ४४ लाभे ४ कषाय टले अनुतानबंधी १ उदारिकमिश्र १ वैक्रीयमिश्र १ कार्मण एवं ७ टली गया शेष रह्या ४३ अने १ अणाभोग मिथ्यात्व लाभे ए ४४ लाभे चोथा गुणठाणामा ४६ हेतु लाभे १ उदारिकमिश्र १ वैक्रीयमिश्र १ कार्मण एमाथी १ मिथ्यात्व गयु शेष ४६ लाभे पांचमा गुणठाणामा हेतु ४० लाभे अप्रत्याखानीनी चोकडी ४ त्रसनी अविरती १ कार्मणयोग ए ६ छुटी गया शेष ४० रह्या छठे गुणठाणे हेतु २७ लाभे ११ अविरती टली प्रत्याख्यानीनी चोकडी टली शेष रह्या २५ आहारक १ आहारकमिश्र ए २ वध्या एव २७ लाभे ७ मे

गुणठाण हेतु २४ लाभे उदारिक वैक्रीय आहारकामिश्र टल्या ८ मे गुणठाणे हेतु २२ लाभे आहारक १ वैक्रीय २ योग टल्या ९ मा गुणठाणामा हेतु १६ लाभे हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुर्गंछा ए ६ टल्या १० मामां हेतु १० लाभे ३ वेद टल्या संजलना क्रोध मान माया टल्या ११।१२ मा हेतु ९ लाभे १ संजलना लोभ टली गयो १३ मामा हेतु ७ लाभे २ मनना २ वचनना १ उदारिक १ उदारिकमिश्र १ कार्मण ए लाभे १४ मामां हेतु नथी॰

इति हेतुद्वार संपूर्ण

हवे मार्गणाद्वार कहे छे.

१ ला गुणठाणानी मार्गणा ४ त्रीजा, चोथा, पांचमा, सातमा गुणठाणामा जाय २ जा गुणठाणानी १ मार्गणा पहेले गुणठाणे जाय ३ जा गुणठाणानी ४ मार्गणा ३ गुणठाणानो निकल्यो १।४।५।७ गुणठाणे जाय चोथा गुणठाणानी ५ मार्गणा १।२।३।५।७ गुणठाणे जाय ५ मा गुणठाणानी ५ मार्गणा १।२।३।४ ७. छठा गुणठाणानी ६ मार्गणा १।२।३।४।५।७ गुणठाणे जाय ७ मा गुणठाणानी २ मार्गणा ६।८ मामा जाय काल करेतो ४ मा जाय ८ मा गुणठाणानी २ मार्गणा ७।९ मामा जाय काल करेतो ४ गुणठाणे

जाय ९ मा गुणठाणाना ३ मार्गणा ८।१० मामा जाय काल करेतो ४ गुणठाणामा जाय १० मे गुणठाणे ४ मार्गणा ९।११।१२ मा जाय काल करेतो ४ थे गुणठाणे जाय ११ मे गुणठाणे २ मार्गणा १० मा गुणठाणामा जाय काल करेतो ४ मा जाय १२ मा गुणठाणानी १ मार्गणा १३ मे गुणठाणे जाय १३ मा गुणठाणानी १ मार्गणा १४ मे गुणठाणे जाय १४ मा गुणठाणानी मार्गणा नथी.

इति मार्गणाद्वार सपूर्ण.

हवे ध्यानद्वार कहे छे

ध्यान चार छे १।२।३ गुणठाणामा ध्यान २ लाभे आर्त १ रौद्र २ चोथा गुणठामा ध्यान ३ लाभे आर्त १ रौद्र २ धर्म ३ पांचमे गुणठाणे ध्यान ३ पूर्वोक्त जाणवा ६ गुणठाणे ध्यान २ लाभे आर्त १ धर्म २ सातमे गुणठाणे १ धर्मध्यान लाभे ८ माथी १४ सुधी एक शुक्लध्यान लाभे

इति ध्यानद्वार सपूर्ण

हवे दंडकद्वार कहे छे.

दंडक २४ छे पेहेले गुणठाणे दंडक २४ लाभे बीजे गुणठाणे दंडक १९ लाभे ५ थावर टल्या ३।४

गुणठाणामा दंडक १६ लाभे ५ थावर ३ विगलेंद्री टली गया पांचमे गुणठाणे दंडक २ लाभे मनुष्य १ तिर्यंच २ छठा गुणठाथी १४ मा सुधी १ मनुष्यनुं दंडक लाभे

इति दंडकद्वार संपूर्ण.

जीवयोनी द्वार कहे छे

चोरासी लाख जीवयोनी छे १ गुणठाणे ८४ लाख जीवायोनी लाभे २ गुणठाणे ३२ लाख जीवायोनी लाभे ५ थावरनी ५२ लाख जीवायोनी टली ३ गुणठाण २६ लाख जीवायोनी लाभे ५ थावरनी ५२ लाख जीवायोनी टली ३ गुणठाणे २६ लाख जिवायोनी लाभे ५ थावरनी ५२ लाख ३ विगलेंद्रीनी ६ लाख एवं ५८ लाख टली ४ गुणठाणे २६ लाख जीवायोनी लाभे ३ जा गुणठाणा प्रमाणे जाणवु ५ मा गुणठाणे १८ लाख जीवायोनी लाभे १४ लाख मनुष्य ४ लाख तिर्यंच एम १८ लाख जाणवा ६ गुणठाणाथी १४ मा गुणठाणा सुधी चौद लाख जीवायोनी मनुष्यनी जाणवी

इति जीवायोनी द्वार संपूर्ण

हवे सांतरनिरंतर द्वार कहे छे

१४ गुणठाणानुं आंतरु पडे ते कहे छे पेहेले गुणठाणे आंतरो जघन्यं अंतरमुहुर्त १ उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झाझेरो पडे २ जे गुणठाणाथी ११ मा गुणठाणासुधी आंतरो पडेतो जघन्य अंतरमुहूर्त उत्कृष्ट देश उणो अर्ध पुद्गल १२।१३।१४ मे गुणठाणे आंतरा नथी निरंतर केहेता आंतरु नथी जेटली पोतपोताना गुणठाणानी स्थिती होय तेटला कालसुधी रहे.

इति सांतर निरंतर द्वार संपूर्ण

हवे अल्पाबहुत्वद्वार कहे छे.

सर्व थोडा ११ मा गुणठाणावाला ते उपशम श्रेणिवाला जघन्य ५४ जीव लाभे उत्कृष्ट २०० थी ९९ मा जीव लाभे तेहथकी १२ मा १४ मा गुणठाणानो धणी माहोमाहेतुला विशेसाहियातुला ते क्षपक श्रेणिनो धणी जघन्य १०८ जीव लाभे उत्कृष्ट ५०० थी ९८ मा जीव लाभे तेहथकी ८।९।१० मा गुणठाणानो धणी माहेतुला ने विसेसाहिया ते बकुसने पडिसेवणा धणी पृथकपणें साधु लाभे तेमनाथी १३ मा गुणठाणवाला विशेसाहिया ते स्नातकना धणी पृथक् कोड केवली लाभे तेमनाथी ७ मा गुणठाणावाला संख्यात गुणे ते पृथकपणें कोड साधु लाभे तेमनाथी

छठा गुणठाणावाला संख्यात गुणे ते सामायिक छेदो-
पस्थापनीय चारित्रवाला पृथक १००० कोड साधु
लाभे तेहथकी ५ मा गुणठाणावाला असंख्यात गुण।
तिर्यंच आश्रयी जाणवा तेहथकी बीजा गुणठाणाना
असख्यात गुणाने विगलेंद्री आश्रयी जाणवा तेमना
थी त्रीजा गुणठाणानो घणो असंख्यात गुणोने चार
गति आश्रयी जाणवा तेमनाथी चोथा गुणठाणावाला
असंख्यात गुणा ते समदृष्टी आश्रयी जाणवा तेमना
थी प्रथम गुणठाणावाला अनंत गुणा ते निगोद आ-
श्रयी जाणवा.

इति अल्पाबहुत्व द्वार संपूर्ण

समाप्तः गुणठाणाद्वार बालावबोधः

श्री समेत शिखर दर्शन.

[तुम चिद्घनचंद्र आनंदलाल-ए देशी.]

नमुं समेत शिखर गिरिराजलाल ।
तुम दर्शन आनंदकारी ॥ नमुं० ॥ ध्रु
बालपणाथी अद्भुत जागी ॥
इच्छा दर्शन केरी ॥ नमुं० ॥ १ ॥
आज सफलता नयनयुगलनी ॥
पाप असंख्य निवारी ॥ नमुं० ॥ २ ॥
लोहे हेमता पारस-संगे ॥
तिम हुं धन्य बन्योरी ॥ नमुं० ॥ ३ ॥
अनुपम भाव दशा मुज प्रगटी ॥
बंध तुत्र्या दु खकारी ॥ नमुं० ॥ ४ ॥
ज्ञान दिवाकर प्रगट्यो अनुपम ॥
मिथ्यांधःकार हर्योरी ॥ नमुं० ॥ ५ ॥
सामळिया श्री पास जिनेश्वर ॥
अद्भुत रूप निहारी ॥ नमुं० ॥ ६ ॥
सादि अनंत स्थिती इहां पाम्या ॥
भव संततिने निवारी ॥ नमुं० ॥ ७ ॥
विंशति तीर्थंकरपद पूनित ॥
रजकण मुज शिरधारी ॥ नमुं० ॥ ८ ॥
सोहं-भाव प्रगट थयो सुखकर ॥

वाल नमे चित्तधरी ॥ नमु० ॥ ९ ॥

[सिद्ध अचल आनंदी रे ओतीने—]

गिरि समेतशिखरजीरे ॥ जोवा चित्त धरो ॥ ध्रु० ॥
तारो तारो जिनंदजीरे ॥ भवभय दूर करो ॥ १ ॥
मुज पडरि नमाव रे ॥ प्रभुजी वाह् वरो ॥ २ ॥
हरी सकल उपाधी रे ॥ तन्मय चित्त करो ॥ ३ ॥
ज्योति सिद्ध प्रकाशी रे ॥ ते मुज आतम वरो ॥ ४ ॥
भावे भेटि शिखरजीरे ॥ मुक्ति सहज वरो ॥ ५ ॥
वीस तीर्थपती इहांरे ॥ सिध्या धन्य नरो ॥ ६ ॥
केई कोडि पण मुनी रे ॥ तस पदभक्ति वरो ॥ ७ ॥
गिरी भेटी आनदे रे ॥ सहु संसार तरो ॥ ८ ॥
रिद्धि आतम केरीर ॥ प्रगटे चित्तवरो ॥ ९ ॥
वाल कहे गुण गाई रे ॥ शिववधु शीघ्र वरो ॥ १० ॥

